जीवन चरित्र

परमसन्त महात्मा रामचन्द्रजी महाराज

(उर्फ लाला जी साहब)

फ़तहगढ़ निवासी

रामाश्रम सत्संग (रजि०)

गाजियाबाद।

Scanned by CamScanner

तीसरे संस्करण के
मुद्रक और प्रकाशक :
डा० करतारसिंह आचार्य
रामाश्रम सत्संग (रजि०) गाजियाबाद

सर्वाधिकार सुरक्षित ।

प्रथम संस्करण—१००० (१९६२)
द्वितीय संस्करण—२००० (१९७९)
तृतीय संस्करण—१००० (१९८९)

मुद्रक : विवेक मुद्रणालय, जी० टी० रोड, गाजियाबाद ।

Scanned by CamScanner

आदिगुरु परमसंत महात्मा रामचन्द्र जी महाराज, फ़तेहगढ़ी

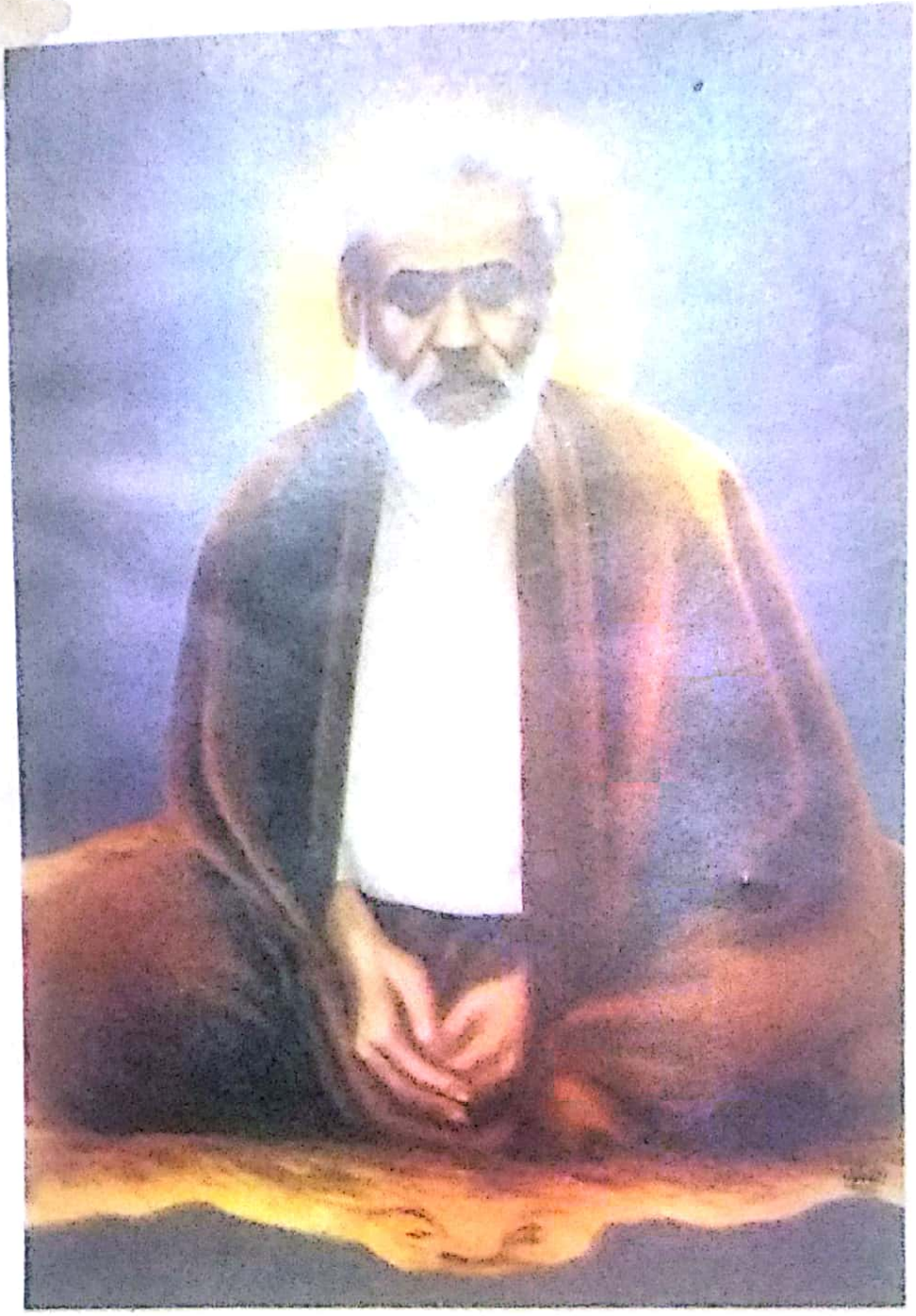

(जन्म : 4.2.1873 महानिर्वाण : 14.8.1931)

Scanned by CamScanner

प्राक्कथन

यों तो भारत भूमि सदा से ही भगवद्-भक्तों की खान रही है परन्तु पिछले कई सौ वर्षों में तो सन्त महात्मा और भक्त जनों की मानो एक लहर सी दौड़ गई थी। यह ऐसा समय रहा जब देश के विभिन्न भागों में दिव्य आत्माओं ने मनुष्य शरीर धारण करके भूले भटकों को राह पर लगाया। इन्हीं दिव्य आत्माओं में से एक फतेहगढ़ (उत्तर प्रदेश) में अवतरित हुई और अपना काम पूरा करके फिर से अनन्त में विलीन हो गई। उस महान् पवित्र आत्मा ने जो पार्थिव शरीर धारण किया था उसे लोग परमसन्त महात्मा रामचन्द्र जी महाराज (उर्फ़ लाला जी) के नाम से पुकारते थे।

महापुरुषों के जीवन चरित्र अलौकिक होते है, ऊन्हें लेखनी-बद्ध करना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है। लेकिन उन्हीं के रहम का आसरा लेकर और उन्हीं से शक्ति प्राप्त करके यहाँ गिने चुने पन्नों में महात्मा जी के जीवन का संक्षिप्त हाल, कुछ घटनायें और उनकी शिक्षा को लिखने का साहस किया गया है।

अपने जीवन में तो महापुरुषों का दर्शन और सत्संग ही लोगों का कल्याण करता है लेकिन शरीर त्यागने के पश्चात् उनका जीवन चरित्र, रहनी-सहनी और उपदेश ही हम लोगों के पथ-प्रदर्शक होते हैं और इन्हीं से अनगिनती लोगों का कल्याण हो

Scanned by CamScanner

जाता है। उनका जीवन-चरित्र ही हमारा आदर्श बनाता है। पूज्य लालाजी के जीवन-चरित्र पर कुछ लिखने का यही आशय है।

परमसन्त महात्मा रामचन्द्रजी पूर्ण योगी, पूर्ण गुरु और पूर्ण ब्रह्म-वेत्ता थे। योग की विशेषकर चक्र-बन्धन विद्या की उच्च से उच्च अवस्थाओं को उन्होंने प्राप्त किया था। इस मार्ग की प्रत्येक बारीकी से वे पूर्णतया परिचित थे और सीखने वाले को उसकी योग्यता के अनुसार वे ऐसे सरल मार्ग पर लगा देते थे जिससे वह बिना कठिनाई के तेजी के साथ उँची दशाओं को आसानी से प्राप्त कर सके।

महात्मा जी के प्रकट होने से पहले चक्र-बन्धन विद्या का सिलसिला हिन्दुओं में प्राय: लोप सा हो चुका था। जो गिने-चुने लोग इसके जानकार मौजूद थे वे या तो इसे फैलाना ही नहीं चाहते थे या गिने-चुने जिज्ञासुओं को ही उसकी शिक्षा देते थे। इससे यह विद्या छुपी हुई रही। नक्शबन्दी ख़ानदान के मुसलमान सूफ़ियों में यह विद्या सीना-ब-सीना चली आती थी। परन्तु जातीयता की भावना (Communal minded) होने के कारण और समाज के डर की वजह से न तो हिन्दू उनके शिष्य बनना चाहते थे और न वे मुसलमान सूफ़ी ही इस विद्या को हिन्दुओं को देना चाहते थे। लाला जी ने समाज के लांछनों की परवाह न करते हुए और जातीयता का विचार छो कर भी इस विद्या को एक परम उदार, वक्त के पूरे सतगुरु परमसन्त मौलाना फ़ज्ल अहमद शाह साहब से प्राप्त किया। पन्थ के उस समय के प्रचलित कठिन कायदे कानूनों को सहल बनाया। इसके सीखने के नये और आसान तरीके ईजाद किये और हिन्दू धर्म की सुविधा के अनुसार देश व काल का विचार रखते हुए उसमें आवश्यक रद्दोबदल करके इस वद्या को पुन: हिन्दुओं में प्रचलिम किया। अब गृहस्थ,

Scanned by CamScanner

विरक्त, बूढ़ा, जवान, बालक, स्त्री सब ही इसे आसानी से सीख कर अपना जीवन सफल कर सकते हैं हिन्दू समाजके लिये महात्मा जी की यह एक अमूल्य देन है जो मौजूदा और आने वाली पीढ़ियों के लिये एक अमर वरदान है।

महात्मा जी का दार्शनिक ज्ञान केवल हिन्दू फ़िलासफ़ी तक ही सीमित नहीं था, वे मुस्लिम, बुद्ध और ईसाई फ़िलासफ़ी के प्रकाण्ड पण्डित थे। इन फ़िलासफ़ियों की हर बारीकी से वे पूरी तरह परिचित थे। जिस ब्रह्म-विद्या का प्रचार लाला जी ने किया उसमें हम इन सब फ़िलासफ़ियों के अपूर्व समन्वय की एक अनोखी झलक देखते हैं। जिन लोगों को उनके श्री रणों में बैठने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वे जानते है कि ब्रह्म-विद्या के गुप्त रहस्यों की विवेचना सरल से सरल भाषा में करने की लाला जी में अपूर्व क्षमता थी। परम गुह्य विषयों का वे चित्र सा ख च कर रख देते थे, जैसे कोई नंगी आँखों देख रहा हो वह सब उनके अपने निजी अनुभव की बातें थीं जो वे दूसरों तक पहुंचाते थे और इसमें आलोचना की तनिक भी गुंजाइश नहीं थी। इसमें से बहुत सी बातों को उन्होंने जहाँ तहाँ अपने शिष्यों को लिखा है। उनके पत्र जिनमें आध्यात्म-विद्या का निचोड़ है और जिनमें उन्होंने साँसारिक व परमार्थिक पहलुओं पर खुलासा प्रकाश डाला है "अमृत रस" के नाम से प्रकाशित हो चुके हैं। अपने ढंग की यह बेजोड़ ही नहीं बल्कि अमूल्य पुस्तक है।

आपका जन्म शुभ स्थान फ़रुखाबाद में ४ फरवरी १८७३ ई० को और निर्वाण १४ अगस्त १९३१ ई० को हुआ। आपने बचपन से, जब से होश संभाला और जब तक जीवित रहे, आजन्म दरिद्रता और बीमारी का मुक़ाबला करते हुए एक बहादुर सिपाही

Scanned by CamScanner

की तरह अपना जीवन लोगों के कल्याण हेतु व्यतीत किया पाठकों को पढ़ने से मालूम होगा कि उनका जीवन कितना सादा, उनके विचार कितने उच्च, रहनी-सहनी और सदाचार कितना उच्चतम था, जिसकी कोई तुलना नहीं की जा सकती ।

जो लोग लाला जी के प्रेमी हैं या उनके चलाये हुए तरीक़े की किसी भी शाखा से सम्बन्ध रखते हैं उनसे निवेदन है कि उस दिव्य आत्मा के जीवन चरित्र को पढ़कर मनन करें और उसे अपने ऊपर उतारने का प्रयत्न करें । इसी में बहुत कुछ कल्याण है ।

सिकन्द्राबाद (यू० पी०)
विजयादशमी ८ अक्टूबर १९६२

आसी—
श्रीकृष्ण लाल

Scanned by CamScanner

प्रथम अध्याय

(अवतार के हेतु)

सन्त मत के सिद्धान्त के अनुसार यह सृष्टि तीन हिस्सों में बंटी हुई है—दयाल देश, काल देश और माया देश।

(१) **दयाल देश**—यहां सिर्फ आत्मा का वासा है और प्रकृति का यहाँ कोई दखल नहीं हैं।

(२) **काल देश**—यहां आत्मा और प्रकृति की मिलौनी है लेकिन प्रकृति सूक्ष्म है और आत्मा का राज्य है।

(३) **माया देश**—यहाँ स्थूल प्रकृति और आत्मा की मिलौनी है, लेकिन प्रकृति ऊँची और आत्मा उसके नीचे दबी हुई है। यहां प्रकृति का राज्य है।

तीनों देशों के छः छः उपभाग है और इसी तरीके से सृष्टि के अठारह उपभाग हैं। सृष्टि की इस तक़सीम (विभाजन) और शक्ति को ध्यान रखते हुए यह कहा जाता है कि "जो पिण्डे सो ब्रह्माण्डे" यानि जो तकसीम ब्रह्माण्ड में है वही (तकसीम) पिण्ड में है और जो शक्तियाँ ब्रह्माण्ड में काम करती हैं, वही शक्तियाँ छोटे रूप में पिण्ड में काम करती हैं।

Scanned by CamScanner

नर देह यानि पिण्ड में आत्मा आज्ञा'चक्र पर, जो दोनों भौंहों के बीच में है, बैठी हुई जिस्म का पालन पोषण और देख भाल करती है और अनुशासन में रखती है और इसी तरह इस सृष्टि में एक शक्ति, जिसको नारायण कहते हैं, अपने स्थान में रहती हुई तमाम दुनियां की देख-भाल और पालन पोषण करती है और क़ायदे में रखती है।

जब तक हम मामूली काम हाथ में लेते हैं आज्ञा चक्र से आत्मा की धार उस काम को हाथ के रग, गोश्त, पुट्ठे वगैरा से कराती रहती है। सांस के जरिये बुरी हवा को खारिज करती है और अच्छी हवा अन्दर लाती है जिससे खून साफ होता है और तन्दुरुस्ती कायम रहती है। दिल के अन्दर दिल के गोश्त के टुकड़ो को सुकोड़ती और फैलाती रहती है जिससे तमाम जिस्म में खून पहुंचता है और शरीर का पालन पोषण होता है। आंतों में यह शक्ति खाने को पचाती है और जिगर के पास ले जाती है जिससे नया खून बनता है। फुजला (विष्टा) को धकेलकर जिस्म के बाहर फक देती है। लेकिन अगर साधारण क्रिया में कोई खराबी आ जाये या हाथ को ज्यादा भारी बोझ उठाना हो या कोई सख्त काम करना हो तो ज्यादा शक्ति दिमाग से उतर कर हाथ के पट्ठों में आ जाती है। पट्ठे सख्त हो जाते हैं। और तभी हम उस भारी बोझ को और उस मुश्किल काम को कर सकते हैं। सांस में कोई रुकावट आ जाती है तो ज्यादा शक्ति आकर उस रुक'वट को दूर करती है। खाँसी बार बार उठती है और उसी वक्त खांसी बन्द होती है जब वह खराब माद्दा बलगम की शक्ल में बाहर निकल जाता है। अगर दिलके खूनके दौरे में कोई रुकाबट आ जाती है या आंतों में फुजला रुक जाता है जिससे खून जिस्म में और खाना आंतों में आगे नहीं जाने पाता है तो ज्यादा शक्ति दिमाग से उतरकर

Scanned by CamScanner

उस रुकावट को दूर करती है। यही पिण्डी अवतार कहलाता है।

इसी तरह मामूली अवस्थामें नारायणी शक्ति अपने स्थान पर बैठी हुई दुनियां की संभाल करती रहती है। कानून-कुदरत (सृष्टि के नियम) को कायम रखती है, लेकिन जब कोई भारी रुकावट रास्ते में आ जाती है, धर्म का लोप ही जाता है और अधर्म फैल जाता है, मनुष्य की उन्नति में रुकावट पैदा हो जाती है और वह मामूली नारायणी-शक्ति रुकावट को दूर नहीं कर सकती तो ब्रह्माण्ड, यानी काल देश या दयाल देश से कोई शक्ति उतर कर इन्सानी चोला अख्त्यार कर लेती है और उस खराबी को दूर कर देती है। धनी तो अपने धाम में बैठा हुआ अपने धाम की संभाल बदस्तूर करता रहता है लेकिन उससे निकली हुई किरणें नर-शरीर धारण कर लेती हैं। इसी को धनी का अवतार धारण करना कहते हैं। यह अवतार धनी की प्रेरणा से वह कार्य सम्पन्न करता है जिस से अवतार धारण करने का आशय पूरा हो। जितनी ज्यादा खराबी होती है उतनी ही ज्यादा कला ऊपर से उतरती है। इसी को अवतार कहते हैं।

ऐसी महान् आत्मायें पृथ्वी-लोक में आकर देश, काल, वस्तु का ख्याल रखते हुए प्राणियों को धर्म की ओर ले जाती हैं। वक्त, फुरसत व ताकत का लिहाज रखते हुए नये साधन अभ्यासियों के लिये तज़वीज़ करती हैं जो आसानी से किये जा सकें। असूल (नियम) एक ही होता है सिर्फ साधनों में सब बातों का जैसे मनुष्य का स्वास्थ्य, उसकी छोटी आयु, समय की कमी इत्यादि का ध्यान रखते हुए सुविधा पैदा कर दी जाती है। ऐसे महापुरुष आवश्यकता पड़ने पर सदा संसार में आते रहे हैं और आते रहेंगे। भगवान् रामचन्द्र जी महाराज, श्रीकृष्ण भगवान्, बुद्ध भगवान्, शंकराचार्य, कबीर साहब, गुरु नानक देव, श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी दयानन्द सरस्वती, राय साहब सालिगराम

Scanned by CamScanner

साहब जी महाराज, हजरत मौहम्मद साहब, हजरत शेख अहमद साहब, जैनियों के तीर्थंकर, इत्यादि, इत्यादि ।

इन्हीं सन्तों में से एक परमसन्त का मौजा भौगाँव,जिला मनपुरी में एक उच्च कायस्थ कुल में जन्म हुआ और परमसन्त सतगुरु महात्मा रामचन्द्रजी साहब उर्फ लाला जी साहब के नाम से विख्यात हुए ।

वंश

जिला मैनपुरी में एक उच्च कायस्थ वंश मुद्दत से आबाद था। इन कायस्थ खानदान के पूर्वज श्री विन्द्रावन बाबू को मुगल वंश के बादशाह अकबर ने उनकी बफादारी, बहादुरी और विद्वत्ता के पुरुस्कार स्वरूप 'चौधरी' की पदवी प्रदान की थी। एक शाही खिलअत (उपहार) और ५५५ गांव का इलाका जागीर में दिया था। आपने अपने इलाके में एक गाँव "भूम-ग्राम" नामी बनाया और वहाँ रहने लगे। ये गाँव रफ्ता रफ्ता तरक्की करके एक अच्छा खासा कस्बा हो गया और इस कस्बे का नाम बिगड़कर भूम ग्राम से भौगांव पड़ गया, जो अब भी इसी नाम से प्रसिद्ध है।

जन्म

इसी वंश में एक साहब हरबख्श राय हुए। आप शुरूमें भगांव में रहते रहे, लेकिन सन् १८५७ के गदरकी घटनाओं का इस कस्बे पर बहुत बुरा असर पड़ा। तमाम कस्बा लूट लिया गया और वीरान और खस्ता हो गया। यहाँ तक हालत बिगड़ी,कि दिन दहाड़े आदमी लूट लिये जाते थे। हरेक को हर वक्त अपनी जान और माल का खतरा लगा रहता था। न रात को नींद और न दिन को चैन। इस हालत को देखकर चौधरी हरबख्त राय ने अपनी जन्मभूमि को छोड़ा और फरुखाबाद में निवास करने लगे। यहाँ पर वे

Scanned by CamScanner

सुपरिण्टेण्डेण्ट चुंगी तैनात गये और आखीर वक्त तक इसी औहदे पर काम करते रहे। उनकी धर्मपत्नी अत्यन्त सुशील, नेक और धर्मात्मा थी और उनका अधिकतर समय पूजा-पाठ में ही जाता था। श्रीमद्रामायण की आप परम भक्त थीं। गुप्तदान देना और विशेषकर गरीब और अनाथ लड़कियों के विवाह में रुपया देने का उनको बहुत शौक था। उनके दरवाजे से कोई भिखारी खाली हाथ नहीं जाने पाता था। उनका संगीत बड़ा मधुर और गला बड़ा सुरीला था। जब वे रामायण पढ़ती थीं एक समां बँध जाता था सुनने वाले मन्त्र-मुग्ध हो जाते थे और परमात्मा के प्रेम में मस्त होकर तन बदन की सुधि भूल जाते थे। वे बहुधा फकीरों और सन्तों के सत्संग में जाया करती थीं और कभी-कभी कोई सन्त आकर उनके यहाँ भी ठहरते थे।

एक बार कहीं से एक सन्त फरुखाबाद में आये। वे भी अपने देवर के साथ उनके दर्शन के लिये गयीं। सन्त साहब उस समय कबीर साहब की जीवनी सुना रहे थे। उनकी साखियां सुनाते जाते और व्याख्या करते जाते थे। वे भी चुपचाप जाकर बैठ गयीं और सुनने लगीं। सुनने में उनको बड़ा आनन्द आया, आँखों से प्रेम के आँसू जारी हो गये और तन बदनकी सुधि भूल गयीं। कुछ देर बाद आँखें खोलीं। एक अद्भुत आनन्द का समुद्र लहलहा रहा था। सत्संग समाप्त होने पर जब वे चलने लगीं, सन्त महाराज ने सिर पर हाथ धरकर आशीर्वाद दिया—'बेटी जाओ, परमात्मा करे फूलो फलो और परमात्मा तुमको अपने प्रेम से माला-माल करे।' इस दुआ ने अपना असर दिखाया। जैसे-जैसे दिन बीतते गये उन पर समाधि अवस्था आने लगी और ईश्वर-प्रेम दिन दिन बढ़ता गया।

एक तो वे पहले ही से उदासीन रहती थीं और अधिकतर समय भजन बन्दगी में खर्च करती थीं, अब और भी उदासीन रहने लगीं

Scanned by CamScanner

और अधिक समय कथा कीर्तन में लगाने लगी चौधरी हरबख्श राय साहब की कई सन्तानें हुई लेकिन जिन्दा कोई नहीं रही। इस लिये उन्होंने अपने भाई के लड़के को गोद ले लिया था।

एक दफा एक मजजूब (अवधूत) मुसलमान फकीर का फरुखाबाद में आना हुआ, जो हर समय एक काला कम्बल ओढ़े रहते थे। एक रोज यह अवधूत फकीर उस गली से निकले जहां चौधरी हरबख्श राय रहते थे। उनके दरवाजे पर आकर बैठ गये और भोजन माँगा। उनकी धर्मपत्नी ने बड़ी श्रद्धा के साथ पूरी-मिठाई वगैरा पेश की। अवधूत महात्मा ने कहा कि हमारी तबियत आज मछली खाने को चाहती हैं। उनके घर में मांस खाने का रिवाज नहीं था। बहुत बेबसी थी। वे सोच में पड़ गयीं कि इस समय मछलियाँ कहां से मंगवाई जावें, लेकिन उनको तुरन्त याद आई। वे दूसरे घर में गयीं जहां चौधरी साहब के लिये अलहदा खाना बनता था क्योंकि वे मांस का सेवन करते थे। पूछने पर मालूम हुआ कि केवल दो मछलियां तैयार की गई हैं, जो चौधरी साहब के लिये खास तौर से नवाब साहब ने भेजी हैं। उन्होंने बगैर किसी सोच विचार के दोनों मछलियां तश्तरी में रखकर अवधूत महात्मा के सामने रख दीं और उन अवधूत महात्मा ने प्रसन्नता से दोनों को खा लिया। एक पुरानी नौकरानी उस समय मौजूद थी। उसने बड़ी नम्रता से हाथ जोड़कर निवेदन किया कि "बहू जी को परमात्मा का दिया सब कुछ मौजूद हैं, सिर्फ औलाद की कमी है। ऐसी दुआ दीजिए कि बहू जी के लड़का हो।"

फकीर साहब जोर से ठहठहाकर हँसे उन्होंने अल्लाहो अकबर कहकर दुआ के लिये हाथ ऊपर उठायें और 'एक' 'दो' कहते हुए किसी तरफ को चल दिये। परमात्मा की कृपा और फकीर की दुआ का यह असर हुआ कि साल भर बाद ४ फरवरी सन् १८-३ वसन्त

Scanned by CamScanner

के दिन जो फकीरों में खास मुबारिक दिन माना जाता है एक दिव्य आत्मा का जन्म हुआ जो बाद को परमसन्त श्री रामचन्द्रजी साहब उर्फ लाला जी साहब के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनके जन्म के दो वर्ष बाद दूसरे सुपुत्र १७ अक्टूबर सन् १८७५ को पैदा हुए जो बाद को महात्मा मुन्शी रघुवर दयाल साहब उर्फ चाचाजी के नाम से विख्यात हुए। धन्य है वे माता पिता और वंश और कौम जिनके घर में ऐसी पवित्र और महात्माओं ने जन्म लिया जिनके कारण आज तक उनका नाम आदर पूर्वक लिया जाता है।

बचपन और शिक्षा

क्योंकि आप कई भाई बहनों के मरने के बाद जीवित रहे थे आपका लालन पालन बड़े लाड़-चाव से हुआ था नौकर नौकरानियां हर समय आपकी देख भाल के लिये नियुक्त थे। जिस चीज की तरफ भी आपकी तबियत जाती, तुरन्त उपलब्ध की जाती। सैर को जाने के लिये सवारी मौजूद रहती ७ वर्ष की उम्र तक आपका पालन, आपकी पवित्र और धर्मात्मा माता जी श्रीमती दुर्गा देवी जी के संरक्षण में हुआ। जब सुबह को आपकी माता जी रामायण का पाठ करती आप बराबर पास बैठकर सुना करते, जिसका नतीजा यह हुआ कि आपको गाने का शौक बचपन से हो ही गया और आपकी सुरीली और मीठी आवाज उत्तराधिकार में अपनी माता जी से मिली। आपको गाने का बहुत शौक था। आवाज में इतना रसीलापन और मिठास था कि जिसने एकबार सुन लिया वह उम्र भर उसको नहीं भूल सकता था और फिर किसी दूसरे का गाना उसको पसन्द नहीं आता था। गाना रूह (आत्मा) की ग़िज़ा (भोजन) है लेकिन उस गाने के असर का बयान कौन कर सकता है जो एक वली मादरज़ाद (जन्म सिद्ध महात्मा) गा रहा हो, जिसके दिलमें अथाह ईश्वर भक्ति भरी हो, आवाज़ सुरीली और रसीली हो और मिठास भरी हो।

Scanned by CamScanner

उसका अनुभव वही लोग कर सकते है जिनको सौभाग्य से कभी ऐसा अवसर मिला है।

एक बार आपने कहा कि हमारा गाना रूहानी हैं और हमें यह मलका (अभ्यास) है कि दूसरे का गाना एक दफा सुनकर हम हू-बहू वैसा ही गा सकते है। कभी कभी मराकबा (ध्यान) कराते वक्त आप ईश्बर के प्रेम में मस्त होकर गाने लगते थे, तो एक अजीब कैफियत पैदा हो जाती थी। जहां-जहां तक आवाज जाती थी एक मस्ती छा जाती थी। परमात्मा के प्रेम का स्रोत उमड़ पड़ता था। और सब उसमें डुबकियाँ खाते और मदहोश हो जाते थे। संध्या का वक्त है। सत्संगी भाई आंखें बन्द किये ध्यान में बैठे है आपने परमात्मा की स्तुति में पद कहना शुरू किया, एक आनंद का सागर बहने लगा और सब उसमें ग़ोते खाने लगे। आंखों से आँसू जारी हैं। तन बदन का होश नहीं। आत्मा अपने प्रीतम के चरणों में जा पहुंची। सकते का आलम (निस्तब्धता छाई) है। सब बेसुध हैं तमाम रूहानी चक्र ज़ाकिर (आग्रत) हैं, तमाम शरीर में प्रकाश ही प्रकाश है और तमाम शरीर प्रकाशित है। इसी को देखते-देखते और शब्द सुनते-सुनते और अपार आनन्द का अनुभव करते हुए तन बदन का होश नहीं रहा। न मालूम कितनी देर यह हालत रही। आहिस्ता-आहिस्ता आपने गाना बन्द किया और सत्संगी भाई भी आहिस्ता आहिस्ता होश में आने लगे। अफसोस! जो देखा और सुना वो अफसाना था। न अब वह साक़ी है न वह जाम।

जब महात्मा जी की आयु केवल सात वर्ष को थी उनकी माता जी का स्वर्गवास हो गया और बाद को उनका पालन-पोषण एक मुसलमान खातून ने किया जो बहुत हुशियार और दुनिया देखे हुए थीं और उनसे बहुत प्रेम करती थी। इन मुसलमान खातून की वे अन्त समय तक बड़ी खातिर और इज्ज़त करते रहे। जब कभी यह

Scanned by CamScanner

उनको देखने आती उनकी बड़ी खातिर करते चलते समय भेंट देते एक बार इस मुसलमान खातून ने उनको जायदाद जो उनके पिता जी ने इन खातून को उनकी सेवा के बदले में दी थी वापिस करनी चाही, लेकिन उन्होने इसे स्वीकार नहीं किया।

छोटी उम्र में एक मौलवी साहब उनको घर पर पढ़ाते थे। जिन्होंने उन्हें उर्दू और फारसी की शिक्षा दी और कविता करना भी सिखाया। इसके बाद वे फरुखाबाद मिशन स्कूल में दाखिल हो गये। वहां से उन्होंने शिक्षा प्राप्त की।

विद्यार्थी जीवन में जिस मकान में महात्मा जी रहते थे वह बहुत छोटा था इसलिये उन्होंने अपने पढ़ने और रहने के लिये मुफ्ती साहब के मदरसे में एक कोठरी किराये पर ले ली थी। उस कोठरी की बगल में दूसरी कोठरी में एक मुसलमान मौलवी साहब रहते थे जो लड़कों को प्राइवेट तरीके पर पढ़ाया करते थे और यही उनका गुजर औकात का जरिया था। लाला जी साहब उस वक्त आठवीं क्लासमें तालीम पातेथे और कभी-कभी पढ़ाई की मुश्किलों को दूर करने के लिए मौलवी साहब के पास चले जाते थे और मौलवी साहब बड़ी खुशी और मौहब्बतसे वे मुश्किलात (कठिनाइयां) दूर कर देते थे। मौलवी साहब लाला जी के साथ बहुत मौहब्बत से पेश आते क्योंकि वे उनकी रहनी-सहनी और ईश्वर प्रेमसे वाक़िफ थे और ग़ायबाना (गुप्त) मौहब्बत करते थे। लालाजी को उनकी सोहबत (सतसंग) में एक खास आनन्द मिलता था। लेकिन वे इससे वाकिफ नहीं थे कि मौलवी साहब एक परमसन्त हैं। यह उनको बाद में मालूम हुआ जो आगे की घटनाओं से मालूम होगा एक बार जब लालाजी साहब इम्तहान में ज्योमेट्री का परचा देकर आये तो परचा खराब होने की वजह से बहुत परेशान थे। उनको परेशान देखकर मौलवी साहब ने परेशानी की वजह पूछी और

Scanned by CamScanner

मालूम होनेपर फरमाया—'अज़ीज़, परेशान न हो। अल्लाह चाहेगा तो तुम इम्तहान में पास होगे। और ऐसा ही हुआ। परमात्मा की कृपा से लाला जी इम्तहान में पास हो गये।

इसके बाद उनकी शादी एक अच्छे खानदान में कर दी गई। शादी के थोड़े दिनों बाद उनके पिता जी का स्वर्गवास हो गया। यद्यपि काफी जाँयदाद उनके पिता जी ने बेच दी थी फिरभी बहुत कुछ बाकी थी। दुर्भाग्य से एक मुकद्दमा राजा मैंनपुरी से जायदाद के बारे में छिड़ गया। बहुत समय तक मुकद्दमा चलता रहा और अन्त में फैसला राजा मैंनपुरी के पक्ष में हुआ। एक बड़ी रकम की डिग्री लाला जी पर हुई और दो गांव हाथ से निकल गये डिग्री की अदाई में तमाम गहने और मकान बिकगये और उनको अपना निजी मकान छोड़कर एक छोटे से मकान में रहना पड़ा। इसी वक्त उनके बड़े भाई का, जिनको उनके पिताजी ने गोद ले लिया था और तमाम घर की देख-भाल करते रहते थे, स्वर्गवास हो गया और तमाम कुटुम्ब के पाल-पोषण का बोझ उन्हीं पर आ पड़ा। आमदनी का कोई ज़रिया नहीं रह गया था और आर्थिक दशा बद से बदतर हो गई थी। लाला जी जो हमेशा घोड़ा गाड़ियों और पालकियों में चलते थे, अब नंगे पांव या लकड़ी की चट्टी पहनकर बाज़ार जाते थे। धोती की जगह तहमद इस्तेमाल करते थे। और घर का गुज़ारा बड़ी मुश्किल से ज्यूं-त्यूं करके होता था। फतेहगढ़ के कलक्टर साहब आपके पिताजी से वाकिफ थे और बहुत मेहरबान थे उन्होंने मेहरबानी करके आपको बुलवाया और १० रु० मासिक पर कलक्टरी फतहगढ़में बतौर पेड अपरेन्टिस (Paid apprentice) नियुक्त कर दिया। फतहगढ़ और फरुखाबाद में चार मील का अन्तर है। इस तरहसे आपको नित्य ८-१० मील चलना पड़ता था तब कहीं जाकर आपको १० रु० महीने मिलते थे और इसी से घर का तमाम खाना पीना और लेना देना चलता था।

Scanned by CamScanner

दूसरा अध्याय

(महात्मा जी के गुरुदेव की संक्षिप्त कथा और ब्रह्म-विद्या की शिक्षा)

तहसील कायमगंज जिला फरुखाबाद के एक गांव कुबेरपुर में एक सूफी साहब रहते थे आपका नाम मौलवी अहमद अली साहब था। एकान्त में गांव से बाहर, एक खेत में नका टूटा-फूटा कच्चा घर था जिसमें वे रहते थे जीवन बिल्कुल सीधा सादा था न किसी से मिलना न किसी से झगड़ना न कहीं आना न कहीं जाना जीविका के लिये पास के खेत में खेती करते थे। जो समय बचता उसमें बकरियां चराते, बच्चो को पढ़ाते और शेष समय परमात्मा की याद में व्यतीत करते। अधिकतर निर्धनों के लड़के पढ़ने आते थे। जिन्हें आप उर्दू और फारसी की शिक्षा देते थे। गांव के लोग यह तो जानते थे कि आप एक सच्चे ईश्वर भक्त, शान्ति-प्रिय और धर्मात्मा मनुष्य हैं। लेकिन यह किसी को मालूम नहीं था कि आप अध्यात्म-विद्या के समुद्र हैं। जो लड़के आपके पास पढ़ने क आते थे उनमें एक गरीब लड़का भी आता था जो बहुत तीव्रबुद्धि और आज्ञाकारी था। अपकी सेवा बड़ी लगन और महनत से करता था आपको भी उससे स्नेह था। उस लड़के का नाम फज्ल अहमद खां था। सूफी साहब के परिवार में केवल उनकी धर्म-पत्नी और एक लड़का था। इस लड़के और फज्ल अहमद खां में बड़ी मित्रता थी। जब यह लड़का १५-१६ वर्ष का हुआ तो अचानक उसकी मृत्यु हो

Scanned by CamScanner

गई। इस विरह से सबको बड़ा दुख हुआ विशेषकर उसकी माँ को वे दिन रात उसकी याद में रोया करती थीं। एक दिन सूफी साहब ने अपनी धर्मपत्नी को समझाया कि रोने से कुछ फायदा नहीं, उस हालत में खुश रहो ि समें परमात्मा ने रखा है। बीवी बोली –मैं बहुत कोशिश करती हूं मगर सब्र नहीं आता, बराबर उसकी याद आ आकर रूलाती है। आपने कहा, "तुम फज्लू को ही अपना बेटा क्यों नहीं समझ लेती।" उसी दिन से उनकी बीवी ने फज्ल अहमद खां को अपना बेटा मान लिया और फज्ल अहमदखांने उन्हें अपनी माँ मान लिया। दोनों ने इस सम्बन्ध को अन्त तक निभाया और ऐसा निभाया कि सगी मां और बेटे भी नहीं निभाते। मां ने फिर कभी अपने बेटे की याद नहीं की और उसका नाम नहीं लिया।

इस घटना के बाद फज्ल अहमद खां घर में रहने लगे। यह दोनों की सेवा तन-मन से करते थे और अपने प्रेम से अपनी माता को इतना प्रसन्न कर लिया कि उन्होंने सूफी साहबको मजबूरकिया कि वे इनको शिक्षा देकर अपना शिष्य बना लें और ब्रह्म विद्या सिखायें। सूफी साहब पहले ही से फज्ल अहमद खां साहब से खुश थे। उन्होंने अपनी बीवी की इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। अध्यात्म विद्या शुरू की। सोलह वर्ष अपने पास रखा और अध्यात्म विद्या से माला-माल कर दिया। आचार्य पदवी दे दी और आज्ञा दी कि हमारी इस विद्या का प्रचार करो। इन्हीं मौलाना फ़ज्ल अहमद खां साहब रायपुर निवासी को आगे हुजूर महा ाज के नाम से भी सम्बोधित किया गया है। फ़ज्ल अहमद खां साहब ने अन्त समय तक मां की सेवा की। खलीफा ाहब के मरनेके बाद उनको अपने पास रखा और सदा उनकी आज्ञा का पालन किया। उन्होंने अपनी स्त्री की मृत्यु के बाद विवाह नहीं किया और अपनी इस माँ की सेवा स्वयं अपने हाथों से करते थे। सूफी साहब ने आचार्य

Scanned by CamScanner

पदवी देते समय यह भी भवि यवाणी की थी कि तुम्हारे पास एक हिन्दू लड़का आयेगा जिस पर विशेष दृष्टि रखना उससे इस विद्या का प्रचार हिन्दुओं में बहुत होगा।

अब यह खबर और लोगों में फैल गई कि सूफी साहब इल्मे इलाही (ब्रह्म-विद्या) की शिक्षा देते हैं। और भी बहुत से लड़के इसे सीखने के लिये आने लगे। उन्होंने आचार्य पदवी पाई औरों को भी यह विद्या सिखाई और अपना व अन्य लोगों का जीवन सुधारा। अपने लड़कपन में मौलाना अब्दुलगनी साहब (भोगांव निवासी) ने इन्हीं सूफी साहब से आध्यात्म विद्या प्राप्त की थी। सूफी साहब भी इनसे बहुत प्रेम करते थे और अन्त समय पर मौलाना फज़्ल अहमद खां के सुपुर्द किया था। कहा था "यह मुझे बहुत प्यारा है, इसका ख्याल रखना।" कुछ दिनों के बाद आपका शारीरान्त होगया। फ़ज़्ल अहमद खां साहब ने अपने गुरुदेव की आज्ञा का पूरा-पूरा पालन किया और अपना जीवन अपने गुरुदेव की तरह बना लिया। उन्होंने फरुखाबाद में मुफ्ती साहब के मदरसे में एक कोठरी किराये पर ले ली। वहीं रहते, लड़कों को पढ़ाते और लोगों को ब्रह्म-विद्या की शिक्षा देते।

ब्रह्म विद्या [तालीम रूहानी]

रूहानी तालीम की शुरुआत तो महात्माजी को अपनी पवित्र भक्त माता की गोद में ही शुरू हो गई थी। होश संभालने पर उन्होंने आपको रामायण पढ़ना सिखाया जिसका आप पाठ करते थे। बड़े होने पर अक्सर आप अपने दोस्तोंके साथ स्वामी ब्रह्मानंद जी के पास जाया करते थे जो गंगा की रेती में रहते थे। उनके उपदेश सुनते और उन पर अमल करने की कोशिश करते। स्वामी

Scanned by CamScanner

जी महाराज उच्च क्रोटि के सन्त थे, बहुत वृद्ध होगये थे। आपकी उम्र उस समय १५० साल बतलाई जाती थी।

जैसा कि ऊपर आया है महात्मा जी ने अपना घर छोटा हने के कारण एक कोठरी किराये पर लेली थी। दरवाजे के दूसरी तरफ की कोठरी में वहीं मुसलमान सन्त रहते थे जिनक नाम मौलाना फज्ल अहमद खां था और जिनका वर्णन ऊपर आ चुका हैं। स्वामी ब्रह्मानन्दजी और यह मुसलमान सन्त आपस में मिलते रहते थे।

स्वामी ब्रह्मानन्दजी अक्सर अपने उपदेशों में इन सन्त महाराज का ज़िक्र किया करतेथे और कहा करते थे कि सूफी साहब फरुखाबाद के 'कुतुब' (सन्त शिरोमणि) हैं, लेकिन महात्मा जी जी को यह पता नहीं था कि जिन साहब का स्वामी जी ज़िक्र किया करते हैं वे सूफी साहब वही हैं जो दरवाज़े की बगल में रहते हैं।

नौकरी मिल जाने के कुछ महीनों बाद एक दिन महात्मा जी को फतेहगढ़ से लौटने में रात हो गई। अन्धेरी रात थी बादल छाये हुए थे और गरज रहे थे। बिजली चमक रही थी और मूसलाधार वर्षा हो रही थी। जाड़े के दिन थे आप ारिश में बुरी तरह भीग रहें थे, कपड़ों से पानी टपक रहा था और जाड़े के मारे कांप रहे थे। आपकी हालत उस समय बहुत परेशान और रहम के क़ाबिल थी। जब आप ड़े दरवाजे में से होकर अपनी कोठरी में आ रहे थे। उस वक्त सूफी साहब की प्रेम भरी दृष्टि आप पर पड़ी। उनको बड़ी दया आई और कहने लगे—"इस तूफान में इस वक्त आना।' महात्मा जी कहा करते थे कि इन शब्दों में बड़ा प्रेम भरा हुआ था आपने बहुत आजिज़ी (नम्रता) से आदाब पेश किया (नमस्कार किया)। हज़ूर महाराज ने दुआ दी—"अल्लाह अपना रहम करे" और बोले—'बेटे, जाओ भीगे कपड़े बदल डालो फिर हमारे पास

Scanned by CamScanner

आना और थोड़ी देर आग से हाथ पैर सेक कर तब घर जाना।" इन शब्दों में बड़ा आनन्द भरा हुआ था और बड़ा आकर्षण था। महात्मा जी ने ऐसा ही किया और कपड़े बदल कर हाजिर हुए। हजूर महाराज ने तब तक एक मिट्टी की अँगीठी में आग सुलगा रखी थी। महात्मा जी ने सलाम अर्ज किया। हजूर महाराज ने ऊपर आंख उठाकर देखा। आंखसे आंख का मिलना थाकि महात्मा जीके शरीर में एक बिजली सरकी चोटीसे लेकर पांवकी उंगलियों तक दौड़ गई तन बदन का होश जाता रहा। ऐसा मालूम होता था कि दो आत्मायें मिलकर एक होगई हैं। हजूर महाराज ने बड़ी कृपा करके महात्मा जी को अपने बिस्तर पर बैठा लिया और अपनी रज़ाई उढ़ा दी। महात्मा जी कहा करते थे कि उस वक्त एक अजीब आनन्दका अनुभव होरहा था और एक अजीब कैफियत मस्ती की थी। शरीर बहुत हल्का मालूम होता था। ऐसा मालूम होता था कि आसमान में उड़ रहा हूँ और सारा शरीर प्रकाश से देदीप्यमान हैं। आप लगभग दो घन्टे इसी हालत में बैठे रहे इतने में बारिश बन्द हो गई। आप आज्ञा लेकर घर चले आये। कोठरी के बाहर यह मालूम होता था कि एक प्रकाश फैला हुआ है जिसमें दरख्त, दरोदीबार, जानवर सभी वस्तुयें नाच रही हैं। महात्माजी के पिण्डी और ब्रह्माण्डी, तमाम चक्रों से 'ओ३म' का शब्द जारी था और ऐसा मालूम होता था कि आपकी जगह हजूर महाराज ने ले ली है।

जब आप घर वापस आये खाना खाने को तबियत नहीं चाहती थी। बगैर खाये ही सो रहे रातमें आपने स्वप्न में फकीरों का एक बड़ा समूह देखा और उस समूह में हजूर महाराज को और अपने आपको भी देखा। उस समय एक सिंहासन आसमान से उतरा जिस पर एक तेजस्वी महापुरुष बैठे हुए थे सब लोग उन महापुरुष को

Scanned by CamScanner

देखकर खड़े हो गये हजूर महाराज ने आपको उनकी सेवा में पेश किया, जिन्होंने बहुत मौहब्बत से आपकी ओर देखा और कहा कि इनका रुझान शुरू से ही परमात्मा की तरफ है।

दूसरे दिन सवेरे आपने यह स्वप्न हजूर महाराज को सुनाया आप सुनकर बहुत प्रसन्न हुए आंखे बन्द करलीं ध्यान मग्न होगये कुछ देर बाद आंखें खोलीं और कहा कि 'ये स्वप्न नहीं सत्य, है। तुम्हारी हस्ती जन्म से ही परमात्मा की तरफ मायल (झुकी हुई) है। तुम धन्य हो, तुमको इस वन्श के पूर्व महापुरुषों ने अपनाया है तुम्हारा जन्म भूले-भटके जीवों को सच्चे रास्ते पर लाने के लिये हुआ है, ऐसी आत्मायें मुद्दत बाद आती हैं। तुम्हारी जो हालत पहली ही बैठक में हुई वह मुद्दत की तपस्या के बाद ही किसी किसी की होती है। जब कभी तुम मेरे सामने से होकर निकलते और प्रणाम करते थे. मेरी तबियत तुम्हारी तरफ खिंचती थी, प्रेम का एक सैलाव (ज्वार भाटा) सा उमड़ता था और इस तरह तुम मुझसे बराबर फैजयाब होरहे हो अल्लाह ने चाहा तो बहुत जल्द फनाफिल शेख (गुरु में लय होना) हो नहीं बल्कि फिनाफिल मुरीद (गुरु का शिष्य में लय होना) का दर्जा हासिल करोगे। अगर नागवार खातिर न हो (आपत्ति न हो) और फुरसत हो और तबियत चाहे तो इस फ़क़ीर के पास भी आते रहा करो।

इसके बाद महात्मा जीब राबर हजूर महाराज की सेवा में हाज़िर होते रहे और उनके सत्संगसे लाभ पाते रहे। २३ जनवरी सन् १८९६ ई० को हजूर महाराज ने उपदेश देकर आपको अपनी शरण में ले लिया और बराबर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्षरूप से अपनी सौहबत के फ़ैज़ (धार) से फ़ैज़याब (लाभान्वित) करते रहे ११ अक्टूबर, १८९६ ई० को कुल्ली इजाज़त यानी आचार्य पदवी प्रदान

Scanned by CamScanner

की। आचार्य पदवी देते समय हजूर महाराज ने फरमाया कि मुझ से मेरे पीर मुर्शिद खलीफा साहब (गुरुदेव) ने फरमाया था कि मुझसे लोगों को रूहानी फायदा होगा, लेकिन अफसोस ! मैं इस काबिल नहीं हुआ और इस फर्ज को पूरे तौर से अदा नहीं करसका और अब वक्त रुख़सत (अन्त समय) करीब है। लेकिन मुझको पूरी उम्मीद है कि मेरे बाद तुम इस फ़र्ज (कर्त्तव्य) को पूरा करोगे और खलीफा साहब की पेशोनगोई (भविष्य वाणी को पूरा करोगे। अगर तुमने मेरा काम पूरा किया तो दीन और दुनिया दोनों में सुर्खरू होंगे (प्रसन्न रहोगे) और अगर इसमें कोताही (कमी) की तो आकवत (परलोक) में दामनगीर (पल्ला पकड़ना हूँगा। ये फरमाकर वह खत जो खलीफा साहब का हजूर महाराज के पास था पढ़कर सुनाया।

महात्मा जी ने एक जगह लिखा है—हे परमपिता परमात्मा यह सेवक जैसा है तैसा आपकी शरण में मौजूद है। इसको ख़बर नहीं कि आपके गुण कैसे गाये जावें। कभी-कभी अपनी बाखबरी (सचेत होना) पर नाज़ (गर्व) हो जाता है लेकिन जब काम का वक्त आता है तो यह सब धरे का धरा रह जाता है। अब तक छान-बीन करने का नतीजा निकला और यह जान पाया कि "कुछ नहीं जाना"। दुनियां के हर हिस्सेमें इल्म (विद्या) का शोर मच हुआ है। लाखों और करोड़ों किताबें कुतुबखानों (पुस्तकालयों) में भरी पड़ी है। हजारों की तादाद (संख्या) में अखबार और रिसाले हर मुल्क के कोनों से रोजाना हफ्तेवार और माहवारी निकल रहे हैं। हर खास और आम की नज़रों में समाकर ज़बानों पर चढ़कर, ज़हनों (मस्तिष्क) में उतर जाते हैं और कुछ रोज हाफ़िज़े (स्मरण शक्ति) की कोठरियों में बन्द रहकर फिर न कहाँ से कहां चले जाते हैं कि याद करने पर भी याद नहीं आते

Scanned by CamScanner

और अगर याद भी आये तो वे सिर-पैर के, किसी काम के नहीं। ये कहां से आते हैं और कहां गायब हो जाते हैं ? क्या यह सब आपके नाम और रूप की गूंजें और नज्जारे (दृश्य) तो नहीं हैं ? आपके ज्ञान के समुद्र से लहरों की शक्ल में उठते और फिर मादूम (लोप) हो जाते हैं। ज्ञान-अज्ञान, प्रकाश अन्धकार, विद्या-अविद्या जड़-चैतन्य, मौत-ज़िन्दगी, ताक़त कमज़ोरी, वग़ैरा, वग़ैरा, यह सबके सब आपकी माया के खेल और तमाशे हैं। दुनियां एक तमाशागाह (तमाशे की जगह) है, सब लोग एक्टर (अभिनेता) ओर आपस में एक दूसरे का खेल देखने वाले और नकल करने वाले हैं। कुछ लोग खेल खेल रहे हैं, कुछ उन खेलों को देख रहे हैं और कुछ लोग इन खेले हुए खेलों की नकल उतारने में बद-मस्त (संलग्न) हैं। बहुत सी तादाद (संख्या) लोगों की इन नकली खेलों को देखकर ऐसी मस्त और महव (ध्यान मग्न) हैकि उनके आनंद का ठिकाना नहीं। यह चक्र ऐसा घूम रहा है कि न मालूम कब खत्म होने पर आयेगा ? मुमकिन है कि महाप्रलय या क़यामते-क़ुब्रा जिसका नाम है वह इस चक्रकी आखिरी हरकत या टहराव के दिन का नाम हो।

जो इस जहान (संसार) से चले गये और नीज (अथवा) सब मुक्त-पुरुष अपना अपना खेल दिखला कर और थक-थका कर एक कौने में बैठ हे और ऐसे खामोश और छुप कर बैठे कि लौट कर खबर तक न ली ऐसे गुमनाम (नाम का लोप हो जाना) हुए कि किसी का नामोनिशां (नाम और निशान) तक बाकी नहीं। क्या हुआ अगर उँगलियों पर गिने-गिनाये महापुरुष, ऋषि मुनि, पीर-पैगम्बर, औतार-औलिया, अपने अपने कारनामां-हिदायतों (कृतियों-उपदेशी) के नाम और रूप में अब तक याद करने वालों को अपनी झलक दिखा देते हैं। यह साया (छाया) रूपी नाम और

Scanned by CamScanner

रूप में जब तक कि ज़ाती (ईश्वरीय) प्रकाश बाक़ी है, कायम रहेगा। पर साया तो साया ही है। नक़ल की हैसियत कितनी ? ये मौजूदा हस्ती (अस्तित्व) किसी अपनी पहली हस्ती की नक़ल तो जरूर हैं। अगर कोई शख़्स इस सिलसिले को लेकर इस तरह चले कि अपने आपको नकल या साया अपने पिताका मान ले, और अपने पिता को अपने दादा का साया मान ले, और अपने दादा को परदादा का साया मान ले और इस तरह पीछे सरकता हुआ चले और आखिर में सिवाय आधार महज़ (एक मात्र आधार) के कुछ सुझाई न दे तो इस हैरत (अचम्भा) के मुकाम को मुमकिन है कि आपकी जातेबाबरकात (कल्याणप्रद) के कदमों (चरणों) के रखने की जगह का नाम दिया जा सके।

ऐ परमात्मा ! ये बन्दा (सेवक) भी ऐसी मौजूदात (अस्तित्व की कितनी नकलों की नक़ल और असलियत के किसी मुक़ाम की असल का साया और ज़ात (परमात्मा) की सिफतों (गुणों) का मजमुआ (समूह) आपके मुक़र्रर किये हुए नियमों के अनुसार पाट अदा कर रहा है। आप सबके हृदय की जानने वालेहै इसलिये आप पर ही छोड़ताहूं किआप खुद फैसला कर लें कि सेवक का खेल कितना असली है और कितना नक़ली, और नक़ली है तो हस्तीकी किस असल की नक़ल। मुझको दृढ़ विश्वास है कि आपकी दया और कृपाकी लहरों व मौजों ने आपसे दूर पड़े हुए शरीरको चारों तरफ से इस दुनियां में पहले ही दिन से ढांप रखा था और सबसे पहले हिदायत (आदेश) की रोशनी मुझ पर मेरी परमभक्त माता की पवित्र गोद में डाली गई। इस प्रकाश की हरारत (गरमी) ने सात वर्ष तक पाला पोसा।

हे परम दयालु। आपके रहम (दया) ने मुझको बहुत दिनों तक बे-हिदायत नहीं छोड़ा बल्कि उम्रके उन्नीसवें सालमें एक मुबारिक

Scanned by CamScanner

दिन में तमाम हस्ती को हमेशा केलिए एक मुजस्सिम (मूर्तिमान) रहीम (दयालु) पन्थ के दिखलाने वाले, ज्ञान और विज्ञानके दीपक के सुपुर्द कर दिया। इस सच्चे रास्ते दिखलाने वाले ने पहले ही दिन मेरे कानों में फूंक दिया कि तेरी हस्ती पहले ही दिन से असलियत की जानिब (ओर) मायल (झुकी हुई) है। इसलिये तू अपने आपको यानी असल को असल कर दिखा। नक़ल कर तो असल की। नकल की नकल इस तरह कर कि नकल या साये को औज़ार बना। स्वांग रचने में मायाकी मदद ले और सहारा ज़ाते-मुतलक (सत् पद) का ले।

मेरे रहनुमा (पथप्रदर्शक) ने ऐसा इशारा देकर मुझको महज (केवल) मेरे ऊपर ही नहीं छोड़ दिया बल्कि खुद साये (छाया) की तरह हर वक्त साथ रहकर सोलह बरस तक अपनी ख़ास तवज्जह (विशेष कृपा) ज़ाहिरी (प्रत्यक्ष) और अन्दरूनी (अप्रत्यक्ष) से मेरी निगाहेदाश्त (चौकसी) फ़रमाई। पन्थ के बाहरी आडम्बरों से अलहदा रहने केलिए हमेशा हिदायत फ़रमाई और आखिरकार अपने रंग में रंग-रंगाकर यह हुक्म फरमाया कि हमारा मिशन जिस तरह और जहां तक हो सके दुनियां के लोगों को पहुंचाया जाय। आपकी मन्शा यह थी कि गिरे हुए जीवों और भूले-भटके संसारियोंको उभारा जाये और उनकी हालतको संभाला जाये। आपका फरमाना यह था कि जब तक लोगों की अन्दरूनी (आंतरिक) हालत न सम्भलेगी, उनकी भीतरी शक्तियों का उभार होकर वे जाग न जायेंगी और मन की ताकतें अज़सरेनौ (फिर से) नश्वोनुमा (विकसित) न होगी और न फूलें-फलेंगी, बुद्धि तेज़ होकर शुद्ध न होगी और सच्चा ज्ञान प्राप्त न होगा उस वक्त तक खाली पूजा पाठ और ऊपरी उपासना से ख़ातिर ख़्वाह (केवल) काम नहीं चलेगा और जीव जैसे बँधे हुए हैं वैसे ही बँधे रहेंगे। इसलिये आपने हमेशा इस बात पर जोर दिया कि जहां तक

Scanned by CamScanner

बन सके अन्दर का अभ्यास किया जाय और कराया जाये और इसके साथ सब धर्म सम्बन्धी उसूलों (नियमों) की पाबन्दी भी की जाये। यम-नियम जायज़ और नाजायज़ (धर्माधर्म) तरीक़ों और अमलों (व्यवहारों) पर पूरा ख्याल रखा जाये जिससे इख़लाक़ (चरित्र) सुधरे। स्वाध्याय से भी मौक़ा-ब-मौक़ा फायदा उठाया जाये। अन्तर का अभ्यास करने वालोंका सत्संग किया जाये तभी ज़ाहिरी और अन्दरूनी (आन्तरिक) तरक्की मुमकिन है। बर ख़िलाफ़ (विपरीत) इसके अगर दुनियां के उन पन्थाइयों यानी अहले तरक़ीत की रीस (नकल) उतारी जायेगी और अमल करेंगे जो महज़ (केवल) तितली बनकर किताबें पढ़ लेते हैं या बुजुर्गों (महापुरुषों) का हाल सुनकर अपने दिलका इत्मीनान हासिलकर लेते हैं (मन समझा लेते हैं) और अन्दरूनी (आन्तरिक) अभ्यास कुछ नहीं करते, उनका अभ्यास सिर्फ थोड़ी देर किताबों का पाठ करना और भजन कीर्तन करके शब्दों को गाकर अपनी तबियत को बहलाना है, तो फिर जिसका नाम असली मक़सद (ध्येय) तक पहुंचना है, कोसों दूर हो जायेगा।

आपके हुक्मों और उसूलों की पाबन्दी का हमेशा ख्याल रखा गया और यही वजह है कि हमारे प्रेमियों की तादाद बहुत थोड़ी है दुनियां के लोग चाटक नाटक ऊपरी खेल-तमाशों और माया की झलक के भूखे हैं। उनके लिये खाली भीतरी अभ्यास एक भारी बोझ है। अपनी पुरानी आदतों को तबदील करके धर्म सम्बन्धी इखलाकों (आचार) पर आ जाना बहुत ही बोझलि काम हो गया हैं, भागने और मुंह छिपाने की कोशिश करते हैं। कितने ही भाग गये और न जाने कौन कौन भागने को तैयार हो रहे हैं लेकिन ये थोड़ी सी तादाद जो अब तक क़ायम नज़र आती है किस क़दर शानदार और वज़नी है, इसका मुक़ाबला दूसरी जमात (संस्था)

Scanned by CamScanner

के मेम्बरों से वे ही साहब कर सकते हैं जो अहले नजर (दृष्टि सम्पन्न) हैं और इस मार्ग के सन्तों की सौहबत उठाये हुए हैं यही वजह है कि इतनी बड़ी मुद्दत में भी यह जमात कोई नुमायां और नामवर (प्रसिद्ध) जमात न बन सकी। न इसका कोई ज़ाहिरा बजूद (अस्तित्व) है न कोई इमारत, न कोई तहरीरी उसूल लिखित नियम) और न कोई फण्ड है। वजह यही है कि इब्तदाई उसूल (प्रारम्भिक नियमों) और मन्शा के खिलाफ जहां तक भी हो सका अमल दरामद करने की जुर्रत नहीं की गई है और हमेशा माया और मायावी झगड़ों से इसको अलहदा रखा गया है।

———

Scanned by CamScanner

के मेम्बरों से वे ही साहब कर सकते हैं जो अहले नजर (दृष्टि सम्पन्न) हैं और इस मार्ग के सन्तों की सौहबत उठाये हुए हैं यही वजह है कि इतनी बड़ी मुद्दत में भी यह जमात कोई नुमायां और नामवर (प्रसिद्ध) जमात न बन सकी। न इसका कोई ज़ाहिरा बजूद (अस्तित्व) है न कोई इमारत, न कोई तहरीरी उसूल लिखित नियम) और न कोई फण्ड है। वजह यही है कि इब्तदाई उसूल (प्रारम्भिक नियमों) और मन्शा के खिलाफ जहां तक भी हो सका अमल दरामद करने की जुर्रत नहीं की गई है और हमेशा माया और मायावी झगड़ों से इसको अलहदा रखा गया है।

———

Scanned by CamScanner

तृतीय अध्याय

हुज़ूर महाराज लाला जी (महाराज रामचन्द्र जी) की कुछ अदभुत घटनायें

ख़ानदान नक्शबन्दिया की यह एक विशेषता सदा से चली आई है कि शिष्य की गुरु से जब निस्बत क़ायम हो जाती है (आन्तरिक सम्बन्ध स्थापित हो जाता है) तब अप्रत्यक्ष रूप से गुरु छाया की भांति शिष्य की सदैव देख-भाल करता है। इसपर पूज्य लाला जी के जीवन के कुछ दृष्टान्त दिये जाते हैं।

१—फ़रुख़ाबाद में एक ब र श्री लाला जी के सहपाठियों ने गंगा जी के किनारे स्वामी ब्रह्मानन्द जी के आश्रम के नज़दीक पिकनिक का प्रोग्राम रखा। वहां पर यह लोग ज़बरदस्ती महात्मा जी को भी ले गये खाना खाने के बाद गाना बजाना होता रहा। इसके बाद भंग घुटीऔर सबनेपी।आपने पीने से मना किया और बड़ी नम्रता से कहा कि इसके लिए मजबूर न करें क्योंकि किसी प्रकार का नशा न करने की प्रतिज्ञा आपने अपने गुरुदेव से करली है। लेकिन दोस्तों ने कुछ नहीं सुना ज़बरदस्ती आपको रेती पर लिटा दिया। दो चार दोस्तों ने हाथ पैर पकड़ लिये और एक दोस्त (पण्डित माताप्रसाद) आपकी छाती पर चढ़ बैठे और जबरदस्ती भंग पिलाने लगे आपने बहुत मनाकिया लेकिन आखिर बेबस होकर चुप हो गये और अपने गुरुदेव का ध्यान करने लगे।

Scanned by CamScanner

एकाएक आपका चेहरा तमतमा उठा, एक प्रकाश चेहरे पर छा गया, चेहरा बदल गया और उस पर मूंछें और दाढ़ी मालूम होने लगी। यह देखकर पण्डित माताप्रसाद घबरा उठे, छाती पर से उठ बैठे और चुपचाप हैरतज़दा (आश्चर्य चकित) एक तरफ खड़े हो गये। और लोगोंको मना कियाकिआपकोमजबूर न करें और आपके हाल पर छोड़ दें। अतएव फिर आपको मजबूर न किया गया और भंग नहीं पीनी पड़ी। थोड़ी देर बाद वहां पर स्वामी ब्रह्मानन्द जी आगये और जब उनको सब हाल मालूम हुआ तो उन्होंने सब लड़कों को फटकारा और कहा-जिस लड़के को तुम आज झूठा नशापिलाते हो समय आने पर यह संसार के प्यासे जीवों को असली नशा पिलायेगा। शाम को सब लोग गंगा जी से घर को वापिस आये। रास्ते में क्या देखते है कि सूफी साहब यानी हजूर मह राज, उधर से पधार रहे हैं। महात्मा जी ने बहुत नम्रता से प्रणाम किया और उनके साथ टहलने के लिये चले गये और रास्ते में तमाम हाल निवेदन किया। हजूर महाराज ने कहा जो लोग परमात्मा पर भरोसा करते हैं महात्मा उनकी बराबर मदद करता है। पण्डित माताप्रसाद ने हजूर महाराज को देखकर तुरन्त पहचान लिया कि यह तो वही महात्मा हैं जिनकी सूरत में जनाब लाला जी साहब का चेहरा बदल गया था।

दूसरे दिन उन्होंने महात्माजी से बहुत नम्रतासे हजूर महाराज जी की सेवामें जाने के लिये कहा और दोनों सज्जन महाराज जी की सेवामें उपस्थित हुए। हजूर महाराज ने पण्डित माताप्रसाद परभी अपनी कृपा दृष्टि की और अपनी शरण में ले लिया पण्डित माता-प्रसाद हजूर महाराज की सेवा में अन्त समय तक आते रहे और, हजूर महाराज के अन्तरध्यान होने के बाद श्रीमान लालाजी साहब की सेवा में आते रहे और अन्त तक लाभान्वित होते रहे। श्रीकृष्ण

Scanned by CamScanner

सहाय जी हितकारी वक़ील कानपुर, श्री कालिका प्रसाद साहब पेशकार, श्रीचिम्मनलाल साहब मुखत्यार, डा० कृष्णस्वरूप साहब बाबू रामकृष्ण साहब जमींदार और बहुत से सज्जन महात्मा जी के वसीले से (द्वारा) हजूर महाराज जी की सेवा में उपस्थित हुए, आपकी शरण ली और अपना जीवन सफल किया। हजूर महाराज के अन्तर्ध्यान होने के बाद यह सब सज्जन बराबर महात्मा जी की सेवा में आते रहे।

२—एक बार श्रीमान् लाला जी साहब बहुत बीमार हो गये चलने फिरने से लाचार थे और खाट से लग गये। बीमारी के कारण आप इतने परेशान नहीं थे जितने परेशान इस वजह से थे कि अब आप हजूर महाराज की सेवा में नहीं जा सकते थे। एक दिन आप डोली में बैठकर हजूर महाराज की सेवा में पहुंचे और आंखों में आंसू भर लाये। हजूर महाराज ने बड़े स्नेह से आपकी ओर देखा और बड़ी सहानुभूति से कहा—बेटे पुत्तूलाल! (हजूर महाराज लाली जी को इसी नाम से पुकारते थे) घबराओ नहीं,

"देह धरे का दन्ड हैं सब काहू को होय।
ज्ञानी भोगे ज्ञान से मूरख भोगे रोय॥"

श्रीमान् लाला जी कहा करते थे कि उस दिनसे मेरी तबियत ठीक होने लगी। कभी कभी हजूर महाराज भी स्वयं दर्शन देने आ जाते थे। थोड़े ही दिनों में बिल्कुल ठीक हो गये।

३—जो अभ्यास हजूर महाराज ने बतला दिया था उसको श्रीमान लाला जी साहब बराबर करते रहते थे। एक दफा जब आप नक़ल-नवीस थे, आपको नक़ल करने के लिये एक मुक़द्दमे का फैसला दिया गया जिसमें लगभग ५८ सफे थे। आप अपने अभ्यास में मग्न थे और नकल भी करते जाते थे। जब ५० सफ़े नकल कर चुके तो आपको ख्याल आया कि क्योंकि मेरा मन दूसरी ओर लगा

Scanned by CamScanner

हुआ था नक़ल में जरूर बहुत सी गल्तियां हो गई होगीं। आप इस ख्याल से घबरा गये और सोचने लगे कि अब इन काग़ज़ों के दाम कहां से दिये जायेंगे और बाद के सफे बड़ी होशियारी और एहतियात से नकल किये। आप कहा करते थे कि नक़ल की जब असल से मिलान की गई तो मुझको यह देखकर बहुत ताज्जुब हुआ कि पहले ५० सफों में एक भी ग़ल्ती नहीं थी और दूसरे ८ सफ़ों में कई गल्तियां थी।

४—हजूर महाराज श्रीमान लाला जी साहब से उमर भर में एक बार भी नाराज़ नहीं होने पाये। जो हजूर महाराज दिल में सोचते थे वहीं माहत्मा जी के दिल में आ जाता था यह मौहब्बत की इन्तहा (पराकाष्ठ) है और ज़ाहिर करती है कि दोनों के दिल कितने मिले हुए थे। एक रोज़ लाला जी साहब की तबियत यह चाहती थी कि जो कोई सामने आये उसको बैंतों से मारे दिन भर यही ख्याल आता रहा और आप बहुत परेशान रहे शाम को आपने अपनी हालत हजूर महाराज से निवेदन की। उन्होंने कहा—"ठीक है आज हम लड़कों पर नाराज होते रहे और उनको सजा देते रहे और क्योंकि तुम प्रत्येक पल हमारा ध्यान करते रहते हो इसलिये तुम पर भी वह असर पड़ा।

५—एक दिन हजूर महाराज अकेले बैठे हौज़के किनारे पानी से खेल रहे थे और पानी हाथों से इधर ऊधर उछाल रहे थे। श्री मान लाला जी दर्शनों के लिये उपस्थित हुए। प्रणाम किया और दो मिनट बाद ही जाने की अ ज्ञा चाही। हजूर महाराज बहुत खुश हुए और सोचने लगे—"बेटे पुत्तूलाल, क्या बात है कि जो हम सोचते है वही तुम करते हो? इस वक्त हम यह चाहते थे कि तुम चले जाओ और तुमने फौरन इजाज़त जाने की तलब की। हमको यह तमन्ना ही रही कि हम एक दफा तो तुमसे नाराज़ होते।"

Scanned by CamScanner

६—श्रीमान् लाला जी साहब कहा करते थे कि जो हजूर महाराज के दिल में आता था वह ज्यों का त्यों हमारे दिलमें उतर आता था। उन्होंने बताया कि यह एक सिद्धि है अगर कोई शिष्य अपने हृदय को अपने गुरु के हृद के मुक़ाबले लगातार बहत्तर घन्टे रखे और एक सैकिण्ड के लिये भी ग़ाफिल न रहे तो यह सिद्धि आ जाती है और हमने यह सिद्धि अपनी शादी में सिद्ध की जब हमको अपने पिता जी की आज्ञा के अनुसार महफिल में लगातार बैठना पड़ता था। लेकिन यह अमल उसी समय हो सकता है जब शिष्य अपने गुरु का फिदाई (आशिक) हो और फ़नाफिल मुरीद हो और शिष्य अपने गुरु में पूरे तौर पर लयहो चुका हो और फनाफिल शेख (गुरु में लय) का दर्जा हासिल कर चुका हो और उसकी कुव्वते-ख़्याली (विचार शक्ति) इतनी मज़बूत हो कि अपने ख़्याल से इतने बड़े समय में एक सैकिण्ड के लिये भी इधर उधर न हो सच तो यह है कि जब ऐसी हालत हो जाती है तभी तमाम तालीम जो गुरु के दिमाग़ में होती है शिष्य के दिमाग़ में आ जाती है। ऐसी हाल में दुई (दो पना) बिल्कुल मिट जाती है। मौहब्बत का तार जुड़ जाता है। जो एक सोचता है दूसरा उसको महसूस करता है। गुरु समुद्र पार बठा हुआ शिक्षा दे रहा है और शिष्य समुद्र के इस पार बैठा हुआ उस शिक्षा को ग्रहण कर रहा है। दुई और दूरी बिल्कुल मिट जाती है। ऐसी हालत हो जाने पर पर्दा कर जाने पर (अन्तर्ध्यान होने पर) शिष्य बराबर अपने गुरु से फंज़याब (लाभान्वित) होता रहता है इसी को निस्बत (आन्तरिक सम्बन्ध) कहते है।

प्रेम गली अति सांकरी, या में 'द्वै' न समांय।
जब लग 'मैं' था गुरु नहीं, अब गुरु हैं 'मैं' नांय॥

७—आप कहा करते थे कि सब लोग हजूर महाराज के पांव

Scanned by CamScanner

दबाया करते थे और हमारी भी इच्छा थी कि आपके पाँव दबायें लेकिन कभी हिम्मत नहीं पड़ीकि हम पाँव दबा सकें क्योंकि हमारे हाथ बहुत सख्त थे और हजूर महाराज के पैर बहुत ही मुलायम। एक बार सेवक (लेखक) महात्मा जी के साथ था। आप देहली में चांदनी चौक में किसी काम से पधारे और घन्टाघर से फतेहपुरी की की तरफ रवाना हुए, फिर वहां से सब्जी मन्डी की तरफ मुड़ गये वर्फ़खाने तक बराबर चलते चले गये। सेवक पीछे-पीछे साथ था सेवक का ख्याल था कि आप देहली इससे पहले भी पधारे होंगे। यहां के रास्तों को जानते होगे और किसी खास काम से इस तरफ को जा रहे हैं। वर्फखाने पहुंचकर. जो घन्टावर से करीब डेढ़ मील की दूरी पर है, महात्मा जी ठहर गये और सेवक से पूछा—क्या तुम जानते हो कि मैं यहां क्यों आया ? मैंने जवाब दिया कि 'मुझे नहीं मालूम' आपने कहा—"उन बुज़ुर्ग को देखो जो सामने जा रहे हैं, उनकी शक्ल व सूरत श्री हजूर महाराज से बहुत मिलती हैं उनको देखता हुआ मैं यहां चला आया।" इतना कहकर नेत्रों मे जल भर लाये। आपको हजूर महाराज से बहुत प्रेम था। उनके विषय में बहुत कम बातचीत करते थे और जब कभी बातचीत करते, सारा शरीर प्रेमके आवेश में कांपने लग जाता और बादको आंसू आ जाते। एक बार आपने श्रीमुख से कहा—हमारी आत्मा उस आनन्द के लिये बेक़रार (बेचैन) है जो हमको अपने पीर गुरु की सौहबत (सत्संग) में मिलत था। एक समय श्रीमान् चाचाजी साहब (मुन्शी रघुवर दयाल जी) कह रहे थे कि "श्री हजूर महाराज महात्मा जी का बहुत अदब करते थे। जब कभी आप बच्चों से खेलते होते और लाला जी साहब आ जाते तो हजूर महाराज ख़ामोशी अखत्यार कर लेते और दूसरों को भी चुप रहने का इशारा कर देते।" इत्तफाक़ से लाला जी साहब ने यह शब्द

Scanned by CamScanner

सुन लिये। आप चाचा जी साहब पर बहुत नाराज़ हुए और फिर देर तक रोते रहे। सेवक को इजाज़त (आचार्य पदवी) देते समय आप हजूर महाराज का खत पढ़ने के बाद उनकी याद करके फूट-फूटकर रोते रहे। जब कभी भी आप महाराज जी का ज़िक्र करते हमेशा प्रेम का आवेश हो जाता, यद्यपि आप बहुत ज़ब्त करने वाले थे लेकिन फिर भी उस प्रेमावेश के वेग को नहीं बर्दाश्त कर सकते थे और आंखों में आंसू छलक आते थे। कभी-कभी तो ज़ोर-ज़ोरसे रोने लगते और हिचकी बँध जाती।

८—जो तनख्वाह महात्माजी को मिलती थी वह आप गुरुदेव की सेवा में भेंट कर देते थे और गुरुदेव किसी के हाथ घर भिजवा देते थे।

एक बार हजूर महाराज के यहां कई रोजसे उपवास चलरहा था क्योंकि घरमें भोजन सामिग्री नहीं थी और यही हालत महात्मा जी के यहां थी। आपके पास किसी जगह से एक मनिआर्डर के पन्द्रह रुपये आये। आपने उनमें से दस रुपये महात्मा जी के यहां भिजवा दिये और पांच रुपये अपनी माता जी के पास भिजवा दिये ताकि भोजन आदि का सामान मंगाले। शाम को जब आप घर आये और खाने का इन्तजाम न देखा तो अपनी माता जी से पूछा कि अभी क खाना क्यों नहीं बनवाया। माता जी ने उत्तर दिया कि जो रुपया तुमने भेजा था वह हमने दूसरे घर (महात्मा जी के घर) भिजवा दिया क्योंकि वहां जरूरत थी। आप यह सुनकर हँस पड़े, बहुत खुश हुए और कहा, बहुत अच्छा किया।" और उस रोज उपवास ही रहा।

९—एक दिन श्रीमान लालाजी साहब ने हजूर महाराज से निवेदन किया कि मैं आपका हूँ। अगर आज्ञा हो तो जाहिर हजूर

Scanned by CamScanner

(प्रत्यक्ष) भी आपका हो जाऊं।" आपने जवाब दिया कि ऐसा बेहूदा ख्याल कभी दिलमें मत लाना मजहब (धर्म) रस्मो रिवाज (रीति रिवाज) का नाम नहीं है यह सब शरियत (कर्म काण्ड) है और शरियत का दारोमदार (निर्भरता) मुल्की (देश की) और मजलिसी (समाज की) हालतों पर मौपूफ़ (पिर्भर) होता है। मज़हब (धर्म) दरअसल (वास्तव में) हक़ीक़त (सत्य) और मारफ़त (ज्ञान) का नाम है जिसका ताल्लुक़ आत्मा से है, जो सब को एक है और इन बातोंसे ऊँची है। जो जिस मुल्क और मज़हब (धर्म) में पैदा हुआ है उसका फ़र्ज है कि मुल्क और मज़हब के रस्मो-रिवाज के मुताबिक़ ज़िन्दगी बसर (जीवन व्यतीत) करे। तुम हिन्दू हो। तुमको हिन्दुओं के धर्म-शास्त्र की पैरवी (पालन) करनी चाहिये और मुझको मुसलमान होने की वजह से मुसलमानी शरह (धर्म) की। तुमको इन ओछी बातों से बहुत ऊपर उठना चाहिये। मज़हब फ़राग़दिली (विशाल हृदयता) सिखाता है न कि तंगदिली (दिल का ओछापन) अगर तुमने ऐसा किया तो तुम अपने आपको आक (वंचित) स झना।' यह है बेतास्सुबी (निष्पक्षता) की शान।

१०—हजूर महाराज एक उच्च कोटि के सन्त थे। बहुत सादा स्वभाव, बहुत खुशपोश (स्वच्छ वस्त्र धारी) और पाक-साफ़ रहने वाले, हँसमुख और बड़े दयालु। आपको तास्सुब (पक्षपात) छू भी नहीं गया था। मुसलमान, हिन्दू, ईसाई सब आपकी दृष्टि में एक थे और सभी वर्ग के लोग आपके शिष्य थे। जब कभी लालाजी साहब के घर से खाना थाली में आता था आप स्वयं वहां पधारते तो आप आपने बर्तनों में भोजन रखवा लेते या पत्ताल में रखवा लेते। कभी कभी हाथ पर रख कर ही खाना खा लेते थे और पानी चुल्लू से पी लेते। प्रसाद के मौके पर हिन्दुओं के लिये प्रसाद किसी

Scanned by CamScanner

हिन्दू से मंगा लेते और उसी से बंटवा देते। वे कहा करते थे कि हर मनुष्य को अपने धर्म के नियमों पर चलना चाहिये। यद्यपि आपके कई मुस्लिम शिष्य भी थे परन्तु आपने लाला जी साहब को अपना उत्तराधिकारी बनाया। यह एक ऐसा अद्भुत उदाहारण है जब कि एक सूफी ने बिना धर्म परिवर्तन कराये अपनी सारी आध्यात्मिक पूँजी एक हिन्दू को दे दी।

आप बच्चों के साथ बड़े प्रम से व्यवहार करते थे। घन्टों उनके साथ खेलते थे और उनकी बातें बड़ी खुशी से सुनते थे कभी कभी सत्संगी भाइयोंके साथ खेलते, उनसे पांव दबवाते और स्वयं उनकी टांगें दबाते और कहते कि "दूर से आये हो थक गये होंगे।' अगर कोई हिचकिचाता तो नाराज़ होते और कहते, "जब तुम हमारी टांगें दाबते हो तो हम क्यों न दबायं ?"

एक बार महात्मा जी हजूर महाराज की आज्ञानुसार लेटे हुए थे। हजूर महाराज टांग दबाना चाहते थे महात्मा जी उठकर बैठ गये। आप टांग नहीं दबवाना चाहते थे और कुछ कह भी नहीं सकते थे। हजूर महाराज समझ गये और वहां से चले गये।

आपके साथ बराबरीका बर्ताव करते इम्तियाज (भेद-भाव) बिल्कुल पसन्द न करते। सबके साथ एक फर्श पर बैठते, तकिया वगैरा नहीं लगाते थे। अपने शिष्यों की ओर कभी टांग पसारकर नहीं बैठते थे और ऊँची जगह पर कभी नहीं बैठते थे। जब कभी सत्संगी भाईयों को अपने सिरहाने बैठाते और अगर कोई न बैठता तो नाराज होते सबके साथ चलते। आगे आगे चलना आपको बहुत नापसन्द था। जो सब खाते वही आप खाते आप बहुत कोमल स्वभाव के थे। जो दिल में आता फौरन कह देते। एक बार एक रईस साहब, जो हैदराबाद (दक्षिण) में एक उच्च पद पर

Scanned by CamScanner

नियुक्त थे, बड़ी खुशामद से आपको अपने साथ ले गये और वहां पर बड़े आराम से रखा लेकिन सत्संग में बहुत कम आते थे आपने रहना पसन्द नहीं किया और वापिस चले आये। कहने लगे, "हम आराम के ख्वाहिशमन्द (इच्छुक) नहीं है। हम तो टूटने वाला दिल देखते हैं हम तो इस ख़्याल से चले आये थे कि शायद हमारी सौहबत से फ़ायदा होगा।

११—आपकी पाठशाला में एक विद्यार्थी बहुत सुन्दर और हंसमुख था। आप पर भक्ति का आवेश हो गया आपने उस लड़के से कहा, 'हँसना बन्द करो' लेकिन उसका चेहरा ही हंसमुख था। आपने दुबारा, तिबारा कहा फिर उसको मारना शुरू किया आप बराबर मारते रहे और वह लड़का खामोश खड़ा पिटता रहा इतने में आपकी वह हालत जाती रही और आवेश गायब हो गया। आपको यह देखकर कि आपने लड़के को बे-कसूर मारा बहुत दुख हुआ और यह सोचकर कि मैंने क्यों बेकार बे-कसूर लड़के को मारा नेत्रों में जल भर लाये। फिर कहने लगे – "अल्लाह ताआला' इस लड़के को हमेशा ईमान पर कायम रख और अपनी मौहब्बत से माला-माल कर। आपकी दुआ कबूल हुई वह लड़का आपकी शरण में आया उसने ब्रह्म-विद्या प्राप्त की और अन्त समय तक ईमान पर क़ायम रहा।

१२—एक रईस के सुपुत्र आपके पास फ़ारसी पढ़ने आते थे लेकिन पढ़ते-पढ़ाते खाक न थे। एक रोज हजूर महाराज ने कहा—"बरखुरदार (प्यारे बेटे) अपना मतलब बताओ, क्यों आते हो? पढ़ना-पढ़ाना तो तुमको खाक है नहीं, हम खूब जानते हैं।" वह पहले तो चुप हो गया। थोड़ी देर बाद निवेदन किया कि जो कुछ आपने कहा, ठीक है मैं एक स्त्री पर मोहित हूं और चाहता हूं वह

Scanned by CamScanner

मुझसे शादी कर ले। आप कोई मन्त्र मुझे बता दीजिये जिससे मैं अपने ध्येय में सफल हो जाऊँ यही स्वार्थ मेरा आपकी सेवामें आने का है। यह सुनकर हजूर महाराज उस समय चुप हो गये। एक दिन चाँदनी रात थी सत्संगी भाई बैठे हुए थे। रईस साहब के सुपुत्र भी वहीं मौजूद थे और महात्माजी भी वहीं बैठे हुए थे हजूर महाराज बहुत साफ़, सफेद कपड़े पहने हुए थे। इत्र लगा हुआ था जो आप अक्सर लगा लेते थे। चमेली, बेला बग़ैरा के फूल पास रखे हुए थे। यकायक आप उन सुपुत्र को सम्बोधित करके बोले- "बरखुरदार (प्यारे बेटे) हमारी ओर देखो क्या वह औरत हमसे भी ज्यादा खूबसूरत है ?" आप उस समय बड़े खूबसूरत दिखाई पड़ते थे। साहबजादे ने आपकी तरफ देखा और देखते ही देखते रह गये मानो कोई पत्थर की मूर्ति हो। उस रोज से उनकी हालत बदल गई, स्त्री के प्रेम के बजाय हजूर महाराज की सौहबत ने घर कर लिया। महाराज जी पर भी उसका बहुत गहरा असर पड़ा। आप अक्सर कहा करते थे कि:—

तेरे तीरे नीमकश को कोई मेरे दिल से पूछे।
ये खलिश कहां से होती जो जिगर के पार होता॥

अर्थ—तेरी मौहब्बत के तीर ने मेरे दिल को बेध डाला है। उस की वेदना कोई मुझसे पूछे। अगर यह पार हो जाता तो यह चुभन क्यों रहती ?

१३—नवाब शमसाबाद के एक रिश्तेदार एक स्त्री पर मोहित थे और उससे विवाह करना चाहते थे, लेकिन वह स्त्री तैयार नहीं थी। वे सज्जन आपसे सहायता लेने के लिए आये। आपने एक वजीफा (मन्त्र) बतला दिया और एक अभ्यास करने के लिए कहा कुछ दिनों बाद बजाय उस स्त्री की मौहब्बत के आपसे मौहब्बत हो

Scanned by CamScanner

गई। गुरुदीक्षा ली और अन्त समय तक रास्ते पर क़ायम रहे। ये आपकी संगत का असर था। इस तरह आपने बहुत सी ज़िन्दगियों को तबाह होने से बचा लिया।

१८—तहसील कायमगंज में एक हिन्दू सुनार दफ्तर में महात्मा जी के साथ क्लर्क थे। उनके भतीजे किसी महात्मा के शिष्य थे जिहोंने उनको कोई अभ्यास करनेके लिए बता दिया था वे सज्जन अभ्यास को बड़े चाव से विधि पूर्वक करते रहे कि अचानक उनकी काम शक्ति जाग उठी। उन्होंने उसको दबाने की बहुत चेष्टा की परन्तु सफलता नही हुई, दिनों दिन बढ़ती ही गई। उनके गुरुदेव या तो उस समय जीवित नहीं थे या इसका इलाज नहीं कर सकते थे हालत यहां तक खराब हुई कि उनकी घरवाली भी उनके पास जाने से घबराती थी। तब व दूसरी स्त्रियों की ओर दौड़ने लगे और नौबत यहां तक पहुंचीकि जानवरों को पकड़ने लगे रिश्तेदारों ने यह हालत देखकर उन्हें एक कोठरी में बन्द कर दिया। सब लोग परेशान थे समझ में नहीं आता था कि क्या करें उन सज्जन के चाचा ने यह हालत महात्मा जी से कही और महात्मा जी ने हजूर महाराज से रात को सब हाल निवेदन किया। हजूर महाराज ने बड़ी कृपा की और दूसरे दिन सवेरे महात्मा जी को लेकर उन सज्जन के घर पहुंचे। एक चारपाई पर बैठ गये। लाला जी को अपने पास बैठा लिया आप कुछ देर तक उन सज्जन को देखते रहे और फिर कहा—पुत्तूलाल, इस शख्श के मुकाम कल्ब (हृदय) पर तवज्जोह डालो और फिर वहां से आज्ञा-चक्र पर ले जाओ और ब्रह्माण्ड यानी त्रिकुटी के मुकाम पर ले जाकर मिला दो। महात्मा जी ने आंखें बन्द करली तवज्जोह देना शुरू किया थोड़ी देर बाद हजूर महाराज ने भी आंखें बन्द करली और स्वयं भी तवज्जोह में शामिल हो गये। एक घन्टे तक तवज्जोह देते रहे।

Scanned by CamScanner

बाद को दोनों सज्जनों ने आँखें खोल लीं। उन सज्जन को होश आ गया। उन्होंने दोनों महापुरुषों को पहचान लिया और प्रणाम किया। हालत ठीकथी महात्मा जीहजूर महाराज की आज्ञा से प्रति दिन तवज्जोह देते रहे दस बारह दिन में तबियत बिल्कुल ठीक हो गई। उन सज्जन ने बाद को हजूर महाराज से उपदेश लिया और उनकी शरण ली।

[बात यह थी कि जब अभ्यासी मन का अभ्यास शुरू करता है और उसका मन एकाग्र होने लगता है उस वक्त जो ख्याल अभ्यास की हालत में आता है वह गहरा असर करता है और बाद को स्थूल रूप धारण कर लेता हैं। यह सज्जन जब मनका अभ्यास कर रहे थे एक जगह बाजारी औरतों का गाना सुनने चले गये। वक्त अभ्यास वही बातें और ख्यालात सामने आते रहे और बाद को उन्होंने स्थूल रूप धारण कर लिया। यह बुरा परिणाम उस थोड़ी देर के कुसंग का था।]

अद्भुत दर्शन

१५—एक बार हजूर महाराज और महात्मा जी टहलने के लिए फरुखाबाद फतेहगढ़ वाली सड़क पर गये। महात्माजी अपनी साँसारिक चिन्ताओं के बिषय में निवेदन करते जा रहे थे और हजूर महाराज बड़े ध्यान से सुन रहे थे। रास्ते में एक पुल पड़ा। दोनों महापुरुष उस पर बैठ गये अचानक हजूर महाराज भक्ति के आवेश में आ गये दिल में प्रेम का समुद्र उमड़ आया। आपने बड़ी मौहब्बत से अपना सीधा हाथ महात्मा जी के कन्धे पर रख दिया और कहा—भाई! बड़े भाग्यशाली हो। परम पिता परमात्मा के प्यारे हो। तुमने बहुत सस्ते दामों यह सबसे बड़ी नियामत प्राप्त

Scanned by CamScanner

कर ली जिसका कोई मूल्य नहीं है। इसके बाद कहा—"पेड़ों को देखो।" महात्मा जी कहा करते थे एक अजीब दृश्य सामने था। हर जगह प्रकाश ही प्रकाश (नूर) फैला हुआ था जिसमें एक अजीब खिचावट थी और आनन्द था जो वर्णन में नहीं आ सकता। सारी सृष्टि, घर-दीवार, जीव-जन्तु, मनुष्य आदि उसी प्रकाश में नाच रहे थे। अजब मस्ती थी जो सब पर छाई हुई थी। ऐसा मालूम होता था कि यह प्रकाश ही सबकी जान और असल जीवन है और यही सबका लक्ष्य है, बाकी धोखा है महात्मा जी ने पूछने पर यह हालत अपने गुरुदेव से निवेदन की। आपने कहा—शुक्र है कि यह रास्ता ग़लत साबित नहीं हुआ, यही तुम्हारी असल है और यही तुम्हारा लक्ष्य है इसी में अपने आपको लय करदो। मैं अब तुम्हारी पीठ पीछे हूँ और पुश्त पनाही (पृष्ट पोषक) हूं। सामने आना गुस्ताखी है। महात्मा जी कहा करते थे कि जब मैं सैर के लिये जा रहा था दुनियाँ मेरे साथ थी, और जब मैं वापिस हुआ तो दुनियां सदाके लिये मुझसे छूट गई सांसारिक चिन्तायें और वासनायें सदा के लिये जाती रहीं और उनकी जगह परमात्मा के प्रेम ने ले ली।

१६—एक बार हजूर महाराज बीमार होगये जब फरुखाबाद में आराम की सूरत न देखी तो कानपुर चले गये और वहां रहकर इलाज शुरू कराया। महात्मा जी हर शनिवार की रात फरुखाबाद से कानपुर जाते, दिन भर रहकर इतवार को रात की गाड़ी से वापिस आते और दफ्तर को चले जाते फरुखाबाद स्टेशन को जाने वाली सड़क पर एक मुसलमान सूफी शाह-साहब रहते थे जिनके काफी शिष्य थे। इन शाह-साहब ने कुछ सिद्धियां हासिल करली थीं। एक सिद्धि यह थी कि जिस किसी से हाथ मिलाते या गले मिलते तो अपनी इच्छा शक्ति से उसकी निस्वत (गुरु-शिष्य

Scanned by CamScanner

का आत्मिक सम्बन्ध) खींच लेते और बाद को बहुत परेशान करते दूसरे ऐसा भी कहा जाता है कि उनको यह भी सिद्धि थी कि दूर देश में बिना सवारी के थोड़े समय में पहुंच जाते थे। आप अक्सर हजूर महाराज की सेवा में पधारा करते और उनकी कृपा दृष्टि महात्मा जी पर देखकर कहा करते थे कि आप आध्यात्म-विद्धा हिन्दू काफिरों को न सिखाया कीजिये। यह इसके पात्र नहीं है हजूर महाराज सुनकर मुसकुरा देते। एक रोज हजूर महाराज रेल गाड़ी से कानपुर जा रहे थे। फरुखाबाद स्टेशन पर शाह साहब मिल गये। गाड़ी चल दी और शाह साहब फरुखाबाद स्टेशन पर टहलते रहे। गाड़ी फतेहगढ़ पहुंची देखा तो शाह साहब फतेहगढ़ स्टेशन पर मौजूद है और टहल रहे हैं आप हजूर महाराज के पास आकर बातें करने लगे मानो यह बतला रहे हों कि मैं यह चमत्कार जानता हूं। गाड़ी फतहगढ़ से चली और कमाल गंज पहुंची। वहां भी शाहसाहब प्लेटफार्म पर टहल रहे थे आप फिर हजूर महाराज के पास आकर बातें करने लगे। हजूर महाराज ने कहा—शाह साहब! यह क्या खेल दिखा रहे हो? यह हरकत फकीरों को शोभा नहीं देती। अब आप अगले स्टेशन पर पधारें। "लेकिन अगले स्टेशन पर शाह साहब के दर्शन नहीं हुए और वह सिद्धि सदा के लिए जाती रही इसके कारण शाह साहब दिल में रंजिश मानने लगे। बाहरी तौर पर बराबर मिलते रहे और मौके की तलाश में रहे। कि इसका बदला लें। श्रीमान् महात्मा जी इन शाह साहब का आदर करते थे। एक शनिवार को महात्मा जी उस सड़क से जहां पर शाह साहब रहते थे, स्टेशन को जा रहे थे दूसरी ओर से शाह साहब अपने शिष्यों को लिये चले आ रहे थे महात्मा जी को देकर खुशी जाहिर की और अपने शिष्यों से कहा—"यही वह सज्जन हैं जिनपर सूफी साहब (हजूर महाराज) बहुत कृपालु

Scanned by CamScanner

है और बड़े प्रेम से रखते है।" यह कहकर महात्मा जी को प्रेम से गले लगा लिया, लेकिन उनकी मन्शा यह थी कि आपकी निस्वत खींच लें। महात्माजी इन हथकण्डों को बिल्कुल नहीं जानते थे। आप अपने गुरुदेव के ध्यान में मग्न गले मिलकर स्टेशन पहुंचे और गाड़ी में बैठकर कानपुर पहुंचे। उधर उसी समय से शाह साहब के दिल में दर्द का दौरा शुरू हो गया। बड़ी तकलीफ थी, किसी भी करवट चैन नहीं था। एक एक करके फरुखाबाद के सभी हकीम, डाक्टर इलाज के लिये बुलाये गये लेकिन दर्द कम न होता था और न हुआ रात भर यही हालत रही और बड़ी मुसीबत से रात काटी। दूसरे रोज़ भी यही हालत रही मजबूर होकर शाह साहब ने अपने प्रियजनों और शिष्यों से कहा कि यह कोई रोग नहीं है और न ही इसका इलाज डाक्टरों केपास है। मुझको जिस तरह हो कानपुर हजूर महाराज के यहां पहुंचा दो, वरना यह दर्द मुझको मारकर ही रहेगा। शिष्य लोग उनको कानपुर हजूर महाराज के पास ले आये महात्माजी उस समय किसी काम से बाज़ार गये हुए थे। हजूर महाराज ने शाह साहब के हाल पर बहुत कृपा की। आराम से बैठाया, कुशल पूछने के बाद वहां आने का कारण पूछा शाह साहब ने सही हाल को छुपाते हुए कहा—मैंने आपके सुपुत्र को प्रेम के नाते गले लगाया था लेकिन उन्होंने गले मिलते समय मेरी निस्बत सल्ब कर ली उसी वक्त से मेरे सीने में दर्द है। हजूर महाराज ने आश्चर्य करते हुए कहा—मुझको आशा नहीं है कि अज़ीज़ ने ऐसी बे अदबी (धृष्टता) की हो। आप यहां पधारें, अभी बाज़ार से वापिस आता होगा। इतने में ही महात्मा जी साहब आ पहुंचे। हजूर महाराज ने कहा—बेटे पुत्तुलाल! तुमने इनकी निस्बत क्यों सल्ब कर (खेंच) ली? महात्मा जी ने नम्रता निवेदन किया—मुझको तो कुछ मालूम ही नहीं है और न मैं यह

Scanned by CamScanner

अमल (विद्या) ही जानता हूं और न कभी बेअदबी की हिम्मत कर सकता हूं। हजूर महाराज ने शाह साहब से कहा—आपकी निस्बत बरखुरदार ने नहीं मैंने सल्ब करली है क्योंकि आप अजीज़ की निस्बत सल्ब करना चाहते थे। वह बेक़सूर है क़सूरवार मैं हूं। आपकी निस्बत मेरे तकिये के नीचे रखी हुई है शाह साहब बहुत लज्जित हुए और क्षमा चाही। हजूर महाराज ने उनसे वादा करा लिया कि अब ऐसी शैतानी (हरकतें) किसी के साथ नहीं करेंगे। फिर महात्मा जी से कहा कि इनके हृदय पर तवज्जोह दो। और आप स्वयं तवज्जोह में शामिल हुए। बोले—तुम्हारी निस्बत अब तुम्हारे पास है थ ड़ी देर बाद शाह साहब की तबियत ठीक होगई और दर्द जाता रहा। आप प्रसन्नता पूर्वक फरुखाबाद वापिस लौट जाये और फिर कभी महात्मा जी को परेशान नहीं किया बल्कि इज्ज़त से पेश आते थे।

१७—एक दफ़ा हजूर महाराज और महात्मा जी क़ायमगंज से रायपुर जा रहे थे रास्ते में एक गांव पड़ता था। वहां पर बहुत से आदमी खड़े थे हजूर भहाराज चाहते थे कि बचकर निकल जायें लेकिन कुछ आदमियों ने जो आपको जानते थे देख लिया और और नम्रता से बुलाया। इसलिये आपको विबश होकर जाना पड़ा वहां एक युवती बिल्कुल नंगी खड़ी थी और कह रही थी कि मैं जिन्नों में से हूं इस स्त्री पर आसक्त हूं और इसे लेकर जाऊँगा। कुछ लोग झाड़ा फूँकी कर रहे थे और कुछ दवा का प्रयोग कर रहे थे, लेकिन सब बेकार था। सब परेशान थे और समझ में नही आता कि क्या करें? आपको देखकर सब लोग हट गये प्रार्थना करने लगे कि उसकी सहायता करें और इस मुसीबत से छुटकारा दिला दें युवती भी कहने लगी—"आप भी अवश्य चेष्टा कीजिये।' आपने पहले मना किया क्योंकि आप झाड़ा-फूकी व तावीज़

Scanned by CamScanner

इत्यादि के क़ायल नहीं थे और न कभी ऐसा करते थे, लेकिन लोगों ने जब बहुत कहा तो आपने एक क़ाग़ज पर कुछ लिखा और उसको लपेटा और उसके एक सिरेको लैम्प पर रख दिया। कागज का जलना था कि वह युवती चिल्लाने लगी—मुझको मत जलाइये, मैं जाता हूं अब कभी नहीं आऊंगा। जिन्न खुशामद करने लगा और क़सम खाने लगा। आपने वह काग़ज़ बुझा दिया, युवती भी होश में आ गई और फिर कभी उसको ऐसी हालत नहीं हुई।

१८—महात्मा जी नित्य संध्या को दफ्तर बन्द होने के बाद क़ायमगंज से रायपुर गुरु दर्शनके लिये जाते और रात को १० बजे वापिस आते थे। रायपुर और कायमगंज के बीच ४ मील की दूरी हैं। उनका नित्य नियम था। एक दिन बहुत जोर की वर्षा आई चारों ओर बादल छा गये। सब ओर अन्धेरा ही अन्धेरा था हाथ को हाथ महीं सूझता था अभी आप रस्ते में ही थे कि मूसलाधार वर्षा हो गई। आगे जाना बिल्कुब असम्भव हो गया। विवश होकर आप एक वृक्ष के नीचे बैठ गये वृक्ष पर पत्ते भी नहीं थे जो वर्षा के पानी से वचाते। आपने अपने छोटे भाई मुन्शी रघुबर दयाल जी से कहा—नन्हे ! आंखें बन्द कर लो और परमात्मा का ध्याम करो और ख्याल करो कि वर्षा हो ही नहीं रही। आप दोनों इसी ख्याल मैं बैठ गये और थोड़ी देर में अपने आपे से वेख़बर हो गये। कुछ देर के बाद जब आंखें खोली तो क्या देखते हैं कि चारों ओर पामी ही पानी भरा हुआ था लेकिन जिस जगह आप दोनों बैठे हुएथे वह बिल्कुल सूखी थी। उस जगह बिल्कुल वर्षा नहीं हुई थी। जब आप दोनों सज्जन रायपुर पहुंचे तो हजूर महाराज ने पहला प्रश्न यही किया कि तुम भीगे तो नहीं ? आपने सारा हाल निबेदन किया। हजूर महाराज ने

Scanned by CamScanner

कहा—जिस पर परमात्मा की कृपा होती है सृष्टि की शक्तियां भी उस पर कृपा करती है।" फिर कहने लगे—तुम इस वर्षा और तूफान में भी आ गये। वर्षा और तूफान भी तुमको मेरे पास आने से न रोक सके। तुम्हारा विश्वास और प्रेम अथाह है। मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं। परमात्मा तुम पर सदा ही अपनी विशेष कृपा और दया दृष्टि रखे।

१९—एक दिन महात्मा जी रायपुर हजूर महाराज के दर्शनों को जा रहे थे, रास्ते में गायें चर रहीं थी। किसी कारण से वे भड़क गईं और सब ओर से आप पर हमला कर दिया। वहां पर कोई आदमी आपकी सहायता को न था। हाथ में केवल एक कमजोर छतरी थी। मौत निश्चित थी आपने अपना अन्त समय जानकर आंखे बन्द कर लीं और अपने गुरुदेव का ध्यान करने लगे आपके हाथकी छतरी एक साथ खुल गई। जब आपने आंखें खोलीं छतरी खुली हुई आपके हाथ में थी और गायें एक ओर को भागी जा रहीं थीं। आपने परमात्मा को धन्यबाद दिया और अपनी राह ली और सारा हाल हजूर महाराज से निवेदन किया। हजूर महाराज ने कहा—उसको धन्यवाद दो, यह सब उसकी ही दया थी।"

२०—हजूर महाराज की सेवा में एक वकील साहब भी आते थे,जिनका अनुचित सम्बन्ध सेवामें आने से पूर्व एक स्त्री से होगया था। सेवा में आने पर वह सम्बन्ध टूट गया, लेकिन दोनों का अकस्मात एकान्त हो गया और काम शक्ति जाग उठी। सम्भव था कि कोई अनुचित कर्म हो जाता कि दरवाज़े पर उन्होंने हजूर महाराज को खड़ा पाया। दोनों घबराकर अलग अलग हो गये। लेकिन थोड़ी देर बाद फिर शैतान ने आक्रमण किया और उनको

Scanned by CamScanner

यह ख्याल हुआ कि हजूर महाराज की उपस्थिति असम्भव है और यह हमारे ही ख्याल का नतीजा था। इस बार दोनों ने हजूर महाराज को अपने बीच में पाया और अलग अलग हो गये।

२१—एक बार श्रीमान् महात्मा जी फतहगढ़ से अलीगढ़ तहसील को जा रहे थे। गंगा पार होते होते संध्या हो गई और अलीगढ़ अभी ८-१० मील था। आप बहुत घबराये क्योंकि रात अन्धेरी थी आदमी न आदमज़ाद, सुनसान गंगा का मैदान आपने अपने गुरुदेव का ध्यान किया। क्या देखते हैं कि एक वृद्ध पुरुष आगे-आगे चले जा रहे हैं। आपका साहस बंध गया आप उन वृद्ध के पीछे-पीछे अलीगढ़ तक चले आये। अलीगढ़ के पास आने पर वह दृष्टि से ओझल हो गये।

२२—महात्मा जी कहा करते थे कि एक तहसीलदार साहब क़ायमगंज तहसील में बदल कर आये। ये सज्जन महात्मा जी से किसी बात पर नाराज़ हो गये। आपने नाराज़गी दूर करने की बड़ी चेष्टा की, लेकिन सब बेकार रही। महात्मा जी ने हजूर महाराज से निवेदन किया। हजूर महाराज ने साहस बंधाया और कहा कि जब कभी तुमको अवसर तहसीलकार साहब के सामने बैठने का मिले तो अपने साँस को उनके सांस से मिला लो और यह ख़्याल करो कि जो सांस तहसीलदार साहब अन्दर ले जा रहे हैं उनमें तुम्हारा प्रेम भरा हुआ है और जो सांस बाहर निकाल रहे हैं उसमें तुम्हारी नफ़रत दिलसे निकल रही है यह ख्याल विश्वास के साथ करते रहो। यदि अवसर सामने बैठने का न मिले तो यह सोचो कि वह तुम्हारे सामने बैठे हैं और फिर यह क्रिया करो। परमात्मा चाहेगा जरूर फ़ यदा होगा। महात्मा जी ने उस क्रिया को किया थोड़े दिनों बाद तहसीलदार साहब के विचार बदल गये और बजाय नफ़रत के मौहब्बत करने लगे।

Scanned by CamScanner

२३—एक हिन्दू सुनार कभी कभी हजूर महाराज के सत्संग में आ जाते थे और परमात्मा के विषय में बातचीत करते रहते थे उनका यह ख्याल था कि परमात्मा कोई चीज़ नहीं हैं। तत्वों के मिलने से जो शक्ति पैदा होती है उसी का नाम परमात्मा रख लिया है जब शरीर बेकार हो जाता है और माद्दी अजज़ां (भौतिक तत्व) अलहदा-अलहदा हो जाते है, वह शक्ति भी खत्म हो जाती हैं और छिन्न-भिन्न हो जाता है। वरना न कोई आत्मा है और न परमात्मा, यही दुनियां सब कुछ है। न इससे आगे कोई है न पीछे यह सब ख्याली बातें हैं। हजूर महाराज समझाते थे, लेकिन उसके विचार न बदले। एक दिन हजूर महाराज को उन्होंने बुलवाया। हजूर महाराज ने देखा कि उनकी हालत ख़राब है और अन्त समय है। वे सज्जन हजूर महाराज से कहने लगे कि अब मुझको ख़्याल होता है कि कोई शक्ति अवश्य है। अब मुझको इसका कड़ा दण्ड मिलेगा। आपने देखा कि यह सज्जन दुविधा में हैं और दुवधा बुरी बला है। आपने कहा—तुम अपना ख़्याल मत बदलो, उसी पर क़ायम रहो। आपने उनको अपनी तरफ़ देखने को कहा क्षणमात्र में अपनी बिचार शक्ति से उनकी हालत बदल दी। वह अपने ख्याल पर मज़बूत हो गये। थोड़ी देर बाद उनका देहान्त हो गया और शान्ति के साथ प्राण छोड़े।

आपकी करामतों (चमत्कारों) का कहां तक वर्णन किया जाय। आपकी ज़िन्दगी ही करामात और बरकत की जिन्दगी थी जो काम था वह करामात (चमत्कार) था। जहां जाते थे बरकत फैल जाती थी। यह थोड़ी सी बातें जो सेवक ने श्रीमान् लाला जी (महात्मा रामचन्द्र जी) साहब व श्रीमान् चाचा जी (महात्मा रघुवर दयाल जी) साहब की सेवा में रहकर सुनी हैं लिखदी हैं।

Scanned by CamScanner

जनाब मौलाना फ़ज्ल अहमद खां साहब (हजूर महाराज) ने मौलवी अहमद अली खां साहब (खलीफ़ा साहब) से बैत (दीक्षा) ली थी। उस वक्त आपकी उम्र १९ वर्ष की थी १६ वर्ष दिन रात अपने गुरुदेव की सेवा में रहकर शिक्षा प्राप्त की और आचार्य पदवी प्राप्त की। आप स्कूल में फ़ारसी के मास्टर थे आप अपने गुरुदेव की आज्ञानुसार सारी उम्र ब्रह्म-विद्या का प्रचार करते रहे आप बहुत खूबसूरत, स्पष्ट कहने वाले और बड़े सफ़ाई पसन्द थे। हमेशा साफ़ रहते और साफ़ और सफ़द कपड़े पहनते थे। रुपया अपने पास न रखते जो आता खर्च कर देते या किसी को दे देते। परमसन्त मौलवी अब्दुल ग़नी साहब पर विशेष कृपा थी। यह साहब ख़लीफ़ा जी साहब के मन्जूरे नज़र (कृपा पात्र) थे और चोला छोड़ते समय उन्होंने इनको हजूर महाराज के सुपुर्द करदिया था। मौलबी अब्दुल ग़नी साहब की आर्थिक दशा अच्छी थी। वे हजूर झहाराज का हर समय ख्याल रखते थे और आपकी बड़ी सेवा करते थे।

२४ एक दफ़ा हजूर महाराज को ५० रु० की बड़ी ज़रूरत थी। आपने मौलवी साहब को पत्र लिखा। मौलवी साहब ने जबाब दिया कि मैं खुद रुपया लेकर हाज़िर होता हूं मौलवी साहब स्वयं आये और दो रोज़ ठहरे न आपने रुपया मांगा न मौलवी साहब ने दिया। मौलवी साहब चले गये आप बड़े परेशान थे ज़रूरत सख्त थी और रुपया पास नहीं था। आपको यह सोचकर बहुत दुख हुआ कि मैंने परमात्मा का भरोसा छोड़कर इन्सान का भरोसा किया। आर बहुत देर तक रोते रहे और परमात्मा से माफ़ी मांगते रहे। मौलवी साहब ने घर पहुंचकर जब कपड़े उतारे और रुपय. जेबमें देखा ता उन्हें अपनी भूल पर बड़ा दुख हुआ। फौरन वापिस आये और रुपया भेंट किया और क्षमा चाहीं। आपने रुपया स्वीकार

Scanned by CamScanner

किया और कहा कि "यह तुम्हारी भूल नहीं थी। इससे परमात्मा को मुझे एक सबक देना मंजूर था।"

आपको दीन और दुनियां दोनों निस्वतें (आन्तरिक सम्बन्ध) हासिल थीं और इसी वजह से दुनियां वालों को आपकी सोहबत से दोनों ही फ़ायदे पहुंचाते थे। तास्सुब (पक्षपात) आपको छू भी न गया था।

२५—एक बार तालीम के ज़माने में हुज़ूर महाराज एक दुकान के सामने से गुज़रे जहाँ पर एक मज़ज़ूब (अवधूत) फ़कीर बैठा हुआ था। हुज़ूर महाराज ने कुछ पढ़ दिया जिससे इस मजज़ूब फ़क़ीर को होश आ गया। आपकी जानिब (ओर) मुखातिब हुआ। गर्दन को घुमाने लगा और कुछ पढ़ने लगा। आपने ऐसा अनुभव किया जैसे कोई शक्ति अबधूतकी तरफ बड़ी तेजी से खैंच रही है। आप अपने आपको न संभाल सके, घबरा गये। ऐसी बेबसीकी हालत में आपने अपने गुरुदेव का ध्यान किया और फौरन ही आपको यह महसूस हुआ कि गु॰ महाराज ने आपकी जगह ले ली, हालत ठीक हो गई। मजज़ूब साहब बराबर क्रिया करते रहे लेकिन अब कोई असर हज़ूर महाराज पर नहीं था। मजज़ूब साहब अपनी क्रिया करते-करते थक गये अन्त में कहने लगे—मैं मजबूर हूं, तुम्हारे साथ तुम्हारे गुरु शामिल हो गये हैं वरना इस गुस्ताखी की सज़ा देता। शाम को जब आप गुरुदेव की सेवा में हाज़िर हुए, ख़लीफ़ा साहब ने पूछा कि आज क्या घटना हुई? हज़ूर महाराज ने सब हाल सुनाया। ख़लीफ़ा साहब ने आज्ञा दी कि आयन्दा कभी ऐसा मत बरना। फ़क़ीरों को छेड़ना ठीक नहीं होता है।

२६—एक दफ़ा हज़ूर महाराज बेरोज़गार थे नौकरी के लिये कई जगह कोशिश की लेकिन कामयाबी नहीं हुई। मजबूरन अपने

Scanned by CamScanner

पीर मुर्शिद (गुरुदेव) से निवेदन किया आपने सहानुभूति दरसाई और कहा कि तुम पहली तारीख़ से नौकर गये। हज़ूर महाराज की बात सुनकर शक हुआ कि आज दस तारीख़ है पहली तारीख़ से नौकरी कैसी ? दूसरे रोज़ बाजार से गुजर रहे थे पीछे से नवाब शमशाबाद की सवारी आ रही थी। आपको देखकर गाड़ी रोक ली और अपने पास बैठा लिया थोड़ी देरके बाद कहा—अगर खिलाफ़ खातिर (इच्छा के प्रतिकूल) न हो तो मेरे लड़के को अपनी सेवा में ले लीजिये। वे पढ़ते-लिखते कुछ नहीं है आप कल से उन को पढ़ाना शुरू कर दें। हज़ूर महाराजने मंजूर कर लिया और दूसरे रोज़ से पढ़ाना शुरू कर दिया महीना ख़त्म होने पर नवाव साहब ने पहली तारीख़से तनख्वाह दी। हज़ूर महाराज को बहुत दुख हुआ कि क्यों गुरुदेव के शब्दों पर अविश्वास किया।

२७—हज़ूर महाराज ने एक जलसा बुलाया जिसमें बहुत से महापुरुष सभी सम्प्रदायों के शामिल हुए। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई नानक-पन्थी कबीर-पन्थी आदि। महात्मा मुन्शी रघुवर दयाल जी कहा करते थेकि नौसिखिया लोगों को उस जलसे में बैठने की आज्ञा नहीं थी। जलसे में भिन्न-भिन्न विषयों पर बातें होती रहीं। बाद में हज़ूर महाराज ने महात्मा जी को पेश किया और कहा—अपनी तमाम उम्र में मैंने सिर्फ यह दरख़्त तैयार किया है। मेरा अब आख़िर वक्त है मुझको बुज़ुर्गान की तरफ से यह हुक्म मालूम होता है कि अज़ीज़ पुत्तूलाल को इजाज़त अ[illegible]म्मा (गुर पद) देकर अपना जां-नशीन (उत्तराधिकारी) मुक़र्रिर कर दूं आप बुज़ुर्गान बराय-मेहरबानी, बाद इम्तहान इसकी तस्दीक़ (पुष्टि) या तरदीद (अस्वीकृति) फरमा दें। सब लोग हल्क़े (ध्यान) में बैठ गये। आपने महात्मा जी से फ़रमाया—बेटे पुत्तूलाल, इन साहबान को

Scanned by CamScanner

तवज्जोह दो और जो सवाल करें उसका जबाब दो परमात्मा तुम को कामयाबी दें।

महात्माजी ने तवज्जोह देना (आत्मा की धार डालना) शुरू किया। महात्मा रघुबर दयाल जी उस तवज्जोह में मौजूद थे आप कभी कभी कहा करते थे कि इस तवज्जोह में अजीब क़ैफियत थी और यह हालत फिर कभी देखने में नहीं आई। पहले एक आनन्द महसूस होना शुरू हुआ दिल आहिस्ता-आहिस्ता ख़्यालात से खाली होने लगा और आखिर में सिवाय परमात्मा की याद के तमाम ख़्यालात जाते रहे सब बुजुर्गाने-सिलसिला (वंशके महापुरुष) उस हल्क़े में बैठे नज़र आते थे आहिस्ता-आहिस्ता प्रकाश ज़ाहिर ह ना शुरू हुआ। थोड़ी देर बाद सिर्फ़ प्रकाश ही प्रकाश था और बाक़ी सब चीज़ें नज़र से गायब थीं। न अपना बदन दिखाई देता था न किसी दूसरे का ही। यह महसूस होता था कि न कहीं ज़मीन है न आसमान हैं और न ही कोई दूसरी चीज़ है। सब जगह एक ही नूर (प्रकाश) था और उसमें एक अजीब कशिश (खिंचाव) और आनंद था और सब उसमें मस्त थे। यह महसूस होता था कि यह नूर ही सबका असल और सच्चा प्रियतम है। एक ही नाम की गूंज सुनाई दे रही थी जो बहुत ही मुहावनी थी औ तबियत बेक़रार उस नूर से मिलकर एक हो जाने को हज़ार जान से चाहती थी। आँखों से आंसू जारी थे और एक अजीब हालत सीज़ो गुदाज़ (द्रवित होकर रोना) की थी। उसके बाद फिर हालत बदली। नूर आहिस्ता-आहिस्ता नजर से गायब हो गया न कोई दृष्य था न कोई गूँज। होश भी था बेहोशी भी आनन्द भी था। और कोई आलन्द भी न था। एक हल्की सी मदहोशी (नशा) थी और तबियत बिल्कुल उसमें महव (डूबी हुई) थी। आंख खोलने को या उस हालत से अलहदा होने को तबियत नहीं चाहती थी। इस हालत का बयान

Scanned by CamScanner

करना मुश्किल ही नहीं बल्कि ग़ैर मुमकिन है यह हालत बहुत देर तक रही हजूर महाराज ने फ़रमाया—बस अब बन्द करो। अहिस्ता आहिस्ता सबों ने आँखें खोल दीं। सबों ने एक मुंह से महात्मा जी की तारीफ की कि कमाल हासिल किया है और सतपद तक रसाई ही नहीं बल्कि उसमें अपने आपको बिलकुल लय कर दिया है। हजूर महाराज को मुबारिकबाद दी और फ़रमाया—आपने खूब नमूना तैयार किया है जो बिल्कुल आपका जवाब हैं और आपका कमाल है।" इसके बाद एक महापुरुष ने पूछा—बरखुर-दार शुक्र किसे कहते हैं ? महात्मा जी ने जवाब दिया, उन नेम तों (नियामतों) का जो परमात्मा ने बख्शी हैं ठीक तौर पर (जहां जिसकी ज़रूरत हो) धर्मशास्त्र के मुताबिक अम्ल करना ही शुक्र है। सब महापुरुषों ने इस जवाब पर खुशी जाहिर की और इत-मीनान फरमाया और इजाज़त की तस्दीक़ फरमाई (पुष्टि करदी) और जलसा बरख़ास्त हुआ।*

---

*हमारे सिलसिले में जब किसी महात्माके निवणि का समय निकट आता है तब वंश के महापुरुषों के इशारे पर अपने एक या दो मुरीदों (शिष्यों) को इजाज़त ताआम्मा यानी मुकम्मिल इजाज़त दे देते हैं। एक मुरीद (शिष्य) तो उनकी मुराद या गुरुमुख होता है। अगर औलाद में कोई इस योग्य नहीं होता है तो उसको नहीं देते हैं। इसके अलावा और शिष्यों को भी इजाज़त 'तालीम' यानी 'आचार्य' की पदवी दे देते हैं। लेकिन उनको यह इजाजत नहीं होती कि वह दूसरों को मुकम्मिल इजाज़त दे सकें। यह सब इजाज़तें लिखित होती हैं और इस ख्याल से कि इसमें ग़ल्ती न हो जाये उसकी तस्दीक (पुष्टि) दूसरे बुज़ुर्ग (महापुरुष) से करा लेते हैं।

Scanned by CamScanner

हजूर महाराज ने महात्माजी के अलावा अपने गुरुभाई परम-सन्त मौलवी साहब (मौलाना अब्दुलग़नी साहब) को भी इजाज़त ताआम्मा अता फ़रमाई (दी) और इज़ाज़त तालीम अन्य कई सज्जनों को दी। दोनों (महात्मा जी व मौलवी साहब) एक ही उम्र व एक ही बीमारी में गये।

अब हजूर महाराजकी उम्र लगभग ६९ वर्ष की हो गई थी। आपको कभी-कभी दस्त हो जाते थे जिसकी वजहसे आपका कमज़ोरी बढ़ती जाती थी, जीवन की आशा जाती रही थी। सब जानते थे कि अब हजूर महाराज कुछ दिनों के मेहमान है। महात्माजी हुत रंजीदा रहते थे। एकान्त में बैठे रोया करते थे एक रोज़ हजूर महाराज ने अपने पास बुलाकर प्रेम से बैठाया और कहा—बेटे पुत्तूलाल! परेशान मत हो। यह दुनियां फ़ानी (नश्वर) है जो यहां आया है उसको एक दिन ज़रूर जाना है। हमेशा नाम सिर्फ़ एक परमात्मा का ही रहता है मैं हर वक्त तुम्हारे ही साथ हूं। अब तक तो मैं जिस्म की कैद में हूं,अब इससे भी आज़ाद होजाऊंगा और तुम्हारी मदद इससे भी ज़्यादा कर सकूंगा। मेरे बाद तुम अपने चचा साहब (मौलवी अब्दुलग़नी साहब) को मेरी जगह समझना और जो तरीक़ा मेरे साथ बर्ता उनके साथ बर्तना। भाइयों की तालीम पर निगाह रखना। भूले-भटकों को सहारा देना,

---

जिनको यह हक़हासिल होता है कि वह उसकी तस्दीक (पुष्टि) करें या बग़ैर तस्दीक वापिस कर दें या उसको फाड़ दें। अगर वापिस कर देते हैं तो फिर दुबारा तस्दीक हो सकतीहै अगर फाड़ देते हैं तो फिर तकमीली (पूर्ण) इजाज़त नहीं देते हैं। बग़ैर तहरीरी (लिखित) इजाज़त के तालीम देने का किसी को हक़ नही है।

Scanned by CamScanner

धर्मशास्त्र की सदा पैरवी करना और अपनी असल को असल में गुम कर देना परमात्मा तुम्हारी सदैव मदद करेगा।

इसके दो रोज़ बाद आपकी हालत ख़राब हो गई सब सत्संगी भाई मौजूद थे और रो रहे थे आप बराबर बतलाते जा रहे थेकि अब हमारी आत्मा पैर से निकल गई,अब जिस्म के निचले हिस्से से अब हाथों से फिर फरमाया, अब तुम लोग अपनी आंखें बन्द करके परमात्मा का ध्यान करो और उससे हमारी आख़रत (मोक्ष) के वास्ते दुआ करो। सब परमात्मा का ध्यान करने लगे। थोड़ी देर बाद आंखें खोलीं तो देखा—शरीर तो मौजूद है लेकिन आत्मा उसे छोड़कर अपने परमपिता परमात्मा की गोद में जाकर वासिल (लय) हो चुकी है। आपका भौतिक शरीर सन् १९०८ ई० में रायपुर में पंचमहाभूत में मिल गया। रायपुर तहसील कायमगंज, जिला फरुखाबाद में है जहां आपकी समाधि अभी तक मौजूद है।

———

Scanned by CamScanner

चतुर्थ अध्याय

चरित्र चित्रण

छवि

महात्मा रामचन्द्र जी साहब मझले क़द के थे। उनका रंग गेहुआं और मूर्ति मनमोहक थी। माथा चौड़ा और आंखें चमकीली व सुन्दर थीं। बाल बहुत मुलायम थे। केवल आगे का एक दांत और दांतों से कुछ अधिक बढ़ा हुआ। मूंछें और दाढ़ी रखते थे। दाढ़ी छोटी सी, घनी और सुन्दर लगती थी। जज्ब के वक्त (ईश्वर प्रेम के आवेश में) जो आप पर अक्सर आ जाया करता था, सर और मूंछों के बाल खड़े हो जाते थे लेकिन आंख का सलूक ग़ालिब रहता था (उसका प्रभाव आंखों पर नहीं पड़ने पाता था)। इस वजह से जज्ब ग़ालिब नहीं होने पाता था। सेवक ने (जो बीस बरस सेवा में रहा) यह कभी नहीं देखा कि आवेश में कोई बात धर्म-शास्त्र के विरुद्ध कही हो। सिर्फ एक बार हालते-जज्ब (प्रेमावेश) में आपने कहा था कि "सबकी पूजा छोड़कर मेरी पूजा करो और इसी से उद्धार होगा।"

आपकी भोंहें सुन्दर और कमानी की शक्ल की थीं। कान न बड़े न छोटे, शरीर मामूली सा, न दुबला न मोटा और हाथ पांव बहुत कोमल थे।

Scanned by CamScanner

वेश-भूषा

आप जो कपड़े पहनते थे वे कम-क़ीमत मगर साफ होते थे। रेशमी कपड़ा इस्तेमाल नहीं करते थे। पाजामा बीच की मोरी का पहनते थे, न तंग न फैला हुआ। कुर्ता या कमीज भी ज़्याद नीची न होती थी। कुर्ते के ऊपर एक वास्कट पहनते थे। कभी कभी धोती भी पहनते थे। बाहर जाते समय बन्द गले का कोट पहनते थे जो घुटनों तक नीचा होता था। किसी न किसी रंग की टोपी बड़ी बाढ़ की पहनते थे, सफेद नहीं होती थी। जाड़ों में शाल ओढ़े रहते थे। किसी प्रकार का आभूषण, यहाँ तक कि अंगूठी भी नहीं पहनते थे।

दिनचर्या

महात्मा जी सूरज निकलने से बहुत पहले उठते थे। शौचादि से निवृत्त होकर अच्छी तरह हाथ मुंह धोते, मंजन करते और सर में कंघी करते। साफ कपड़ोंको पहनकर अपना अभ्यास करते और उसके बाद लोगों को तालीम देते। दस बजे आप अपने दफ्तर चले जाते। सायंकाल पांच बजे वापिस आते। जलपान के बाद बैठक में आकर बैठते। और लोगों को तालीम देते। सात आठ बजे के लगभग भोजन करते, कुछ देर टहलते और तालीम के काम में लग जाते, अभ्यास करते और कराते। रात के दस बजे यिश्राम करने चले जाते। पहली रात तो सोते पर एक दो बजे के करीब जाग जाते। लघुशंका के पश्चात कुल्ली करते, पाँव धोते और फिर आँखें बन्द करके लेट जाते, लेकिन सोते नहीं थे, बरावर अभ्यास करते रहते थे। अधिकतर अकेले ही सोते थे लेकिन अगर सत्संगी लोग मौजूद होते तो सबके साथ सीते।

Scanned by CamScanner

तक शंका के लिये पहले मिट्टी का डेला ले जाते। बाद में पानी से धोने लगे। वे कहा करते थे कि पानी से शरीर साफ होता है और मसाने का सारा मूत्र बाहर आ जाता है। शौच लेने से पहले मिट्टी के डेले से पोंछ लेते और फिर पानी से धोते।

छुट्टी के दिन गंगाजी के किनारे या बाहर घूमने जाते बाज़ार से सामान खरीद कर लाने। कभी-कभी फ़रुखाबाद जो फतहगढ़ से चार-पांच मील की दूरी पर है पैदल चले जाते और सब भाइयों के साथ अपने सर पर सामान रखकर लाते।

भोजन और खान-पान

जैसा पहले कहा जा चुका है महात्माजी के माता-पिता छोटी उम्र में ही स्वर्गवासी हो गये थे। ज़मींदारी और मकान मुक़दमे में काम आ गये। स्वयँ कलक्टरी में बतौर क्लर्क अहलमद पेशकार के रहे और अन्त में मोहाफ़िज़ दफ्तर के पद से उन्होंने अवकाश पाया वेतन थोड़ा था, एक टूटे-फूटे मकान में किराये पर रहते थे। भाई की गृहस्थी भी रहती थी, इसलिये सदा धन-संकटमें ही रहे (हमेशा तंग-दस्त रहे) बाहर से आने-जाने वाले सत्संगियों का ताँता बंधा रहता था गुज़ार मुश्किल से होती थी।

आपका भोजन बहुत सादा था। दोपहर के भोजन में रोटीके अलावा एक दाल और चटनी होती थी सायंकाल के भोजन में एक तरकारी और एक अचार। दोनों भोजनों के बीचके समय में खाने की उनकी आदत न थी, यदि कोई मजबूर करता तो वे कुछ खा लेते मांस का प्रयोग नहीं करते थे। कचौरी और अरवी का सूखा साग उन्हें पसन्द था।

यदि कोई व्यक्ति खाने के समय आ जाता तो उसे भोजन अवश्य कराते। यदि दाल कम पड़ जाती तो उसमें थोड़ा सा पानी

Scanned by CamScanner

और नमक मिलवा देते थे। जब सब लोग खा चुकते तब वे स्वयं भोजन करते। चाय और बर्फ का सेवन वे नहीं करते थे।

आमदनी कम और खर्च ज्यादा होनेकी वजहसे वे सदा ऋणी रहते। यहां तक कि कभी-कभी भूखे रहने की नौबत तक आ जाती लेकिन किसी को ज़ाहिर नहीं होने देते थे।

रुपये की शक्लमें वे नज़राना (भेंट) कभी न लेते और अगर मजबूर करने पर ले लेते तो उसे किसी ग़रीब को दे देते। खाने-पीने की चीज़ें कबूल कर लेते थे और उन्हें जो सत्संगी वहां मौजूद होते थे उनमें बाँट देते थे।

ख़ास ख़ास आदमियों से शादी वग़ैरा के मौक़ों पर रुपया वग़ैरा नज़राना क़बूल कर लेते थे।

स्वभाव

आप बहुत शान्त और कोमल स्वभाव के थे बहुत मीठी वाणी बोलते थे। गुस्सा बहुत कम आता था दूसरों के दुख से दुखी और बेकल हो जाते थे और कभी कभी रो पड़ते थे। इतने कोमल होते हुए भी आप उसूल (सिद्धान्त) के मामले में बहुत सख़्त थे। कोई शक्ति उन्हें अपने उसूल से नहीं हटा सकती थी। इसी विषय पर उनकी एक बात याद आ गई।

एक सत्संगी सज्जन ने एक वैश्या को अपने पास नौकर रख लिया। आपने उसको आक़ कर दिया (अपने से उसका सम्बन्ध ही तोड़ दिया)। उसने बहुत खुशामद की तथा औरों ने भी उसके लिये बहुत कोशिश की पर कोई सुनवाई न हुई। सेवक पर आप बहुत महरबान थे और कभी निराश नहीं करते थे सेवक ने निवेदन किया कि मुआफ़ (क्षमा) कर दिया जाय। आप कहने लगे—तुम

Scanned by CamScanner

ऐसा न कहो। मैं कभी उसे मुआफ नहीं कर सकता मुआफी सिर्फ एक शर्त पर मिल सकती हैं वह यह कि उस वैश्या से शादी कर ले और आगे के लिए तौबा कर ले या उसे क़तई छोड़ दे। मैं अपनी सफ़ेद दाढ़ी पर काला दाग़ नहीं लगने दूंगा आप कहा करते थे—सब गुनाह (पाप) मुआफ किये जा सकते हैं लेकिन जिनाकारी (परस्त्री-गमन) नहीं। अगर अपना लड़का भी बदकार (कुकर्मी) हो तो उसे भी छोड़ देना चाहिये। कहते थे कि—अगर बूढ़े हो और अकेले नहीं रह सकते तो शादी करलो। इसमें कोई हर्ज नहीं है लेकिन ग़ैर औरत (पर स्त्री) के साथ सौहबत करने वाला मेरा नहीं हो सकता।

आप ज़्यादा बातचीत नहीं करते थे आंख मिलाकर बातचीत कम करते थे जो प्रश्न किया जाता उसका उत्तर देते थे और खूब समझाते थे। बेकार बातचीत नहीं करते थे अगर कोई बात पूछने वाले की समझ के बाहर होती तो ख़ामोशी (मौन) अख्त्यार कर लेते थे और उस हालत को उस व्यक्ति पर गुज़ारते वक्त इशारा करते और समझा देते थे कि जो तुमने पूछा था वह यह हालत है।

नीची दृष्टि करके चलते थे न बहुत धीरे चलते थे और न ज्यादा तेज़ बीच की चाल चलते थे। ज़ोर से ठहाका मारकर कभी नहीं हंसते थे हंसने की बजाय मुस्करा देते थे।

वे दीनता की मूर्ति थे लेकिन खुशामद की बात नहीं करते थे दिल आज़ारी (दिल दुखाने) से बहुत घृणा करते थे यहाँ तक कि दूसरों की ख़ातिर जो चीज़ पसन्द न होती वह भी इस्तेमाल कर लेते थे। औगर कोई बहस करने लगता तो आप चुप हो जाते थे। कहा करते थे—जब तक कोई तुम से सलाह न मांगे अपनी तरफ से उसे कोई राय मत दो वर्ना बजाय फ़ायदे के नुक़सान होगा। हां, उसकी भलाई के लिये परमात्मा से दुआ करते रहो।

Scanned by CamScanner

वे कहा करते शे कि अपनी आवश्यकताओं को कम करो यदि एक चीज मौजूद है तो दूसरी मत ख़रीदो। अगर एक जूता मौजूद है तो दूसरा ख़रीदने की क्या ज़रूरत है ?

खूब रुपया कमाओ मगर उसे दूसरों पर खर्च करो। हाजत मंदों (ग़रीबों) और विधवाओं की मदद करो। दिल आज़ारी (दिल दुखाने) से हमेशा बचो।

"हर्चे ख़्वाही कुन बले दिल आज़ारी न कुन"
(जो चाहो करो लेकिन किसी का दिल न दुखाओ)

आप कहा करते थे कि जो व्यक्ति अनाथ बच्चों और विधवाओं को सताता है उसका जल्दी नाश होता है।

चिराग़े की वेवा ज़ाने बरफरोज।
बसे दीदा बासी कि शहरे बसोख्त ॥

जिस चिराग़ को वेवा औरत ने जलाया, तूने देखा होगा कि सारे शहर को जला दिया अर्थात् विधवा की आह से बहुत जल्दी नाश होता है।

ग़ैर औरत (पर-स्त्री) के पास बैठने के लिये आह हमेशा मना किया करते थे। इसका असर रियाज़त (अभ्यास) पर ऐसा पड़ता है जैसे नन्हें पौधे पर पाले का। मन पर कभी भरोसा मत करो, हमेशा अहतियात बरतो जो व्यक्ति स्त्री का ग़ुलाम है और जो धन-लोलुप होता है वह कभी भी परमार्थ नहीं कमा सकता।

दिखावट से उन्हें बहुत परहेज़ था साफ़ बात पसन्द करते थे चाहे वह कितनी ही कड़वी क्यों न हो। वे कहा करते थे असली इखलाक यह है कि जो दिल में हो वही जुबान पर हो दिल में कुछ हो और ज़ुबान पर कुछ, यह बहुत बद इख़लाक़ी है।

Scanned by CamScanner

अपने मुंह से किसी की बुराई वे कभी नहीं करते थे बल्कि अगर बात सही होती तो चुप हो जाते थे। अपने से बड़ों का आदर करते और पहले स्वयँ नमस्ते या सलाम करते बराबर वालों से प्रेम और नम्रता से व्यवहार करते और छोटों व बच्चों से प्रेम तो करते परन्तु अधिक घुलते मिलते नहीं थे। जिन लोगों के साथ उनकी तबियत नहीं मिलती थी उनसे अलग रहते थे और कोई वास्ता नहीं रखते थे।

किसी प्रकार का नशा वे नहीं करते थे यहां तक कि हुक़्क़ा जिसका उनके काल में काफी प्रचार था। वे नहीं पीते थे। ताश चौसर इत्यादि से उन्हें नफरत थी वे कहा करते थे कि ताश चौसर इत्यादि खेलने में समय बेकार नष्ट होता है।

हारमोनियम बजाने और गाने का उन्हें शौक़ था। एक बार बराबर गाने में व्यस्त रहे सुर-ताल लिखे लिखाये गये और दिन-रात यही शग़ल रहा। सेवक एक दिन वहां मौजूद था मुझसे पूछा तुम जानते हो कि मैं इतना मशग़ूल (व्यस्त) क्यों हूं? और फिर स्वयँ ही कहने लगे—अपने पिछले संस्कार पूरे कर रहा हूँ। इस के पश्चात् बाजा उठाकर रख दिया और फिर सदा के लिये छोड़ दिया। आरम्भ में गाने का उन्हें शौक था धीरे धीरे वह कम होता गया और शरीर विसर्जन के दो साल पूर्व बिल्कुल बन्द कर दिया।

वे विधवा विवाह के पक्षपाती थे। स्त्रियों की शिक्षा में उनका बड़ा प्रोत्साहन रहा सत्संगियों में आपस में शादी विवाह हों, इस बात को वे एक रिवाज बना देना चाहते थे। वह बाल विवाह के विरुद्ध थे परन्तु अधिक आयु में विवाह करने को भी वे पसन्द नहीं करते थे।

Scanned by CamScanner

गुरु कहलाने या शिष्य कहने में उन को चिढ़ थी कभी कभी सत्संगियों को गंगा स्नान कराने लेजाते और कभी-कभी मेले तमाशे में भी ले जाते।

कुत्ता पालने के विरुद्ध तो नहीं थे पर उसको पास सुलाने, बर्तनों में खिलाने और पास बिठलाने विरुद्ध थे।

नौकरों से घरवालों का सा व्यवहार करते थे। वे कहा करते थे कि नौकर इसलिये नहीं है कि स्वयं बैठे रहो और नौकर काम करते रहें। नौकर मदद देने और उस काम को करने के लिए हैं जिनको तुम न कर सको नौकर की तनख्वाह और मज़दूरकी मज़-दूरी मांगने पर तुरन्त दे देते थे।

किसी के साथ कोई वायदा वे नहीं करते थे और यदि करते भी थे तो उसे पूरा करते थे। वायदा खिलाफ़ी के विरुद्ध थे।

शादी विवाह में अधिक धन व्यय करने के विरोधी थे।

किसी की बुराई वे कदापि न सुनते थे। यदि कोई किसी की बुराई करता तो उस पर अप्रसन्ता प्रकट करते और कहते कि मैंने तुमको जासूसी करने के लिये नियुक्त नहीं किया जो लोगों की रिपोर्ट ला लाकर दो।

———

Scanned by CamScanner

पंचम अध्याय

गुरुदेव के बाद महात्मा जी का जीवन

अभी तक कुछ हाल महात्मा जी के गुरुदेव के विषय में पाठकों के सामने रखे गये। अब हम फिर महात्मा जी के जीवन का हाल यहां देते है।

हुजूर महाराज के स्वर्गवास हो जाने के बाद महात्मा जी का तब दला सन् १९०८ में कायमगंज से फतहगढ़ को हो गया। आपने इस वक्त एकान्त सेवन आरम्भ कर दिया। दफ्तर के काम के अलावा सारा समय परमात्मा की याद में व्यतीत करते। एक पुराना नौकर जो बचपन से आपके यहां था, इस समय भी आपके साथ था, वही तमाम घर का इन्तज़ाम करता और सब सेवा करता। यह स्वामि भक्त सेवक अन्त समय तक आपके साथ रहा।

आप कभी-कभी छुट्टियों में श्रीमान मौलवी अब्दुलग़नी साहब की सेवा में मैनपुरी या भोंगांव जाया करते और मौलवी साहब भी कभी कभी स्वयं आपके पास आते रहते और अपने सत्संग से लाभ पहुंचाते रहते थे। यद्यपि पास पड़ौसी आपके पवित्र जीवन और ईश्वर-भक्ति से अनभिज्ञ थे लेकिन फिर भी आपकी रहनी-सहनी का उन सभी लोगों पर बड़ा गहरा असर पड़ा। सभी लोग आपका आदर करते और आपसे प्रेम करते थे। शुरू-शुरू में कुछ अध्यापक आपकी ओर आकर्षित हुए और आपके पास नित्य आने लगे। इसके बाद स्कूल के कुछ लड़के भी आने लगे। उन लड़कों में कुछ ऐसे भी

Scanned by CamScanner

लड़के थे जो बड़े उद्दण्ड और लड़ाकू थे। इन लड़कों के रहन-सहन पर आपकी पवित्र संगति का बड़ा गहरा असर पड़ा और उनका नित्य का रहन-सहन सुधरने लगा, बुरी आदतें छूटने लगीं और उन की जगह नेक और भली आदतों ने ले ली। जनता को इन लड़कों की हालत देखकर बड़ा आश्चर्य होता था कि क्या से क्या हो गये। आरम्भ में तो लोग यह समझे कि यह अन्तर केवल कुछ ही दिनों का है, लेकिन जब देखा कि पुरानी हालतों पर आने की बजाय लड़कों के रहन-सहन में नित नई उन्नति ही होती जा रही है तो लोगों को भी चाव पैदा हुआ कि ऐसे महापुरुष के दर्शन करने चाहिये जिनके सत्संग के प्रभाव से इतनी बड़ी तब्दीली लड़कों के रहन सहन में हुई है। अब तो लोगों के झुण्ड के झुण्ड आने लगे और एक बड़ी संख्या मनुष्यों की आपकी महानता के कारण आपके चारों ओर इकट्ठी हो गई। जो भी आता, आपके महान् चरित्र से प्रभावित हो जाता। जो एक बार भी आ गया आपके प्रभाव से ख़ाली नहीं गया। ऐसा भी हुआ कि कुछ लोगों ने आपका सत्संग छोड़कर दूसरे सन्तों का सत्संग अपना लिया और दूसरी जगह से फ़ैज़याब हुए, लेकिन उन्होंने भी हमेशा यही कहा कि "आपके मुकम्मिल (पूर्ण सन्त) होने में शक नहीं है लेकिन यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारा हिस्सा यहां नहीं था" कुछ सज्जनों से आप स्वयं कह दिया करते थे कि "तुम्हारा हिस्सा मेरे पास नहीं है, अमुक महापुरुष से तुमको फ़ायदा होगा।" लेकिन बगैर असर के कोई वापिस नहीं गया। आप कहा करते थे कि "हमारा काम तो धोबी या भंगी का है, जो आ गया उसके मन को धो डाला। साफ़ होने पर अपने संस्कार के अनुसार कोई न कोई रहबर (पथ प्रदर्शक) मिल ही जायेगा।" देखा भी यही गया कि आपके थोड़ी देर के सत्संग के प्रभाव से सैकड़ों आदमियों के जीवन का रुख़ बदल गया और उनका जन्म सफल हो गया।

Scanned by CamScanner

हम नशीनी ताअते बा औलिया।
बेहतर अज सद साल ताअत बेरिया॥
एक घड़ी आधी घड़ी आधी से पुनि आध।
तुलसी संगत सधु की काटें कोटि अपराध॥

[अर्थ—सन्त के एक क्षण के सत्संग से जो लाभ होता है, वह बरसों को सच्ची तपस्या से कहीं ज़्यादा है।]

जो सज्जन आपके प्रेम-पात्र हुए उनकी क़िस्मत का सितारा चमक उठा। वे अब भी उनको दर्शन देते हैं और बराबर फ़ैज़याब (लाभान्वित) करते रहते हैं और सतपद तक पहुंचाकर ही छोड़ेंगे जो किसी कारण जीवन में आपके सत्संग से वंचित रहे वे हमेशा अब भी उनकी याद करते हैं और गुप्त रूप से फैजयाब हो रहे हैं। आप कहा करते थे -

कदग़न है यही ग़ैर कोई आने न पाये।
गर बेख़बर आजाय तो फिर जाने न पाये॥

[अर्थ—इस बात की मनाई है कि कोई ग़ैर आदमी अपनी सौहबत में आ जाये, यदि भूलसे आ जाये तो फिर जाने न पाये।]

आरम्भ में आप सब सज्जनों को पूज्य मौलवी साहब की सेवा में पेश कर देते थे, बाद को मौलवी साहब के कहने पर कि "तुम स्वयँ काम क्यों नहीं शुरू करते" और अपने गुरुदेव की आज्ञा का ख़्याल करके [कि मेरे ख्यालात का प्रचार करो और यही तुम्हारी निजात (मोक्ष) का ज़रिया (निमित्त) होगा] घबरा जाते किक्या करे और क्या न करें? इसीलिये हिम्मत नहीं पड़ती थी कि इतनी बड़ी जिम्मेदारी को अपने ऊपर लें। इधर अपनी कमजोरियों पर निगाह थी उधर गुरुकी आज्ञा। अजब परेशानी थी, अन्तको आपने यहा फैसला करके कि मैं तो चपरासी हूं, मेरा फ़र्ज़ तो हुक्म बजा लाना है और बस, इसमें कामयाबी होती हैं या नहीं इसको हाकिम खुद जाने, जिसका वह काम है। सन् १९१४ ई०से गुरुदेव का काम

Scanned by CamScanner

शुरू कर दिया। सुबह सात बजे से साढ़े नौ बजे तक लोगों को उपदेश देते और अभ्यास कराते, दस बजे दफ्तरको जाते और पाँच बजे आते। फिर छः बजे शाम से रात के दस बजे तक आध्यात्म-विद्या की शिक्षा में व्यस्त रहते। रात को अभ्यास करते अक्सर छुट्टियों में बाहर जाते और शिक्षा देते। इस तरह बराबर सन् १९२९ ई० तक रात दिन दफ्तर के समय को छोड़कर आध्यात्म-विद्या का प्रचार और प्रसार करते रहे।

अन्तिम समय

सन् १९२९ ई० में आपको गवर्नमेन्ट ने अपनी जुम्मेदारियोंसे मुक्त कर दिया। जापकी पेन्शन हो गई अब औरआज़ादी मिल गई और सारा समय सुबह छः बजे से रात के दस बजे तक उपदेश और अभ्यास कराने में व्यतीत करते। दोपहर को दो तीन घन्टे पत्रोका उत्तर देते और किताबों के लिखने में व्यतीत करते। बीमारी का हालत तक में बराबर तालीम देते रहते।

परमात्मा को जो काम आपसे लेना था वह प्रायः समाप्त हो चुका था। सन् १९३१ ई० में आप जिगर (यकृत) की बीमारी से पीड़ित हो गये। हर प्रकार का इलाज डाक्टरी, यूनानी आयुर्वदिक आदि किया गया लेकिन बेसूद। बीमारी आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ती गई और असाध्य हो गई आप बहुत कमजोर हो गये। अधिकतर समय मौन रहते और आंखें बन्द किये लेटे रहते। यद्यपि आपके जिगर में असह्य पीड़ा थी लेकिन शान्ति पूर्वक सहन करते रहे। जैसे-जैसे अन्त समय निकट आता जाता था आप परमात्मा के प्रेम में विह्वल हो जाते थे। आंखों से आसुओं की नदी बहने लगती और कहते—

वादये वस्ल चूं शबद नज़दीक।
आतिशे शौक तेज़ तर गरदद॥

Scanned by CamScanner

[अर्थ—माशूकसे मिलाप के वायदे की घड़ी जितनी नजदीक होती जाती है मिलने के शौक की आग तेज होती जाती है।]

मृत्यु से एक सप्ताह पहले लखनऊ में सेवक को आज्ञा दी कि "अब तुम सिकन्द्राबाद जाओ।" यह कहकर अपने से अलहदा कर दिया। लखनऊ से कानपुर आये और कानपुर से फतहगढ़। इलाज सब बन्द कर दिये। जो सत्संगी भाई वहाँ पर मौजूद थे उनको अन्त समय तक तालीम देते रहे। मृत्यु से एक दो दिन पहले कहने लगे कि बुजुर्गान सिलसिला (वंश के महापुरुषों) की रूहों (आत्माओं) को हर समय अपनी खाट के चारों तरफ पाता हूं। अब माशूक के मिलाप का समय बहुत नज़दीक है।"

अब आपको दस्त आने लगे। चलना-फिरना बन्द हो गया। कमज़ोरी ज़्यादा बढ़ गई। १४ अगस्त सन् १९३१ ई० की सुबहको संध्या वाले कमरे में जहां हमेशा संध्या हुआ करती थी। बिना किसी की सहायता के स्वयं पधारे। खाटपर लेट गये और आंख बन्द कर लीं और फिर नहीं खोलीं और न किसी से बातचीत की। मक्खी वग़ैरा को हाथ से उड़ा देते और बस। रात के एक बजे ईश्वर की उस अखण्ड ज्योति ने पार्थिव शरीरको छोड़दिया और अपने असल भण्डार में सदा के लिये विलीन हो गई। महात्मा जी की समाधि फतहगढ़ में कमालगंज वाली सड़क पर स्थित है।

हम ना मरे, मरा संसार।
हमको मिला जिलावनहार॥

———

Scanned by CamScanner

छठा अध्याय

(महात्मा जी के जीवन की कुछ घटनायें)

[तीसरे अध्याय में उन थोड़ी सी अद्भुत घटनाओं का उल्लेख किया जा चुका है जो लेखक ने परमसन्त श्रीमान् लाला जी साहब के श्रीमुख से सुनी थीं या जो उनके छोटे भाई परमसन्त महात्मा रघुवर दयाल जी से सुनी या किसी अन्य महापुरुष ने सुनाई थीं। इस अध्याय में उन घटनाओं का उल्लेख किया जाता है जो महात्मा जी की सेवा में रहकर लेखक ने स्वयं अनुभव कीं।

इससे प्रथम कि लालाजी के अद्भुत चरित्र की घटचाओं का उल्लेख किया जाय लेखक यह आवश्यक समझता हैं कि अपना निज का भी कुछ हाल यहां दे दे। यह इसलिए किया जाता है कि इसके छोड़ देने से महात्माजी की आध्यात्मिक शिक्षा और उनके महान् चरित्र का एक बहुत बड़ा भाग प्रेमी भाइयों के सामने आने से रह जायेगा।]

महात्मा जी और लेखक (डा० श्रीकृष्ण लाल)

प्रथम मिलन

अक्टूबर सन् १९१४ की घटना है किसेवक विद्यार्थी जीवनमें था और गवर्नमेन्ट स्कूल फतहगढ़ में १० वीं कक्षा में पढ़ा करता था। एक दिन सेवक के पिता जी ने एक चैक खजाने से रुपया लाने

Scanned by CamScanner

के लिये दिया। जब सेवक ख़ज़ाने में चैक लेकर क्लर्क साहबके पास गया और उन्होंने सेवक की ओर ध्यान से देखा तो एक आनन्द की लहर सारे शरीर में फैल गई ठीक इसतरह जैसे बिजली का तार छूने से तमाम शरीर में बिजली फैल जाती है। सेवक के जीवन म इस प्रकार का यह पहला अवसर था। घबरा गया और आंखें नीची कर लीं। वह हालत जाती रही। दो-तीन घन्टे बाद जब सेवक खज़ाने से रुपया लेकर वापिस आ रहा था, बरामदे में उन्हीं क्लर्क साहब को टहलते पाया। सेवक ने उनकी ओर फिर देखा। ज्योंही आँख का मिलना था कि फिर वही हालत हो गई जो पहली बार हुई थी, लेकिन इस बार अकेली आनन्द की लहर ही न थी बल्कि प्रेम भी शामिल था जो अपनी ओर खींच रहा था। मेरे मनमें विचार उठा कि क्या यह सज्जन कोई मिस्मराईज़र (Mismeriser) हैं? तबियत पास बैठने और बातचीत करने को चाहती थी लेकिन हिम्मत नहीं हुई और दिल पर क़ाबू करके बिना बातचीत किये हुए ही घर वापिस आ गया। दो चार दिन बाद परेड ग्राउण्ड के मैदान में सेवक शाम को एक जगह बैठा हुआ था। थोड़ी देर बाद वही सज्जन टहलते हुए वहां आ गये जहां सेवक बैठा हुआ था। सेवक ने उठकर नम्रता पूर्वक नमस्कार किया और पूछा कि क्या आप किसी विद्यार्थीसे मिलना चाहते है, जिसको कि मैं बुला लाऊं जो वहां खेल रहे हैं? आपने कहा—नहीं हमें किसी विद्यार्थी से मिलना नहीं है, हम तो सिर्फ हवाखोरी (वायु सेवन) करने के लिये इधर आ निकले है। यह कहकर एक तरफ चल दिये और सेवक तब भी आपसे बातचीत न कर सका।

उसी रात को स्वप्न में एक वृद्ध फकीर दिखाई दिये जो कभी 'ॐ' कभी 'अल्लाह' और कभी 'राम' की आवाज़ लगाते थे। शरीर पर कभी सुनहले कपड़े, कभी रेशम के, कभी टाट के कपड़े

Scanned by CamScanner

और कभी थेगली ही थेगलियां थी और कभी बिल्कुल नंग धड़ंग। आदर भाव से सेवकने उनके चरण छूने चाहे तो उन्होंने यह कहकर क़दम हटा लिये कि "हम दुनियां के कुत्तों से पांव नहीं छुआते।" फिर सेवक को बचपन के हालात बतलाने लये और नसीहत करने लगे कि क्या करने आया था और क्या करने लगा ? अभी वक्त है, सम्भल जा।" सेवक उनके पास से हटकर दूसरी तरफ़ चला गया, लेकिन जहां जाता था वही फकीर दिखाई देते थे। वही उनके कपड़े थे, वही सदा (आवाज़ लगाना) थी और वही नसीहत (शिक्षा)। सारी रात यही हालत रही सुबह को जब मैं उठा तो तबियत परेशान थी, क्योंकि सेवक को अक्सर यही स्वप्न दिखाई देते थे जो आगे चलकर घटनाओं की सूरत में बदल जाते थे और सत्य सिद्ध होते थे।

वह रविवार का दिन था और सेवकके साथी हर इतवार एक सन्त के पास आन्तरिक अभ्यास करने जाया करते थे। जिनकी वे बहुत प्रशंसा किया करते थे सेवक उनकी बात सुनकर हँसी उड़ाया करता था। उस समय उन्होंने सेवक से पूछा -- क्या तुम भी हमारे साथ चलोगे ? सेवक इस विचार से कि तबियत बहलेगी उनके साथ चल दिया। जब महात्मा जी के मकान पर पहुंचा तो यह देखकर अचरज हुआ कि यह वही सज्जन थे जिनके दर्शन सेवक ने खजाने व परेड ग्राउड पर किये थे। आप जमीन पर बिछी चटाई पर बैठे थे मुझको देखकर आपने कहा—श्रीकृष्ण ! भाई तुम कैसे आये ? सेवक ने निवेदन किया—मैंने रात एक स्वप्न देखा है जिसके कारण मैं परेशान हूं और ताबीर (स्वप्न का क्या आशाय है) जानना चाहता हूं।

आपने कहा—यह ख्वाब नहीं वाक़ा (सत्य) है। में मुद्दत से तुम्हारी तलाश में था तुम मेरी बिछुड़ी हुई आत्मा हो। मैंने तुमको

Scanned by CamScanner

पहली मर्तबा ख़ज़ाने में देखा, पहचान लिया। मैं तुमको कई रोज़ से बुला रहा था लेकिन तुम नहीं आये। रात को जो फ़क़ीर तुमने देखावह मैं ही था और तुमको बुलाना मक़सूद था (मैं तुम्हें बुलाना चाहता था)। ताबीर (स्वप्न का आशय) यह हैं कि मैं तुम्हारा हूं, तुम मेरे हो अब तुम यहां से नहीं जा सकते।

लालाजी से यह मेरी पहली भेंट थी। मैं मज़हब औरपरमार्थ से बिल्कुल नावाक़िफ़ (अनभिज्ञ) था। यह ज़रूर था कि बचपन से ही मुझको भगवान् श्रीकृष्ण जी महाराज से दिली मौहब्बत थी और अक्सर उनके प्रेम में मैं रोया करता था। बहुधा उनके दर्शन भी मुझे हुआ करतेथे और प्राय: उनसे दुनियाँवी मामलात में बहुत मदद मिलती थी। आगे आने वाली बातें पहले से ही मालूम हो जाती थीं। मगर जो चीज़ आपसे मुझको पहली बार सेवा में जाने से मिली और सदैव मिलती रही वहथी सच्ची बेप्ररज़ाना मौहब्बत सच्चा निस्वार्थ प्रेम जिसके लिये मैं बचपनसे ही मारा-माराफिरता था। मैं बचपनसे ही ऐसी विभूतिकी खीज.में था जो मुझसे निस्वार्थ प्रेम करे और जिससे मैं भी स्वार्थ रहित प्रेम करूँ। यह स्नेह मैंने मां-बाप में नहीं पाया, दोस्तों को इससे ख़ाली पाया, कहीं भी इसका पता नहींपाया। मैं जिसकी और झुकता था वही संशय भरी दृष्टि से देखता था और दूसरे लोग भी ज़माने के मुताबिक़ तरह-तरह के अर्थ लगाते थे, बदनाम करते थे। इससे मुझे दुख होता था और मैं अक्सर रोया करता था। मैं दुनियां से ऊब चुका था, क्योंकि जिस चीज़ की मुझको तलाश थी और जिस की तलाश में मैं पैदा हुआ था, जो मेरी आत्मा थी और जो मेरी ज़िन्दगी की आख़िरी तमन्ना थी, वह मुझको कहीं नज़र नहीं आती थी। फिर जिन्दगी क्या थी—वबाले जान (भार) और मौत उससे बेहतर (अच्छी) थी। मैं अपनी दुनियां और ज़िन्दगी से निराश हो चुका

Scanned by CamScanner

था। घन्टों रोया करता और सोचा करता था कि दुनियां क्या है? तमाशा है। मैं एक निस्वार्थ प्रेम चाहता हूं और उसके बदले में मैं अपनी ज़िन्दगी देने को तैयार हूं लेकिन वह चीज़ नहीं मिलती। मेरे दिलकी यह हालत थी जब मैं महात्मा जी की सेवामें आया। पहले दिन की एक घन्टे की मुलाक़ात ने ही बता दिया कि जिस चीज की तलाश मुझको न मालूम कितने जन्मों से थी, आज मिल गई। अब मुझको दुनियां में किसी चीज़ की चाह नहीं है। अब दुनियां मेरे लिये बहिश्त (स्वर्ग) है और चैन ही चैन है। आगे की घटनाओं ने बतला दिया कि मेरा पहले ही दिनका ख्याल बिल्कुल सही था और दिन प्रतिदिन उसकी पुष्टि होती गई। आपने मेरा हाल ध्यानपूर्वक सुना और कहने लगे—मैं तुमको समझता हूँ तुम्हारी बेरग़जाना मौहब्बत (निस्वार्थ प्रेम) को समझता हूं। तुमको जिस चीज़ की तलाश है उसकी दुनियांदारों को हवा तक नहीं लगी हैं, फिर वे तुमको क्या समझें? बदनाम करते हैं तो उनका क्या क़सूर है? तुम्हारी तबियत जब चाहे तब तुम आसकते हो, मुझको तुमसे मिलकर खुशी होगी।

आध्यात्म विद्या का श्रीगणेश

अब मैं आपकी सेवा में प्रति दिन जाने लगा। आपकी शक्ल मुबारिक (मुखाकृति) मुझको बहुत प्यारी मालूम होती थी मैं उसी को देखा करता था और सरूर और आनन्द के मजे लेता रहता था आपका गाना लाजवाब (बे जोड़) था। जिसने एक बार सुनलिया उसको फिर किसी का गाना पसन्द ही नहीं आया कभी कभी आप परमात्मा के प्रेम में मस्त होकर गाने लगते थे तो एक समां बंध जाता था। आनन्द और प्रेम की नदी बहने लगती थी और उसी हालत में समाधि लग जाती थी। समयका कुछभी ज्ञान नहीं रहता

Scanned by CamScanner

था। मेरे यही दो शगल (अभ्यास) थे इसमें मुझको जो शान्ति और और आनन्द मिलता था, इससे पहले उसका अनुभव करना तो दर-किनार ख्याल में भी नहीं आया।

मज़हब (मम-मतान्तर) और परमार्थ में मेरी रुचि नहीं थी जो लोग धार्मिक वार्तालाप करते या तर्क-वितर्क करते वह मुझको बुरा लगता। मेरी यह इच्छा रहती कि सब लोग शान्त बैठे रहें आपको देखते रहे और दिल से उस प्रेम का आनन्द लेते रहे जो आपकी सेवा में हर समय रहता था। यही मेरा मजहव था ओर यही मेरा परमार्थ।

मैं बराबर आपकी सेवामें जाता रहा। आहिस्ता आहिस्ता और लोगों को देखा देखी मुझको भी शौंक हुआ कि मैं भी कुछ अभ्यास करूँ। एक दिन मैंने निवेदन किया मुझे भी कोई साधन बतलाइये। आपने कहा—तुमको कोई जरूरत साधन करने की नहीं है मैं यह सब साधन तुम्हारे ही लिये कर रहा हूं। कुछ दिनों बाद मैंने फिर वही निवेदन किया। एक दिन आपने अपने सामने बैठाकर कहा कि आंखें वन्द कर लो और अपने ख़्यालात को देखते चलो। आँखें बन्द करते ही ऐसा मालूम हुआकि मैं शरीर के बन्धन से बिल्कुल आजाद हूं। हवा में उड़ता हुआ ऊपर जा रहा है। बड़े ही आनन्द का अनुभव कर रहा था अजीब मस्ती थी, तन-बदन का होश न था। मुझको नहीं मालूम कि मैं कितनी दैर बैठा रहा। आपने कहा कि आँखें खोल दो। मुझको होश आ गया और जमीन पर आ गिरा। लेकिन न मुंह से बोला जाता था न कानों से सुनाई देता था। मैंने हाथ के इशारे से बतलाया कि मुझसे बोला नहीं जाता। थोड़ी देर में हालत ठीक हो गई और मैंने अपना हाल

Scanned by CamScanner

निवेदन किया। आपने कहा—"हालत अच्छी है मुबारिक हो।" दूसरे दिन आपने फिर सामने बैठाकर कहा—"अपने दिल में जो सूरत सबसे अच्छी लगती हो उसका ध्यान करो।', मैं अपने एक दोस्त का ध्यान करने लगा, जिससे मेरी बड़ी दोस्ती थी। मैं यही अभ्यास करने लगा, इससे मुझको बड़ा आनन्द आने लगा, लेकिन शक्ल जिसकी मैं ध्यान करता था लोप होनेलगी और उसका बजाय दिल के स्थान पर घड़ी की टिक-टिक की सी आवाज सुनाई देने लगी।

आप प्रति दिन अपने साथ बैठाकर अभ्यास कराते थे। एक दिन पूछने पर निवेदन किया कि अब शक्ल ध्यान में नहीं आती, दिल में खट खट की आवाज सुनाई देती है। आपने कहा कि इस आवाज को 'ॐ' शब्द का ख्याल करो और बराबर सुनते रहो। एक लहमा (क्षण) भी याद से खाली न जाय। मैं इस शब्द का अभ्यास कई साल तक करता रहा और उसके बाद यह शब्द जिस्म के रोम रोम में सुनाई देने लगा। आपने कहा कि यह 'सुल्तान अज़कार' यानी जिक्रों (जापों) का बादशाह है। इसके बाद जज्ब दिन पर दिन बढ़ता रहा।

आध्यात्मिक विद्या की समाप्ति

एक दिन आप किसी को कुछ समझा रहे थे। मैं आपके पीछे बैठा हुआ था। जज्ब तारी था (प्रेमावेश हो रहा था)। आँखों से आंसू जारी ने मैं आनन्द के सागर में गोते लगा रहा था। एक अजीब हालत थी। आपने पीछे मुड़कर देखा और कहा—"यही अव्वल (आदि) है और यही आखीर (अन्त) है। इसके बाद फिर आध्यात्म विद्या की शिक्षा के बारे में नहीं कहा। निर्वाण के कुछ दिन पूर्व वे सिकन्द्राबाद पधारे थे। एक दिन शामकेवक्त सैर करके

Scanned by CamScanner

वापिस आये, मुझको अपने सामने बैठा लिया और कहने लगे—हम तुमको तशखीश (रोग निदान) देते हैं। तुम्हारी तशख़ीश कभी ग़लत नहीं होगी लेकिन तशखीश करते वक्त हमेशा शुबह (संशय) से काम लेना, वर्ना तुमने अगर किसी बीमारी का नाम तहक़ीक (निश्चय) के साथ ले दिया तो अगर वह बीमारी न भी होगी तो हो जायेगी। तुम्हारा मुक़ाम महामाया का है जो मुँह से निकलेगा सच हो जायेगा और मेरा मुक़ाम रूहानी है।

यह कहने के बाद वे कुछ देर के लिए चुप हो गये और मुझसे कहा—मैं तुम्हें ग़ायबाना (अज्ञात रूप से) तालीम देता रहता हूं, क्या तुमने कुछ महसूस किया है? मैंने निवेदन किया—"सोने की दशा में या संध्या करते समय में यह देखता हूं कि आप कुछ कह रहे हैं और मैं सुन रहा हूँ लेकिन क्या कह रहे हैं यह याद नहीं रहता।" आपने कहा—"यही तालीम हैं जो मैंने तुम्हें दी है अगर तुम कोशिश करोगे तो वह खुलेगी जिससे औरों को भी फायदा होगा। अगर मेहनत न करोगे तो यह दबी पड़ी रहेगी, लेकिन तालीम तुम तक पहुंच गई।"

इसके कुछ मास पूर्व सन् १९३० ई० में मैं आपके साथ देहली की एक सराय में ठहरा हुआ था। रात को स्वप्न में देखा कि प्रकाश का एक अथाह समुद्र है जिसमें नूर ही नूर है, किनारे का कहीं पता नहीं चलता। मैं उसमें डुबकियां लगा रहा हूं और एक अजीब आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ। सवेरा होने पर मैंने आपसे रात की हालत निवेदन की। आपने कहा—यह ब्रह्माण्ड का दृश्य हूँ। (मुझे निश्चय याद नहीं कि उन्होंने यही कहा था या और कुछ) लेकिन कोई बात पूरी समझ में नहीं आई।

इसके बाद एक दृश्य खुली आंखों देखा एक प्रकाश का समूह है

Scanned by CamScanner

जिसकी तरफ मैं खिचा जा रहा हूं और वह मुझे अपने अन्दर जज़्ब (शोषण) किये लेता है मुझे बड़ा आनन्द और प्रेम अनुभव हुआ। ऐसा लगाकि मुझे अबतक जो प्रेम अपने गुरुदेव (लालाजी साहब) के चरणों में था उससे सहस्त्रों गुना अधिक उस प्रकाश से था और जो आनन्द उनके पास बैठनेसे अनुभव होता था उससे हजारोंसे गुना उस प्रकाश की मौजूदगी में होता था। मुझे ऐसे लगता था जैसे यह प्रकाश ही मेरा असली प्रियतम है और लालाजी साहब से प्रेम मैंने इसी प्रियतम को प्राप्त करने के लिये किया था। उस समय केवल एक ही इच्छा थी कि शरीर टूट जाय और मेरी आत्मा उस नूर में समा जाय।

उन्होंने पूछा—"क्या देख रहे हो ?"

मैंने अपनी हालत निवेदन कर दी। आपने कहा—जो तुमने देखा, सत्य है और जो ख्याल किया और वह भी सही है। यही तुम्हारी असल और यही तुम्हारा असली प्रियतम है तुमको चाहिये कि तुम अपने आपको इसमें फ़ना (लय) कर दो। अगर मैं इस हालत को क़ायम रखता हूं तो तुम्हारा शरीर इसको बरदाशत नहीं कर सकेगा और मौत हो जायेगी।

मुझे उस समय यही आश्चर्य था कि जब फ़कीरों को इस चीज़ के दर्शन हर समय होते रहते हैं तो वे जीवित कैसे रहते हैं ?

महात्मा रामचन्द्रजी मौअजाजात यानि सिद्धि शक्तिके क़ायल न थे और कहा करते थे कि यह सब चीज़ें दुनियाँ में फँसाने वाली हैं। इसलिये आपने इसकी शिक्षा नहीं दी यद्यपि आप इस विद्या में अत्यन्त निपुण थे। जब कोई व्यक्ति आपकी सेवा में तावीज़ लिखवाने आता तो जहां तक होता टालते और मजबूर हो जानेपर लिख देते थे। कभी कोई व्यक्ति बीमार के लिये पानी पढ़वाने

Scanned by CamScanner

आता तो पढ़ देते। इन्कार नहीं करते, लेकिन बादको कहते थे कि अगर परमात्मा को किसी रोगी को आरोग्य करना मंजूर नहीं होता है तो हम मन्त्र को भूल जाते हैं। एक बार सेवक से कहा कि आओ तुमको तावीज़ हैजा, प्लेग और चेचक का बदला दें। फिर खुद ही कहा कि तुम इन झगड़ों में मत पड़ो, फिर बतला देंगे जब कोई अभ्यासी सेवा में आकर अपनी हालत बतलाता, जिससे जान पड़ता कि उसको कोई सिद्धि शक्ति आ गई है या कुछ अहंकार हो गया है तो आप उसको शोषण कर लेते। अक्सर ऐसा हुआ कि सेवक ने अपनी हालत निवेदन की जिसमें किसी सिद्धि का वर्णन किया। उसके बाद फिर वह हालत नसीब नहीं हुई। आप कहा करते थे कि जब तक सालिक (साधक) मंज़िले मक़सूद (धुर पद) तक न पहुंच जाय यानी उसे परमात्मा का अनुभव न हो जाय और इखलाक़ पुख़्ता न हो जाय (रहनी सहनी न सुधर जाय) उसको सिद्धियों व चमत्कारों से अलग रखना चाहिये और जब सालिक (साधक) मंज़िले मक़सूद (धुर पद) पर पहुंच जाता है उसके तमाम कर्म ही चमत्कार बन जाते हैं।

आप कहा करते थे कि फ़क़ीर के लिये इससे अधिक और चमत्कार क्या हो सकता है कि वह एक जानवर को आदमी बना देता है। जिस आदमी का इख़लाक़ (रहनी सहनी) ठीक न हो वह जानवर है और इख़लाक़ ठीक हो जाने पर ही इन्सान-इन्सान कहलाने का हक़ रखता है। आपका व्यक्तित्व ही स्वयं एक चमत्कार था। जो भी आपकी सेवा में आया, चाहे वह मनुष्य था या पशु, पुरुष था या स्त्री, वृद्ध या बालक, बदमाश या नेक, आपकी संगति के प्रभाव से न बच सका। जो कोई भी आपके चरणोंमें बैठता वह यही कहता था कि एक प्रकार की शान्ति का अनुभव होता है। तबियत उठने की नहीं चाहती सफ़र की सब थकावट आपकी सेवा

Scanned by CamScanner

में पहुंचते ही जाती रहती थी। हरेक को गर्व था कि आप सबसे अधिक उसी को प्रेम करते हैं और बड़े दयालु हैं जो एक बार भी संयोगवंश आपके सत्संग में आ गया वह सदा के लिये आपके व्यक्तित्व से प्रभावित हो गया। आप अक्सर कहा करते थे—

'कदग़न है यही ग़ैर कोई आने न पाये।
गर बेख़बर आ जाय तो जाने न पाये॥"

अर्थ—या तो कोई ग़ैर आदमी अपनी सौहबतमें आने न पाये और अगर भूल से आ जाय तो फिर जाने न पाये।

अगर कहीं यह कहावत बिल्कुल ठीक उतरती थी तो आपकी सौहबत में। जो व्यक्ति अभ्यास भी नहीं करते थे शौक़िया जा बैठते थे, वे थोड़े दिनों के सत्संग के प्रभाव से अपनी रहनी सहनी में उन्नति अनुभव करते थे और आत्मिक लाभ जो वर्षोंके अभ्यास से प्राप्त नहीं हो सकता था वह आपके थोड़े से दिनों के सत्संग से महसूस होने लगता था। आप किसी से किसी बुरी आदत को छोड़ने को नहीं कहा करते थे बल्कि आपके सत्संग के प्रभाव से वह बुरी आदत स्वयँ छूट जाती थी।

एक बार आपने सेवक से कहा कि अभी तक हमारे खानदान की निस्बत (आत्मिक सम्बम्ध) टूटी नहीं है और बड़ी मज़बूत है क्योंकि जो वाक़यात पेश्वाये अव्वल (सर्व प्रथम गुरु) पर गुज़रे वह सब मुझ पर गुज़र रहे हैं और वही इख़लाक़ (चरित्र) खुद-बखुद बनता चला जा रहा है।

आप कहा करते थे कि आग के पास बैठने से गर्मी महसूस होती है, बर्फ़ के सास बैठने से सर्दी महसूस होती है। इखलाक़ की तकमील यह है कि ऐसे शख्स के पास बैठने से खुद-बखुद इखलाक़ दुरुस्त हो जाता है।

Scanned by CamScanner

कश्फ़ो-करामात (सिद्धि शक्ति और चमत्कार) जिसको साधारण लोग आश्चर्य की दृष्टि से देखते हैं, कोई खिलाफ़ क़ानून बात नहीं हैं बल्कि बिल्कुल क़ानून के मुताबिक़ है। क्योंकि आदमी उन क़ानूनों को नहीं जानते जिनके कारण अभ्यासीको रिद्धि सिद्धि आ जाती है इसलिये वह लोग इनको आश्चर्य की दृष्टि से देखते हैं मनुष्य शरीर कई शरीरों की मिलौनी है, स्थूल शरीर (अन्नमय कोष), लिंग शरीर (विज्ञानमय कोष), आनन्द का शरीर और आत्मा। जब मनुष्य विभिन्न अभ्यास से इन शरीरों की शक्ति के केन्द्र (Nervous plexus) को जगाकर अपने वश में कर लेता है तो ऐसे काम कर सकता है जिनको आदमी नहीं कर सकते और उन्ही को सिद्धि या करामात कहते हैं। जिसने शरीर की शक्तियों को जगा लिया और उनको क़ाबू में कर लिया वह शरीर से बड़े-से बड़े काम ले सकता है। इसी तरह जिसने प्राण, मन, बुद्धि आदि शक्तियों के केन्द्र को जगाकर अपने क़ाबू में कर लिया उसी प्रकार की सिद्धि उसने प्राप्त कर ली। परन्तु जिसने सारे शरीर की शक्तियों को जगाकर आत्मा का अभ्यास करके आत्माकी जगी हुई शक्तियों को उभार लिया उसका जीवन प्रत्यक्ष चमत्कार हो जाता है। वह गुणों से परे हो जाता है और सारी शक्तियाँ उसकी मातहती में आ जाती हैं। वह विशेष इरादा लेकर कोई काम नहीं करता, उसके सब इरादे परमात्मा की मर्ज़ी के आधीन रहते हैं जो उसके ख़्याल में आता है, खुद बखुद हो जाता है। ऐसे महापुरुष किसी सिद्धि शक्ति का प्रयोग नहीं करते बल्कि जो काम भी वे करते हैं वह चमत्कार और करामात ही है क्योंकि साधारण आदमी उनको कभी नहीं कर सकता है। महात्मा जी का जी न भी ऐसा ही एक चमत्कारिक जीवन था।

Scanned by CamScanner

घटनायें

१—स्कूल लीविंग क्लास के इम्तहान में मेरा ज्यौमेट्री का पर्चा बहुत खराब हो गया था। मुझको परेशान देखकर परेशानी का कारण पूछा। कहने लगे—"बरखुरदार! परेशान मत हो। तुमको आम खानेसे ग़रज़ हैं या पेड़ गिनने से तुम पासहो जाओगे।' और फिर ऐसा ही हुआ भी मैं आशा के विरुद्ध इम्तहान में पास हुआ।

२—साइन्स का प्रैक्टिकल का इम्तहान था। मैंने यह विषय नवें दरजे में फ़ारसी छोड़कर ले लिया था इसलिये इस विषय में कमज़ोर था और परेशान था। आपने कहा—"परेशान न हो। जिस वक्त तुम इम्तहान दो यह ख्याल पुख़्ता बांध लेना कि तुम मौजूद नहीं हो बल्कि तुम्हारी जगह मैं इम्तहान देरहा हूँ।" चुनांचे मैंने ऐसा ही किया। सात सवालों तक यह ख़्याल बराबर क़ायम रहा। बाक़ी दो सवालों पर घबराहट में यह ख़्याल जाता रहा। अतः सात सवाल बिल्कुल ठीक थे यद्यपि उनमें से दो सवाल कोर्स में से न थे और बाक़ी दो सवाल ग़लत हो गये थे तो भी मैं उस इम्तहान में अपनी क्लास में फर्स्ट था।

३—प्रैक्टिकल साइन्स के इम्तहान के एक दिन पहले क्रिकेट खेलते समय पांव में सख्त चोट आ गई। घर पर आया पिता जी बहुत नाराज़ हुए कि इम्तहान के दिनों में भी खेल बन्द नहीं होता वहां से परेशान होकर आपकी सेवा में हाज़िर हुआ। मालूम हुआ कि आप कानपुर गये हुए हैं तबियत बहुत दुखी हुई। उसी हालत में बोर्डिंग हाऊस आया जहां मैं रहता था गर्म पानी से जखम सेक रहा था कि सुपरिन्टैन्डेन्ट बोर्डिंग हाऊस आ गये। बहुत नाराज़ हुए कि स्कूल खराब कर रहे हो। मैं अपनी तकलीफ़ और बेवसी

Scanned by CamScanner

की हालत में रोने लगा और आपको याद किया थोड़ी देर में दर्द जाता रहा और गहरी नींद आ गई। सुबह आंख खुलने पर देख कर ताज्जुब हुआ कि दर्द बिल्कुल ही ग़ायब था और ज़ख्म बहुत अच्छा था। आप दो तीन रोज़ के बाद फ़तहगढ़ आ गये। जब मैं सेवा में गया तो आपने पूछा कि तुम उस रोज़ इतने परेशान क्यों थे? तुम बराबर हमारे सामने खड़े थे और नहीं हटते थे। जब हमने तुम्हारी तकलीफ़ को सल्ब किया (खेंच लिया) तब हम दूसरा काम कर सके।

इम्तहान के बाद आपने और विद्यार्थियों से पूछा कि तुमने अमुक प्रश्न का क्या जवाब दिया? लेकिन मुझसे कुछ नहीं पूछा। मुझको यह देखकर दुःख हुआ। मुझको दुःखी देखकर कहने लगे—'बरखुरदार! दुःखी क्यों होते हो? तुमसे मैं क्या पूछता तुम्हारा पर्चा तो मैंने खुद लिखा है और यह जबाब दिया है।" वह अक्षरश वही था जो मैंने पर्चे में लिखा था।

४—एक समय की बात है कि गर्मीका मौसम था सेवक शाम को एक दोस्त के साथ गंगाजी के किनारे टहलने केलिये गया था। देर हो गई रात अन्धेरी थी चारों तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा था। कुछ भी दिखाई नहीं देता था रास्ते का पता नहीं चलता था एक पगडण्डी दिखाई दी। आगे मैं था और पीछे मेरा दोस्त पगडण्डी जहाँ खत्म होती थी वहां जाकर मैं एक तरफ़ को कूद गया। आगे जाकर क्या देखता हूँ कि पगडण्डी के आखिर में एक बड़ा कुआं था और वह पगडण्डी नहीं थी बल्कि नाली थी। परमात्मा को धन्यवाद दिया कि अगर एक तरफ़ को न कूदते और सामने कूदते तो कुएं में ही जाते।

वापिसी पर आपकी सेवा में गया उन्होने मुझसे पूछा—कहां

Scanned by CamScanner

थे ?" मैंने निवेदन किया कि टहलने गया था। आपने कहा कि तुम बहुत बेपरवाह हो मुझे तुम्हारे साथ हर वक्त रहना पड़ता है अगर तुम कुएं में गिर जाते तो उस वक्त तुम्हें कौन निकालता ? ऐसी बेपरवाही ठीक नहीं है सावधानी से रहना चाहिये।

७—एक समय की बात है कि सेवक ओवरसियरी के इम्तहान की तैयारी कररहा था। तबियत काफी (Coffee) पीने को चाही चूंकि कॉफी का प्रयोग घर में नहीं होता था, बाज़ार से मंगवाकर तैयार करवाई। जब तैयार होकर आई, यह ख़्याल हुआकि आपकी सेवा में भेंट करूं। जब मैं कॉफी लेकर सेवा में उपस्थित हुआ तो आपने कहा—"कॉफी ले आये मेरी तबियत कॉफी पीने को चाहती थी तुमको हुक्म देकर तैयार करवाई है।"

६—एक समय की बात है कि आपने स्वप्नमें दर्शन दिये और कहा कि जितना रुपया तुम्हारे पास हो अमुक जगह भेज दो। और मैंने उनका पालन करदिया आपने उत्तर दिया—"तुमने ठीक किया, यह हमारा ही हुक्म था।"

७—मुझको उपन्यास पढ़ने का बहुत शौक़ था और दिन में काम छोड़कर मुसवातिर पढ़ता ही रहता था एक बार महात्मा जी के साथ सफ़र में था। दोपहर को जब आप सो गये मुझको मौक़ा मिल गया और मैं नावल पढ़ने लगा। देखा तो आप ग़ौर से मुझको देख रहे हैं आपने पूछा—"क्या पढ़ रहे हो ?" मैंने निवेदन किया कि खुफ़िया पुलिस (Detective) का उपन्यास है। आप ख़ामोश हो गये मैंने किताब बन्द कर दी ओर आँखें बन्द कर लीं। क्या देखता हूँ कि आपके साथ सफ़र में हूं, नावल पढ़ रहा हूँ। आपने देखा और नावल मेरे हाथ से लेकर फाड़ डाला और रेल गाड़ी के

Scanned by CamScanner

बाहर फेंक दिया है। इस तरह मुझको उस बुरी आदत से छुटकारा मिल गया।

८—एक समय की बात हैं कि सेवक पूज्य गुरुदेव परमसन्त श्री रामचन्द्रजी महाराज के साथ मोटर में कानपुर से लखनऊ जा रहा था। अगली सीट पर मैं और डा० श्यामलाल जी बैठे थे और पिछली सीट पर आप और माता जी। मैं गाड़ी चला रहा था। जब लखनऊ निकट आया मैंने गाड़ी हल्की की ताकि मेरी जगह डा० श्यामलाल जी ले लें, क्योंकि मुझे चलाने का अभ्यास कम था आपने पूछा कि गाड़ी क्यों हल्की की ? डा० साहब ने उत्तर दिया लखनऊ पास आ गया है, भाई साहब को चलाने का अभ्यास कम है। आपने कहा—"क्या गाड़ी तुम दोनों चला रहे हो ?" आगे चलकर जब अमीनाबाद में से गुज़र रहे थे और गाड़ी दो बैल गाड़ियों के बीच में से निकल रही थी अचानक एक दूसरी मोटर गली में से तेजी के साथ निकली। दुर्घटना का होना निश्चित था आपने कहा—हैं यह क्या ? गाड़ी का इन्जन एकदम फेल हो गया दुर्घटना होते-होते बच गई।

९—अपनी बीमारी के इलाज के लिये वे लखनऊ गये हुए थे वहां शाम के वक्त मकान में एक ऊँचे चबूतरे पर आप खाट पर लेटे हुए थे, जहां से बहुत दूर तक के आदमी दिखाई देते थे। मैं पास ही बैठा हुआ था बहुत दूर एक पेड़ के नीचे एक आदमी और स्त्री बातें कर रहे थे। आपने पूछा—क्या तुम उस आदमी और स्त्री को बातें करते देख रहे हो ?" मैंने निवेदन किया—'देखता हूँ।" आपने कहा--मैं उनकी तमाम बातें सुन रहा हूँ। क्या तुम बता सकते हो कि ऐसा क्यों है ?" मैंने निवेदन किया कि शायद आप इच्छा शक्ति से वहां मौजूद हैं। आप चुप हो गये जिससे मैंने अनुमान लगाया कि मेरा जवाब ठीक न था।

Scanned by CamScanner

१०—एक समय की बात है कि सेवक उनके साथ रेल में सफ़र कर रहा था। सामान ऊपर की बर्थ पर रखा हुआ था। अचानक मेरे मनमें विचार आया कि सामान ठीक तरह नहीं रखा हुआ है। मैंने सामान ठीक करके रख दिया। थोड़ी देर बाद फिर वही विचार पैदा हुआ और सामान फिर दूसरे तरीके से लगा दिया आप चुपचाप देखते रहे। जब सामान रख चुका तो पूछा कि तुमने यह सामान दो दफ़ा क्यों उल्टा पल्टा ? मैंने निवेदन किया कि मैं स्वयं नहीं जानता कि मैंने ऐसा क्यों किया ? मुझको यह ख़्याल पैदा हुआ था कि सामान ठीक तरह रखा हुआ नहीं है और मैंने दूसरे तरीक़े से रख दिया। आपने कहा—"यह तुमने नहीं किया बल्कि हमने करवाया है हम सोचते जाते थे और तुम करते जाते थे जब तक ख़्यालातमें ऐसी यगानियत (एकभाव) और समर्पणता नहीं आती यानी एक के ख़्याल को दूसरा क़बूल नहीं करता, पूरी तालीम नहीं उतरती।

११—एक जिज्ञासु जो देहली में रहते थे, आपसे मिलने के बहुत इच्छुक थे मैं उनके साथ फ़तहगढ़ में आपकी सेवामें उपस्थित हुआ। शाम का वक्त था सतसंग हो रहा था और सब भाई आंखें बन्द किये आनन्द का अनुभव कर रहे थे। मैंने उनको सतसंग में बैठा दिया और स्वयँ दूसरे रास्ते से महात्मा जी के पास जा बैठा थोड़ी देर बाद आपने सतसंग बन्द कर दिया और मुझसे कहा—"श्रीकृष्ण तुम आ गये ? मुझको सुबह से तुम्हारी याद आ रही थी और तबियत देखने को चाहती थी अच्छा किया जो आ गये।" थोड़ी देर बाद पूछा कि "फ़ैज की क्या हालत थी ?" मैंने निवेदन किया—"फ़ैज खूब आरहा था और तबियत खूब लग रही थी और सब आनन्दमें मस्त थे। आपने कहा—"यह ठीक है लेकिन बताओ फिर हमने सतसंग क्यों बन्द कर दिया ? मैंने अज्ञानता प्रकट की

Scanned by CamScanner

आपने कहा—"एक नया आदमी अभी सत्संग में आकर बैठा है। उसके विचार पवित्र नहीं है। ऐसी हालत में सब अभ्यासियों के मन पर उनके ख़्याल का असर पड़ रहा था जिससे अन्देशा था कि औरों का चित्त अपवित्र न हो जाये।" सत्संग के बाद मैंने प्रार्थना की कि उन सज्जन को अपनी शरण में ले लें। आपने कहा—आरम्भ में जब तुम मेरे पास आये थे उस वक्त मेरी जवानी थी और मेहनत कर सकता था और तुम्हारे साथ मेहनत की, लेकिन अब बुढ़ापा है वह मेहनत नहीं हो सकती। अब तुम्हारा काम है कि मेहनत करो और लोगों को बनाओ। जब तैयार करके लाओगे तो रंदा और रोग़न मैं कर दूंगा।" फिर उन सज्जन को बुलवाया और कहा—"अभी तुम्हारा वक्त शुरू करने का नहीं आया है, मैं जब देहली आऊं उस वक्त मिलना।'

१२—सिकन्द्राबादके रहने वाले एक सज्जन जो मेरे मेहरबानों में से थे, रोज़गार से अलहदा हो गये आपसे मिलने के इच्छुक थे। मुझसे एक पत्र लेकर फ़तहगढ़ गये। पत्र में मैंने निवेदन किया था कि ऊनके हाल पर रहम करें और अपनी शरण में ले लें। जब वे सज्जन महात्मा जी के पास पहुंचे, दोपहर का समय था। जैसा सादा भोजन महात्माजी के घर बनता था उन्हें भी परोस करदिया गया। लेकिन वे सज्जन बहुत खुशख़ोर (अच्छा खाने वाले) थे। उन्हें वह भोजन पसन्द नहीं आया और भूखे ही उठ गये। बाज़ार जाकर खाना खा लिया और जो रुपया वापिसी किराये के लिये रखा था उसमें से भी कुछ ख़र्च कर लिया। जब एकान्त हुआ तो महात्मा जी ने उनसे कहा—इस वक्त तुम बहुत परेशान हो। अभ्यास में तबियत नहीं लगेगी। जब रोजग़ार से लग जाओ तब आना। मैं दुआ करता हूं कि तुमको ज़ल्द रोज़गार मिल जाये। और अगर बुरा न मानो तो एक बात कह दूं जो हालत ज़ाहिरा

Scanned by CamScanner

(प्रत्यक्ष) तुम्हारी है वह एक बेरोजग़ार आदमी की नहीं है बल्कि एक रईस की है। पचास-साठ रुपये की घड़ी तुमने बाँध रखी है, दस पन्द्रह रुपये का जूता है, छः सात रुपये की टोपी है और बाक़ी कपड़े भी क़ीमती हैं। ऐसा नहीं करना चाहिये। जिस हालत में परमात्मा ने रखा है उसी में रहना चाहिये वर्ना तकलीफ़ होगी।" चलते वक्त वापिसी किराये के लिये रुपये देने लगे। उन्होंने लेने से इनकार किया। आपने कहा—ले लो तकल्लुफ़ न करो। तुमको ज़रूरत है और मेरे पास मौजूद हैं इसके बाद जब तक कि उनको रोज़गार न मिला, महात्मा जी बराबर हर पत्र में उनके विषय में पूछते रहे।

१३—एक समय की बात है कुछ जिज्ञासु आपकी सेवा में आये और कुछ दिन बाद ही उपदेश के लिये आग्रह करने लगे। आपने उनमें से दो को अपने पास बुलाकर सन्त-मत के सिद्धान्त समझा दिये। उन लोगों को इसी से तसल्ली हो गई और इसी से खुश हो गये क्योंकि वे मौखिक शिक्षा ही को उपदेश समझते थे। तीसरे सज्जन को जो वास्तव में संस्कारी थे एकान्त में बुलाकर समझा दिया कि तुम्हारा हिस्सा मेरे पास नहीं है अमुक महापुरुष के पास है और वहां चले जाओ। उन सज्जन ने ऐसा ही किया वे वे दयालबाग़, आगरा में परमसन्त साहिब जी महाराज की सेवा में गये और उपदेश लिया अभ्यास करके अपना जीवन सफल किया।

१४-एक बार दो युवक विद्यार्थी जो ब्रह्म-विद्या सीखने के बड़े इच्छुक मालूम होते थे आपकी सेवा में आये और अपनी इच्छा प्रकट की। आपने बड़ी खुशी से तालीम देनी शुरू की लड़के बड़े समझदार और प्रखर बुद्धि के थे। दो तीन दिन के बाद महात्मा जी ने सेवक से कहा—"तुम तवज्जोह दो" और आप अलहदा

Scanned by CamScanner

हो गये। शाम को एकान्त में मुझसे कहाकि ये दोनों लड़के गर्मदल (Revolutionary Party) के हैं। इसके नाम वारन्ट गिरफ्तारी हैं, रूपोश हैं और छिपने के लिये यह स्वांग रचा है। अफ़सोस, कितने अच्छे लड़के हैं और कैसे ग़लत रास्ते पर हैं। काश, अगर कुछ दिन के सत्संग में रहते तो इनके ख़्याल और हालात बदल जाते। लेकिन ये यहाँ ठहरेंगे नहीं। ऐसा ही हुआ। दो चार दिन बाद दोनों लड़के चले गये।

१५—एक बार महात्मा जी एक मुसलमान सूफ़ी से मिलने गये। सेवक भी उनके साथ था। वापिसी पर कहने लगे कि सूफ़ी साहब का कथन है कि जब तक मुसलमानी धर्मशास्त्र की पाबन्दी न की जायेगी (जैसे नुमाज़ पढ़ना, रोज़ा रखना, इत्यादि) उस समय तक ईमान क़ायम नहीं रह सकता और न ही बुज़ुर्गान (महापुरुषों) से फ़ैज़याबी (लाभ) हो सकती है। थोड़ी देरके बाद फिर आपने कहा—धर्मशास्त्र की पाबन्दी है लेकिन ये ज़रूरी नहीं है कि मुसलमानी शरह ही की पाबन्दी की जाय और यही तालीम गुरुदेव ने हमको दी थी और न ही इस उम्रमें हमसे ऐसा हो सकता है। **हम तो सिर्फ़ अपने दोस्त को देखते रहे और यही हमारा जिन्दगी भर का तोशा है। जब आक़बत (परलोक) में हमसे पूछा जायेगा कि तुम क्या करते रहे ? तो हम तो सिर्फ़ अपने दोस्त को तस्वीर पेश कर देंगे और बस।"**

१६—एक बार महात्माजी एक हिन्दू सन्यासीसे मिलने गये। सेवक भी साथ था जाड़े के दिन थे और सवेरे का समय था। चार मील की दूरी जब तय कर चुके तो एक बहुत ही सुहावना स्थान मिला। गंगा जी का किनारा था एक जगह चारों तरफ़ बड़े-बड़े पेड़ थे ऊनके बीच में एक सुन्दर स्वच्छ जगह थी।

Scanned by CamScanner

नितान्त शान्ति बरस रही थी। चुपचाप बैठने और आंखें बन्द करके ध्यान करने को तबियत चाहती थी। थोड़ी देर तक सब वहां बैठे रहे। महात्माजी ने कहा—"इस जगह च्यवन ऋषि ने तपस्या की थी। यहां की धरती में यह प्रभाव हैं कि तबियत स्वयँ ध्यान करने को चाहती है और शान्ति बरस रही है।" इसके बाद उन हिन्दू सन्यासी की कुटी पर पहुंचे। वे बैठे हुए थे लेकिन उन्होंने हम लोगों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं दिया। मैंने निवेदन किया कि गुरुदेव आपसे मिलने आये हैं। इस पर वे अन्य सबके साथ बाहर आकर बैठ गये और गुरुदेव से शिक्षा के विषय में बातचीत आरम्भ कर दी। गुरुदेव उत्तर देते रहे और थोड़ी देर के बाद ही आज्ञा लेकर वापिस चले आये। रास्ते में आप मुझ पर नाराज़ हुए। कहने लगे—"हम जिज्ञासु बनकर आये थे न कि गुरु बनकर तुम्हारे इस कहने से हमारे आने का मन्शा खत्म हो गया और स्वामी जी बजाय कुछ तालीम देने और फैज़याब करने के, हमारा इम्तहान लेने लगे। अगर वे अन्तर का हाल जानने वाले (साहिबे बातिन) होते तो खुद समझ लेते और यदि नहीं थे तो हम गुरुआई जताने नहीं आये थे। तुम्हारे कहने से ये चिढ़ गये और यहाँ आने का कोई नतीजा नहीं हुआ।"

१७—महात्माजी को आदत थी कि सबको भोजन कराने के बाद स्वयँ भोजन करते थे और वही खाना खाते थे जो रसोई में सबके लिये बनता था। एक बार भण्डारे के अवसर पर कुछ लोग खाना खा चुके थे और कुछ लोग बाक़ी थे। आपने मुझसे बुलाकर पूछा—"क्या अमुक सज्जन ने खाना खा लिया।" मैंने दिवेदन किया—"अभी नहीं।" फिर दूसरे सज्जन के विषय में पूछा। मैंने फिर निवेदन किया कि उन्होंने भी नहीं खाया है। आपने पूछा—"क्या तुमने खा लिया ? मैंने कहा कि मैंने खा लिया। आप मौन

Scanned by CamScanner

हो गये, चेहरा तमतमा गया, जिससे मालूम होता था कि बहुत नाराज़ हैं और मेरी तरफ से मुँह फेर लिया। इससे मुझको आयन्दा के लिये नसीहत हो गई।

१८—जब सब सो जाते थे तब वे सोते थे और विशेष दशाओं के अतिरिक्त सबके साथ ही सोते थे। एक बार रात के बारह बजे जब सब सो गये, वे सोने के लिये आये। कहीं जगह न थी। मैं जाग रहा था। मैंने अपनी जगह से उठना चाहा तो उन्होंने इशारा किया कि लेटे रहो और मेरे जूतों को हटाकर दरी को ठीक किया। वे उस जगह लेट रहे। रात को तीन बजे सर्दी के कारण में सिकुड़ा हुआ पड़ा था। उन्होंने अपनी चादर मेरे ऊपर डाल दी और स्वयँ अन्दर कोठरी में चले गये। यह घटना दूसरे एक भाई ने सुनाई जो जाग रहा था और यह सब देख रहा था।

१९—एक बार किसी बात पर रुष्ट हो गये। पत्र आया लिखा था—'मेरी तबियत ख़राब है लेकिन मैं नहीं चाहता कि तुम आओ। मैं तुम्हारी शक्ल देखना नहीं चाहता।" दूसरा पत्र उन्होंने एक अन्य सज्जन को लिखा जिसमें लिखा था कि मैं बीमार हूँ, मुझसे मिल जाओ। दूसरे दिन मोटर से हम दोनों फ़तहगढ़ को चल दिये। जून का महीना था, बड़ी गर्मी थी। दोपहर के लगभग एक बजे फ़तहगढ़ पहुंचे। मेरे साथी महात्मा जी के घर में गये। मैं बाहर ही रहा क्योंकि मेरे लिये आज्ञा नहीं थी। तीन बजे के लगभग महात्मा जी ने उन सज्जन से पूछा—"क्या श्रीकृष्ण भी आया है? जब मालूम हुआ कि सेवक भी आया है तब वे बाहर पधारे और बोले—"अन्दर क्यों नहीं आते? बाहर क्यों खड़े हो?" और तमाम नाराज़गी जाती रही।

२०—एक बार मैं महात्मा जी के दर्शनों के लिये फ़तहगढ़ जा

Scanned by CamScanner

रहा था। गर्मी का मौसम था और रात का समय। मुझको क़ै और दस्त शुरू हो गये। हालत बहुत ख़राब होगई और जान पड़ता था कि आख़िरी वक़्त है। कमज़ोरी की हालत में सीट के नीचे पड़ा रहा, तमाम कपड़े गन्दगी से सने हुए थे। शिकोहाबाद स्टेशन पर मालूम होने पर गाड़ी से उतार दिया गया। डाक्टर बुलाये गये। सुबह तक हालत कुछ ठीक हुई और मैं नौ बजेके लगभग फ़तहगढ़ पहुंचा। डाक्टर····· मुझसे पहले पहुंचे हुए थे और उनके पास सोये हुए थे। उन्होंने कहाकि रात को ग्यारह बारह बजेके लगभग महात्माजी अचानक सोते से जाग पड़े। बड़े परेशान थे और उस परेशानी में छत पर जल्दी-जल्दी टहलने लगे। उस परेशानी की दशा में माताजी ने पूछा कि आप क्योंपरेशान हैं? उत्तर दिया—"तुम मेरी परेशानी की वजह नहीं समझ सकतीं।" इसी तरह सवेरे तक छत पर बराबर टहलते रहे। जब मैं फ़तहगढ़ पहुंचा तो आपने डाक्टर साहब से कहा कि श्रीकृष्ण बहुत बीमार है। इसको ले जाकर खाट पर लिटा दो और खाने को कुछ न देना।

२१—एक बार महात्माजी के साले साहब (बाबू अयोध्यानाथ) ने सुझाव दिया कि फ़तहगढ़ में सत्संगी भाई एक सोसाइटी बनाकर अपने-अपने रहने के लिये घर बनवायें और सत्संग की स्थापना हो इत्यादि इत्यादि। मैंने इसका विरोध किया। वह योजना रद्द कर दी गई। बाद को मुझको मालूम हुआ कि यह योजना वास्तव में आप की ही थी। मुझको बहुत दुःख हुआ। फ़तहगढ़ में उनकी सेवा में जाकर क्षमा चाही और निवेदन किया कि अगर मुझको मालूम होता कि योजना आपकी है तो कभी विरोध न करता। उन्होंने कहा—"क्या तुमसे भी ज़बान से कहने की ज़रूरत है? तुमने हमेशा वही किया जो हमारे ख़्याल में आया। क्या वजह है इस बार तुमने हमारे ख़्याल को क़बूल नहीं किया। ऐसा मालूम होता है कि

Scanned by CamScanner

इन दिनों तुम्हारी तबियत दूसरी तरफ़ लगी हुई है और हमारे से हटी हुई है।" और बात भी ऐसी ही थी।

२२ एक बार डाक्टर चतुर्भुज सहाय जी का पत्र आया। उस में लिखा था कि मैं सेवा में आना चाहता हूं लेकिन कुछ कारण ऐसे हैं कि नहीं आ सकता। महात्माजी ने वह पत्र मुझको दिया और पूछा—"क्या बता सकते हो कि क्या कारण हो सकते हैं?" मैंने निवेदन किया कि मैं नहीं कह सकता। कहने लगे कि उनके पास रुपया नहीं है। अपनी मां (मेरी गुरु माता) से रुपया लेकर उनके पास भेज दो। जब रुपया भेजने जाने लगा, आपने पूछा "कितना रुपया ले जा रहे हो!" मैंने निवेदन किया कि पन्द्रह रुपये ले जा रहा हूं, दो रुपये घर में खर्च के लिये छोड़ दिये हैं आपने कहा, "वे दो रुपये भी भेज दो, हम क़र्ज़ लेकर गुज़ारा कर लेंगे।" मैंने जाकर अपनी गुरुमाता से वे शेष दो रुपये भी ले लिये और सारे रुपये डाक्टर चतुर्भुज सहाय जी को मनीआर्डर द्वारा भेज दिये।

अपनी गुरुमाता में मैंने दैवी गुण देखे थे। उन्होंने आजीवन महात्मा जी के साथ सहयोग किया। आर्थिक अथवा अन्य परिस्थितियों में सदा महात्मा जी का समर्थन करती थीं। उनके शिष्यों को वे पुत्रवत प्रेम करती थीं। महात्मा जी के निर्वाण के बाद भी आजीवन उन्होंने इसे निबाहा।

३२—एक बार मैं रात को फ़तहगढ़ पहुंचा। महात्माजी अन्दर कमरे में सो रहे थे। अन्दर जाने की आज्ञा नहीं थी क्योंकि मौलवी साहब (मुन्शी अब्दुलग़नी साहब) भी वहीं सो रहे थे। मुझको दर्शन की बड़ी इच्छा थी और मैं उसी इच्छा में सो गया। स्वप्न में देखा कि मैं कमरे के अन्दर गया हूं लेकिन महात्माजी पलंग पर नहीं हैं। बल्कि केवल प्रकाश ही प्रकाश है, शरीर कोई नहीं है। सवेरे को

Scanned by CamScanner

जो कुछ मैंने देखा निवेदन कर दिया। उन्होंने कहा—"तुमने सही देखा। मेरा शरीर तुम्हारा गुरु नहीं है बल्कि जो प्रकाश तुमने देखा वही तुम्हारा गुरु है।"

२४—कांग्रेस का आन्दोलन काज़माना था। कालेज के लड़के कालेज छोड़कर देश की सेवा के लिये आ रहे थे। मैं फोर्थईयर (4th year) में पढ़ता था। मैं भी कालेज छोड़कर घर आ गया ताकि देश की सेवा करूँ। घर में तमाम बड़े माराज़ थे और कहते थे कि अच्छा नहीं किया। महात्मा जी ने कोई नाराज़गी नहीं दिखाई बल्कि इसको अच्छा बताया। बाद को कई रोज़तक प्रोग्राम बनता रहा कि किस तरह काम शुरू किया जाय? एक दिन मुझसे पूछा कि काम हमारे साथ करोगे या अकेले। मैंने निवेदन किया कि आपके बग़ैर कैसे काम कर सकूँगा? आपने कहा कि हम भी जल्द काम छोड़ेंगे। दूसरे रोज़ कहने लगे कि हमारा काम छोड़ना ठीक नहीं है, दो महीने बाद छोड़ेंगे तब तुमको बुला लेंगे। इसी उम्मीद में मैं खुशी खुशी कालेज वापिस आ गया।

२६—एक बार घर में कुछ ऐसी घटनायें हुईं कि जिनके कारण मुझको मेडीकल कालेज छोड़ना पड़ा। जब वापिस आया, सभी रिश्तेदार परेशान थे। लेकिन आपने कुछ नहीं कहा और कहा भी तो यही कहा कि जब यह हालत है तब पढ़ना बेफ़ायदा है। दो-चार दिन बाद एक रोज़ वे टहलने जा रहे थे, मैं साथ था। आप परेशान थे। मैंने कारण पूछा। उन्होंने कहा—"हमारी ज़िन्दगी का भरोसा नहीं, कब मौत आ जाय। हमारा ख़्याल था कि हमारे मरनेके बाद तुम घर की देखभाल करोगे, अब तुमने कालेज छोड़ दिया, अपने ही घर की देखभाल नहीं कर सकोगे, हमारे घरकी देखभाल क्या

Scanned by CamScanner

करोगे और वही वजह परेशानी की है।" मैंने निवेदन किया कि क्या मैं फिर वापिस चला जाऊँ ? आपने कहा—"हम यही चाहते हैं।" और मैं वापिस आ गया।

२६—एक बार महात्मा जी आगरे पधारे थे। टहलनेके लिये दयालबाग़ की तरफ़ गये। रास्ते में एक क़ब्रिस्तान था और उसी जगहएक बुजुर्ग साहब का मज़ार (समाधि) थी। आप अकेले उस मज़ार पर गये। एक घन्टे के बाद वापिस आये और कहने लगे—"यह अपने वक़्त के एक बड़े बुज़ुर्ग थे। माथुर कायस्थ थे लेकिन मुसलमान हो गये थे। जो हालत दस वर्ष पहले जज़्ब की थी वही आज भी है। क़रीब दस वर्ष हुए मैं उर्स (भण्डारे) पर आया था लोगों पर जज़्ब तारी (भावावेश) था। मुझको इसमें विश्वास नहीं था और इम्तहान लेने के ख्याल ते जैसे ही मैंने कठड़े में क़दम रखा मेरी हालत तब्दील हो गई और सोज़ (रोना) जारी हो गया। बहुत कोशिश करने पर भी सकून न हुआ, लेकिन ज्यों-ही मैं कठड़े से बाहर हुआ हालत फिर तब्दील हो गई और वही क़ैफ़ियत आज भी हुई।"

२८—एक साहब ने पूछा—"साहब जी महाराज के बारे में आपका क्या ख़्याल है ?" आपने कहा—"वे बहुत बड़े बुजुर्ग (महापुरुष) हैं जिनके ज़िम्मे रूहानी, इख़लाकी, सोशल, पोलीटीकल बहुत सी ज़िम्मेदारियां हैं और मेरे ज़िम्मे तो सिर्फ़ रूहानी तालीम है और वह भी बहुत थोड़े आदमियों की। मैं आजिज़ (दीन) उनकी निस्बत क्या राय क़ायम कर सकता हूँ।

२८—एक बार जब सेवक महात्मा जी की सेवा में गया तो देखा कि वे बहुत तकलीफ़ में हैं। पेट में दर्द हो रहा था। कुछ सज्जन व दो वैद्यभी वहाँ बैठे हुए थे। थोड़ी देर बाद ख़्याल आया

Scanned by CamScanner

कि मेरे पास पेट के दर्द की दवा मौजूदहै। मैं दवा लेने चलागया। वापिस आने पर देखा कि दोनों वैद्य भी दवा लिये खड़े हैं। आपने दोनों से पूछा—"क्या है ?" फिर मुझसे भी पूछाकि तुम क्या लाये हो ? मैंने निवेदन किया—"दवा है और गिलास में दूध है। "मुझ को यह मालूम नहीं था कि दूध दर्द में नुक़सान देता है।) आपने दवा और दूध ले लिये और कहने लगे कि दूध को छोड़कर पानी कौन पिये ? और दवा और दूध पी लिया। थोड़ी देर में दर्द कम हो गया।

२९—महात्माजी की पुत्री का विवाह था और इन्तज़ाम मेरे सुपुर्द था। उनके एक निकट सम्बन्धी इस बात से ख़ुश नहीं थे। उन्होंने अवसर देखकर मेरी गुरुमाता से कहा कि श्रीकृष्ण एक टोकरा कचौड़ियाँ और एक थाल मिठाई अपने घरले गया है। यह शिकायत महात्मा जी के कानों तक पहुंची। उन्होंने कहा—"ठीक है, और मुझको मालूम है, लेकिन यह मेरे कहने से हुआ है। मैंने ही उससे ऐसा करने को कहा था। "कई दिन बाद उन्होंने मुझसे एकांत में कहा कि यह हालत है रिश्तेदारों की।

३०—एक दिन महात्माजी ने कहा कि आदमी को अपना क़र्ज़ा ज़िन्दगी में अदा करना चाहिये और अगर न कर सके तो मरने से पहले माफ़ करवा लेना चाहिये। फिर कहा कि रुपया लेनाही क़र्ज़ा नहीं है बल्कि अपने फ़र्जों को अदा (कर्तव्य पालन) करना भी क़र्ज का अदा करना है। धरती माता का ऋण, अपने देश का प्रेम, माँ बाप का ऋण, गुरु ब्राह्मण का क़र्ज़ा, क़ानूनों की पाबन्दी, इत्यादि।

३१—एक दिन प्रसाद बँट रहा था जो भिन्न-भिन्न भाइयों का लाया था। महात्मा जी ने उसको खाकर कहा कि यह अमुक भाई का लाया हुआ होगा। बात भी ऐसी ही थी।

Scanned by CamScanner

३१—सेवक ने कोशिश करके एक जगह स्कूल में आपके सुपुत्र के लिये नौकरी का प्रबन्ध कर दिया और उनको तार दिया लेकिन वे नहीं आये। मैं स्वयं उन्हें लेने केलिए गया महात्मा जी ने कहा-कोशिश करो। फिर एकान्त में ले जाकर कहा—तुम्हारी कोशिशें बेकार है। इस लड़के की तक़दीर में रुपये की तरफ़से परेशानी ही लिखी है और यह हमेशा तकलीफ़ में ही रहेगा। आपकी भविष्य-वाणी बिल्कुल सत्य निकली।

३२—एक बार आग्रह करने पर महात्माजी सिकन्द्राबाव में एक रईस के यहां ठहरे जिन्होंने उनके रहने के आराम के लिये विशेष प्रबन्ध कर दिया। यह पाबन्दी भी कर दी गई कि अमुक समय के अलावा कोई उनसे नहीं मिलेगा। महात्माजी दो तीन दिन तो कुछ न बोले फिर कहने लगे कि हम ऐसी जगह नहीं रह सकते जहां लोगों के ऊपर हमसे मिलने की पाबन्दी हो हमारे पास हर प्रकार का मनुष्य हर समय आ जा सकता हैं। यह कहकर उन्होंने उस जगह को छोड़ दिया।

३४—सेवक की बड़ी इच्छा थी कि उपकार का काम करे। महात्माजी ने कहा कि उपकार का काम बड़ा अच्छा है लेकिन यह उस समय करना चाहिये लब आदमी अपने को बना ले अगर इस से पहले करेगा तो अपना नुकसान करेगा औरदूसरों को भी नुक़सान पहुंचायेगा। अगर कोई आदमी डूब रहा हो तो उसके बचाने के लिए किसी अच्छे तैराक को ही कोशिश करनी चाहिये वर्ना डूबते को तो न बचा सकेगा और खुद डूब जायेगा।

३५—एक बार देहली में मैं आपके पास सो रहा था रात को स्वप्न में देखाकि एक नूर (प्रकाश) का दरिया (नदी) है जिसका किनारा ही नहीं है और मैं उसमें तैर रहा हूं। कभी पानी के नीचे

Scanned by CamScanner

आ जाता हूं और कभी पानीके ऊपर। सवेरे पूछने पर जब अपनी हालत निवेदन की तो उन्होंने कहा कि तुम ब्रह्माण्ड में से होकर गुज़र रहे हो दूसरे दिन सवेरे संध्या करते समय एक अजीब हालत पैदा हुई। चारों तरफ़ प्रकाश ही प्रकाश था जो मुझको बड़ी तेज़ी से अपनी ओर खींच रहा था और मैं उसमें समा जाने के लिये बेचैन था। प्रेम का आवेश था और अजीब आनन्द आ रहा था। तबियत यह चाहती थी कि शरीर टूट जाय और मेरी आत्मा उस प्रकाश में समा जाय। उसी समय यह भी ख्याल हुआ कि मेरा असली प्रीतम यही है और मैंने महात्मा जी को अपना मतलब निकालने के लिये ही धोखा दिया है अर्थात् उनसे झूठी मोहब्बत करता रहा। मुझको वास्तव में प्रेम उस प्रकाश से है और उसे ही प्राप्त करने के लिये उन्हें एक निमित्त बनाया है। आनन्द की एक ऐसी हालत थी जो वर्णनमें नहीं आती और उसकी याद अभी तक आती है। महात्मा जी ने पूछा—क्या देख रहे हो? मैंने अपनी हालत निवेदन करदी। उन्होंने कहा—यही तुम्हारा असली प्रीतम है, तुम इसमें पूर्ण रूप से अपने आपको लय कर दो, यही असल है, यही तुम्हारा इष्ट है मैं तो मददगार और पुश्ते-पनाही (पीछे रह कर मदद करने वाला) हूं। अगर इस हालत को और क़ायम रखा जायेगा तो तुम्हारा शरीर टूट जायेगा। बाद को चाचा जी साहब (परमसन्त रघुवर दयालजी) से मालूम हुआ कि महात्मा जी ने उनसे कहा कि इसकी इखलाक़ी हालत (सदाचार) ऐसी न थी कि हम इसे और ऊंची हालतों से गुज़ारते, इसलिये सालोक्य और सामीप्य से तो हमने गुज़ार दिया है। सारूप्य और सायुज्य तुम करा देना।

३६—बचपनमें मेरे एक दोस्त थे जिनसे मुझको हार्दिक प्रीति थी। जब मैं लाला जी की सेवा में गया मो मैंने निवेदन किया कि

Scanned by CamScanner

जो कुछ आप आज्ञा देंगे वह मैं करने को तैयार हूं पर उस दोस्तको नहीं छोड़ सकता। उन्होंने कहा कि नहीं, हम नहीं छुड़ायेंगे। कुछ साल बीतने पर जब उसकी मौहब्बत मुझको परेशान करने लगी तो मैंने फिर निवेदन किया। आपने पत्र के उत्तर में लिखा कि तुमने हम से वायदा लिया था इसलिये हमने इस मामले में हस्तक्षेप नहीं किया लेकिन अब आगे के लिये उस मनुष्य की मौहब्बत तुम्हें न सतायेगी और हुआ भी ऐसा ही।

३७—एक स्त्री जो परमार्थी विचारोंकी थी मरीज़की हैसियत से मेरे पास आया करती मुझको अपनी अल्प बुद्धि से यह विचार मन में आया कि यह सत्संग के काम में बड़ी सहायक होगी और इसी कारण से मैं उसे मौहब्बत की तवज्जोह देता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि उसको प्रेम पैदा हो गया और मुझको भी बराबर ख़्याल रहने लगा। मैंने घबराकर तमाम हाल लालाजी को पत्र द्वारा बताया। उत्तर में आपने लिखा—यह तुमने अच्छा नहीं किया मैं दुआ करूँगा और उम्मीद है कि परमात्मा मदद करेगा। कुछ दिनों बाद उस स्त्री को स्वप्न में एक महापुरुष दिखाई दिये जिन्होंने शिक्षा दी कि तुम उससे (मुझसे) सम्बन्ध तोड़ दो अन्यथा तुमको नुक़सान पहुंचेगा। और इस प्रकार ताल्लुक़ात बिल्कुल खत्म हो गये।

३८—मैं मेडिकल कालेज, आगरे में अपना प्रवेश चाहता था लेकिन मेरी आयु अधिक थी। मैंने अपनी आयु कम लिखकर फ़ार्म भर दिया और मेरा दाख़िला हो गया। बाद में छानबीन की गई और जिन्होंने ग़लत फ़ार्म भरा था वे निकाल दिये गये मैंने घबराकर आपको पत्र लिखा। उत्तर में आपने लिखा—ताज्जुब है तुमको परमात्मा पर भरोसा नहीं है। वह सर्वशक्तिमान है जो चाहे कर

Scanned by CamScanner

सकता है। उस पर भरोसा रखो अपना सरटिफ़िकेट दे दो और सही सही कह दो और उसकी कुदरत का तमाशा देखो। मैंने सरटिफ़िकेट पेश कर दिया प्रिन्सिपल के पूछने पर मैंने उत्तर दिया कि मेरी आयु तेईस वर्ष है ग़लती से इक्कीस वर्ष लिखी गई है। प्रिन्सिपल साहब कहने लगे—ठीक हैं, तुम्हारी असली आयु इक्कीस वर्ष है और ग़लती से तेईस वर्ष लिखी गई। सरटिफिकेट पर लिख दिया कि "By appearance 21" (देखने से इक्कीस वर्ष) और दाखिला कर लिया।

३९--एक लड़का जिसकी सौतेली मां थी छटी क्लास पास करके सातवीं क्लास में आया। परन्तु चूंकि उसकी मां उसे पढ़ाना नहीं चाहती थी इसलिये उसके पिता ने आगे पढ़ाने से मना कर दिया। उसने रो-रोकर अपनी दशा बताई यद्यपि मेरी आर्थिक दशा ऐसी अच्छी नहीं थी फ़िर भी मैंने उसे मिशन स्कूल फरुखाबाद में, जो फ़तहगढ़से लगभग चार मील दूर है दाख़िल करा दिया और उसके भोजन का प्रबन्ध कर दिया था। जो कुछ धन मुझे अपने खर्च के लिये मिलता था वह मैं उसे ही दे आता था क्योंकि मेरी कोई बँधी आय न थी। लड़का छठी से पास होकर सातवीं में आया मैंने उसे लालाजी की सेवामें पेश किया। उस लड़के को आपने सर से पांव तक देखा और कहा—यह लड़का पढ़ेगा लिखेगा तो है नहीं। तुम में हमदर्दी का जज्बा (सहानुभूति की भावना) तो है लेकिन उसका सही तरीक़ा नहीं आता।" मुझे आपका यह कथन अच्छा नहीं लगा क्योंकि देखने में तो वह लड़का छठी पास करके सातवीं में आया था। आपने फिर कहा—तुम पैरों फ़रुखाबाद जाते हो मौज़े तुम्हारे पास नहीं है नंगे सिर रहते हो और जो कुछ बचता है वह इस पर खर्च करते हो यह लड़का इक्के में आता जाता है नेकटाई

Scanned by CamScanner

और मौज़े पहने है और फैल्ट कैप सर पर है। यह पढ़ने का तरीक़ा नहीं है।"

कुछ दिनों बाद मैं उस लड़केसे एक किताब लेने गया जो दूसरे से माँगकर उसे दी थी। इत्तफ़ाकसे किताब खोलकर देखी तो उसमें कई रसीदें मनीआर्डर की जो उसने अपने बाप को भेजे थे, मिलीं। लड़के ने पूछने पर बताया कि रुपया बच गया था इसलिये भेज दिया। कई वर्ष तक वह आठवीं क्लास पास न कर सका। तब उस को पुलिस विभाग में पेड अपरेन्टिस करा दिया।

४०—जब-जब मैंने किसी जिज्ञासु को जो बहुत इच्छुक मालूम होते थे, उनकी सेवा में उपस्थित किया तो उन्होंने कुछों को तो स्वीकार कर लिया और कुछों के विषय में कहा कि इनकी रहनी-सहनी अच्छी नहीं है और यह कुसंगी हैं, अधिकारी नहीं हैं और इन्हें फ़ायदा नहीं होगा। बाद में मालूम हुआ कि जो कुछ उन्होंने कहा था वह सत्य था।

लाला जी की इस प्रकार की बातें देखकर यह विचार उठता था कि आप एक महान् सन्त हैं लेकिन थोड़ी देर में ही अक़्ल पर एक ऐसा पर्दा पड़ जाता था कि यह ख़्याल होता था कि यह बातें होनहार ही हैं अन्यथा आप तो एक साधारण मनुष्य हैं।

४१—लाला जी महाराज ने एक पत्र अपने छोटे भाई मुन्शी रघुवरदयाल जी को लिखा जिसमें किसी ऐसी हरक़त पर नाराज़ होकर जो सत्संगियों से हुई थी, लिखा कि तुम अपना सत्संग अलहदा कर लो। ऐसा न हो कि जिस बाग़ को मैंने खून दे-देकर सींचा है तबाह हो जाये। आपने वह पत्र मुझे दिखाया और मुझसे पूछने लगे—"क्या इसको भेज दें?" मैंने विवेदन किया—"अवश्य भेज दीजिये।" दूसरे दिन उस पत्र को न देखकर मैंने पूछा—"क्या आपने

Scanned by CamScanner

खत भेज दिया ?" उन्होंने उत्तर दिया—नहीं हमने फाड़कर फेंक दिया क्योंकि इससे नन्हें (परम सन्त मुन्शी रघुवर दयाल जी को वे नन्हें कहा करते थे) को दुख होता अब किसी मौक़े पर समझा देंगे।

४२—मैं एक सफ़र में उनके साथ था। मुझे बुलाकर वापिस लौटने का प्रोग्राम बनाने के लिये आज्ञा दी। इसके बाद दूसरा प्रोग्राम बनवाया, फिर तीसरा बनवाया और कई बार ऐसा किया मुझको ख्याल हुआ कि फ़कीर लोगों का कैसा बच्चों जैसा स्वभाव हो जाता है कि कभी कुछ कभी कुछ। उन्होंने तुरन्त ही कहा—क्या मुझको बच्चा और बेवकूफ़ समझते हो ?" मैं नाराज़गी के ख्याल से उस जगहसे चला गया। थोड़ी देर बाद उन्होंने बुलाकर फिर प्रोग्राम बनवाया।

४३—वे कहा करते थे कि हम पर दिन में कई बार जज़्बतारी (भावावेश) हो जाता है। उस वक्त हमें अपने ऊपर क़ाबू नहीं रहता यद्यपि हम बहुत चेष्टा करते हैं ऐसी हालत में किसीको हमारे पास नहीं बैठना चाहिये और सामने से हट जाना चाहिये। न मालूम ज़बान से क्या निकल जाय और किसी को नुक़सान पहुंच जाये।

४४—एक बार उन्होंने कहा कि सिलसिले की बरकत बड़ी ज़बरदस्त होती है और वंश के महापुरुषों से बड़ा फ़ायदा पहुंचता है अगर वह बीच में टूटी न हो यानी एक के बाद दूसरे अपने गुरु में पूर्ण रूप से लय (कुल्ली फ़ना) न हो गये हों। फिर कहा कि हमारा सिलसिला अभी तक शिकिस्त नहीं हुआ (टूटा नहीं) क्यों कि हमको बराबर बुजुर्गान से फ़ैजयाबी (आध्यात्म लाभ) होती है और जो हालात बुजुर्गाने-दीन (इस वंश के पूर्वजों) पर गुज़री वह सब मुझ पर गुज़र रही हैं।

Scanned by CamScanner

४५—एक सज्जन ने उन्हें सिकन्द्राबाद अपने विवाह पर आमंत्रित किया। उनके आग्रह करने पर महात्मा जी वहां पधारे लेकिन वे सज्जन दिन भर शराब पिये रहते और वैश्याओं के गाने में मस्त रहते। लाला जी की सेवा में बिल्कुल नहीं आये यद्यपि जहां लालाजी ठहरे हुए थे उस कमरे के नीचे से कई बार निकले। लाला जी ने मुझसे कहा कि तुम उन सज्जन से इसकी शिकायत न करना उनको दुःख होगा वह अपनी आदत से मजबूर हैं।

४६—अक्सर उनके दांतों में दर्द हुआ करता था एक बार बहुत ही बेचैन थे। पूछने पर कहने लगे कि दांत में आज बहुत दर्द है। मैंने इच्छा शक्ति से वह दर्द अपने ऊपर ले लिया और थोड़ी देर में इतना दर्द मुझे महसूस होने लगा कि उसे सहन करने की शक्ति न रही सारे दांत हिल गये हो। लाचार होकर दवा का प्रयोग किया परन्तु दर्द में कोई कमी न हुई। रात भर दर्द बहुत तेज़ रहा यहां तक कि मैं तकिये पर बार-बार सर मारता था, लेकिन लाला जी का दर्द जाता रहा। रातको मैं अचानक ठीक हो गया दूसरे दिन पूछने पर उन्होंने कहा कि आज फिर बहुत दर्द है। मैंने फिर वही इच्छा शक्ति का प्रयोग किया परन्तु इस बार कोई असर नहीं हुआ और उनके दांत में दर्द बदस्तूर बना रहा। मैंने निवेदन किया आप इतनी कठोर वेदना सहन कर रहे हैं और उसको बांटने भी नहीं देते। उन्होंने कहा कि मैं तो इस दर्द का मुद्दत से आदी हूं और बरदाश्त भी कर सकता हूं। यह मैं कैसे देख सकता हूं कि तुम दर्द के मारे रात भर बेचैन रहो जमीन पर सर दे देकर मारो और मैं आराम से सोऊं। मैं अपना कष्ट स्वयं सहन करूँगा।

४७--एक बार महात्माजी सिकन्द्राबाद पधारे जब नित्य कर्म

Scanned by CamScanner

से निवृत होकर बैठे तो कुछ परेशान थे मैंने परेशानी का कारण पूछा। उन्होंने कहा—तुम्हारे यहां क़दमचे छोटे हैं जिनसे मुझको तकलीफ़ होती है। मैंने शाम तक दूसरा पखाना तैयार करा दिया। जब आप शाम को शौचादि से निवृत होकर आये तो बहुत प्रसन्न हुए। कहने लगे कि क्या तुम्हारे पास अलाउद्दीन का चिराग़ है जो इतनी सी देर में पख़ाना तैयार करा दिया। बाद में भी इस पर प्रसन्नता प्रकट की।

४८—एक बार सिकन्द्राबाद में जब महात्मा जी पधारे तो पूछने लगे कि क्या रात को तुम कुछ सुनते रहते हो या कुछ देखते रहते हो? मैंने निवेदन किया—"अवश्य, मैं यह देखता रहता हूं कि आप कुछ कहते रहते हैं और मैं सुनता रहता हूं लेकिन जागने पर कुछ याद नहीं रहता।" उन्होंने कहा कि यह तालीम है जो हम तुमको सीना ब-सीना (हृदय से हृदय को) दे रहे हैं। जो कुछ हमको देना था दे चुके तुम्हारा स्थान महामाया का है और मेरा स्थान रूहानी है। अगर तुम मेहनत करोगे और अभ्यास करते रहोगे तो यह सारी गुप्त विद्या जो मैंने तुमको दी है ज़ाहिर हो जायगी।

४९—एक बार उनके एक शिष्य के एक निकट सम्बन्धी एक फ़ौजदारी के मुकद्दमे में फँस गये। मैंने लाला जी से प्रार्थना की कि उनकी सहायता करें। उन्होंने कहा—जो जैसा करता है वैसा भरता है। तुम्हारे सम्बन्धी ने ऐसा काम किया है जिसकी सज़ा जेल खाना है मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता। मैंने फिर निवेदन किया कि घर तबाह हो जायेगा, अकेले कमाने वाले हैं, इतनी बड़ी गृहस्थी है कैसे गुज़ारा होगा? उन्होंने कहा—मैं नहीं चाहता कि तुम इस मामले में पड़ो। उस (परमात्मा) पर छोड़ दो, जैसा होगा हो जायेगा। मैं हठ पकड़ गया और निवेदन किया कि आपने कई

Scanned by CamScanner

दफ़ा फ़रमाया है कि जो कुछ तुम मांगोगे मैं दूंगा लेकिन आज आप मेरी मांग को ठुकरा रहे हैं। वे लेटे से बैठे हो गये मौन धारण कर लिया। कहने लगे—जाओ, जेलखाना नहीं होगा लेकिन दो महीने बाद नौकरी से अलहदा हो जायेंगे। यह तुमने अच्छा नहीं किया कि मुझ पर इतना ज़ोर दिया। मैं तक़दीर को नहीं पलट सकता सिर्फ़ उसको बदल कर सकता हूं। अगर मांगना था तो कुछ और चीज़ मांगी होती जाओ अब तुम मेरे सामने से दूर हो जाओ। मुझ को आजीवन इसका दुःख रहा कि मैंने उनकी मर्ज़ीके खिलाफ़ क्यों ऐसी चीज़ मांगी।

५०—महात्माजी अक्सर इम्तहान लेते रहते थे। एक मर्तबा उन्होंने परीक्षा ली और अलग-अलग बैठाकर तवज्जोह देने को कहा। मैं नहीं जानता कि तवज्जोह किस प्रकार दी जाती है। वे स्वयं अन्दर घरमें चले गये मैं बराबर उनका ही ध्यान करता रहा और सोचता रहा कि कैसे तबज्जोह दूं। थोड़ी ही देर बाद वे पधारे और कहने लगेकि सबसे अच्छी तवज्जोह सेवक की थी।

५१—एक बार वे भोजन कर रहे थे और एक सत्संगिन भोजन परोस रही थीं। महात्मा जी ने कहा—बिना घी लगी हुई रोटी लाओ। लेकिन सत्संगिन बहन ने इस पर ध्यान नहीं दिया और घी से तर बतर रोटी देती रहीं। फिर महात्माजी ने कहा कि रोटी गरम मत लाओ, ठण्डी लाओ। मैंने यही बात उन बहन से कह दी लेकिन उन्होंने इस बात का ख्याल न करके प्रेम भावमें गरम-गरम रोटियां ही दीं। भोजन करने के बाद उन्होंने मुझसे पूछा—तुम समझे ? मैंने निवेदन किया—मैं नहीं समझा। उन्होंने कहा—यही मन मत है न कि गुरु-मत हमारी बात का ख़्याल न करना और मन के कहने पर चलना यही मन-मत है।"

Scanned by CamScanner

५२ सन् १९१७ की बात है कि एकदिन स्वप्नमें मैंने देखा महात्मा रघुबर दयालजी साहब उर्फ चाचाजी लोगों को तवज्जोह दे रहे हैं और एक के बाद एक कई आदमी उनसे फैज़याब होरहे हैं। आपकी हालत अवधूतों कीसी है और जो तवज्जोह लेता है अवधूत हो जाता है। आपने मुझ सेवक को बुलाया और सामने बैठने को कहा। आप तवज्जोह शुरू करने ही वाले थे और मैं आंखें बन्द किये बैठा था कि श्रीमान् लालाजी साहब आ पधारे और कहने लगे कि अभी इसके लिये इसकी आवश्यकता नहीं है। इसको अभी दुनियाँ के खिलौने से खेलने दो आपने अपनी जेब से एक काग़ज़ निकाल कर दिया और कहा कि कुछ रोज़ इससे खेलो इसके बाद मेरी आंख खुल गई। दूसरे रोज़ डाकिये ने वैसाही काग़ज़ लादिया जिसमें लिखा थाकि तुम्हारी नियुक्ति गवर्नमेन्ट हाई स्कूल फतहगढ़ में क्लर्क की जगह की जाती है। मैंने चार्ज ले लिया और लगभग डेढ़ बरस इस जगह पर काम किया।

५३-यह सन् १९१६ की बात है कि महात्माजी दौरे पर डिप्टी साहब के साथ क़ायमगंज गये थे। मुझको आपसे मिलने की इच्छा हुई। फ़तहगढ़ से दर्शन के लिये चल पड़ा कुछ रास्ता रेल से और कुछ पैदल तै किया। पहुंचते पहुंचते शाम हो गई वहां जाकर मालूम हुआ कि आपका डेरा एक गाँव में जो वहां से चार-पाँच मील की दूरी पर था, पड़ा हुआ है। मैं वहाँ पहुंचा रात हो चुकी थी। वहाँ जाने पर मालूम हुआ कि आप आज शाम ही वापिस क़ायमगंज चले गये। मैं भी वापिस क़ायमगंज आया रात ज्यादा जा चुकी थी कुछ पता न थाकि आप कहाँ विराजमान है? मैं उस जगह अजनबी था। बड़ी परेशानी थी शहर की तरफ चल पड़ा। वहाँ पर एक मकान में लैम्प जल रहा था और एक सज्जन बैठे थे पता पूछने केइरादेसे मैं वहां पहुंचा। क्या देलता हूं कि आप स्वयँ

Scanned by CamScanner

इतनी रात तक बैठे इन्तज़ार कर रहे हैं। मेरे ऊपर बड़ी कृपा की कुछ भोजन जो आपके पास था, खाने को दिया और बड़े प्रेम से अपने पास बिठा लिया। मैंने अनुभव किया कि थकावट का नाम तक न था यद्यपि मैं कई मील तक चला था। तबियत बहुत खुश थी और मन में आनन्द भरा हुआ था।

५४—महात्माजी की सुपुत्री का विवाह हुआ। बारात वग़ैरा के खाने-पीने का काम मेरे सुपुर्द था। दोपहर के वक्त जब खाना जनवासे भेजा जा रहा था, खबर आई कि कोई विशेष तरकारी कम हो गई है। पंगत बैठ चुकी थी बहुत ही परेशानी थी कि क्या किया जाय। इत्तफाक़ से आप तशरीफ ले आये और पूछा कि क्या परेशानी है? मैंने निवेदन किया कि तरकारी कम है बाराती खाना खाने बैठ गये हैं आपने कहा—परेशान न हो तरकारी पर कपड़ा डाल दो और उसी में से लेकर देते रहो। परमात्मा चाहेगा कमी नहीं रहेगी ऐसा ही हुआ और बाद को कुछ तरकारी बच भी गई।

५५—एक बार आप सड़क पर जल्दी-जल्दी टहल रहे थे मेरे पिता जी उधर होकर निकले और आपसे पूछाकि क्या कोई विशेष बात है? आपने कहा—मेरे आफिस सुपरिन्टेन्डेन्ट रिश्वत लेने के आदी हैं और मुझसे बिना बात द्वेष करते हैं यहां तक कि गाली भी दे बैठते हैं मैंने हमेशा सब्रसे बर्दाश्त किया और कभी बुरा महसूस नहीं होने दिया। परन्तु आज न जाने क्यों मुझे उन पर गुस्सा आरहा है और रोके नहीं रुकता। मैं जल्दी-जल्दी दौड़ रहा हूं और ग़ुस्से को ज़ब्त करना चाहता हूँ। ऐसा न हो कि उन पर इस का कोई असर हो। दो तीन घन्टे बाद मालूम हुआकि सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब का जवान लड़का अचानक हैज़े से बीमार होकर स्वर्गवासी हो गया।

Scanned by CamScanner

५६—एक बार मैं महात्माजी केसाथ जारहा था और वे कुछ कहते जाते थे। मैं उसको ग्रहण करके बेशक-बेशक कहता जा रहा था। एक सज्जन जो साथ जा रहे थे उन्होंने इस बेशक का मजाक उड़ाया। महात्मा जी ने नाराज़ होकर कहा—यह मेरा नौकर है न कि वाक़ात (घटनाओं) का जो कुछ मैं कहता हूं उस पर यकीन (विश्वास) रखता है न कि वाक़ात पर।

५७—एक बार रात के समय महात्माजी एक सज्जनसे मिल कर वापिस आरहे थे मैं भी साथ था। रास्ते में कुत्तों ने घेर लिया लकड़ी भी पास नहीं थी। कंकड़ पत्थर जो पास पड़े थे वे फेंके लेकिन कुत्तों पर उसका कोई असर न पड़ा। वे किसी विचार में मग्न बराबर चले जा रहे थे और इस तरफ ध्यान नहीं था। एक कुत्ते ने उन पर हमला कर दिया। मैंने आगे बढ़कर अपना पांव बीच में कर दिया लेकिन अभी उसके दांत मेरे पैर से नहीं लगे थे कि महात्मा जी फौरन पलट गये और गुस्से में कहने लगे—"हैं!" गोया कि एक गोली लगी और कुत्ता उछलकर कई गज़ के फासले पर गिर पड़ा और रोता हुआ भाग गया।

५८—चमेली के फूल महात्मा जी को बहुत पसन्द थे। जब कभी मैं फूल अर्पण करता वे बहुत प्रसन्न होते और कहते थे कि यह मौहब्बत की निशानी है। जो मौहब्बत से देता है उसके फूल देर तक नहीं मुरझाते।

५९—मुझको आपकी सेवामें जाते हुए लगभग छ:महीने बीते थे कि मुझको मालूम हुआ कि लाला जी साहब ने मुझे बैत नहीं किया है (उपदेश नहीं दिया है) मैंने बैत करने के लिये निवेदन किया तो उन्होंने उत्तर दिया कि अभी ठहरो और इन्तज़ार करो। तुम्हारे विचार अभी अशुद्ध हैं मुझे उनका यह कहना नागवार

Scanned by CamScanner

मालूम हुआ। मैंने सोचा कि और सबको तो बैत कर लेते हैं लेकिन मुझ पर यह कृपा नहीं की। दिल में सोचने लगा कि क्या यह अच्छा न होगा कि मैं उनको हलाक़ कर दूं (मार डालूँ) ताकि वे यदि मुझे बैत नहीं करते हैं तो औरों को भी न कर सकें। जब मैं चलने लगा तो उन्होंने कहा ऐसा मन्सूबा मत सोचो और नाराज़ न हो। सवेरे प्रसाद ले आना। हम बैत कर लेंगे।"

६०—एक दिन मेरे साथ सेल्स दफ़्तर के एक बाबू थे। वे लाला जी से दिल्लगी करने लगे। जब मैं टहल कर वापिस आया तो गुरुदेव फ़रमाने लगे कि आज अमुक लड़का तुम्हारी शिकायत करने आया था। और तुम्हारी रहनी-सहनी पर आक्षेप करता था। मुझे ताज्जुब हुआ। जब मैंने जाकर उससे पूछा तो सब बात ठीक थी। उस वक़्त मुझको दुःख हुआ कि क्यों मैंने अपने गुरुदेव पर शक किया और जैसा उन्होंने कहा वैसा ही वह लड़का निकला।

६१—एक बार लालाजी का मकान बनने के लिये कुछ ईंटें आई थीं जो सड़क पर पड़ी थीं। मैं ईंटें उठाने लगा। लाला जी दफ़्तर से घर वापिस आये और देखकर कहने लगे—"तुम ईंटें मत उठाओ, तुम्हारे पिता जी नाराज़ होते हैं।" आप स्वयं ईंटें उठाने लगे। मैं कुछ देर चुप रहा फिर ईंटें उठाने लगा और लाला जी अन्दर चले आये। जब लाला जी किसी सज्जन से मिलने बाहर आये और मुझे ईंटें उठाते देखा तो बहुत नाराज़ हुए। मैं माता जी के पास भाग कर चला गया और एक अलमारी के पास छुप गया। आप पीछे-पीछे आये। मेरे पास आकर खड़े हो गये। रोते देखा तो फ़रमाने लगे—"हम नाराज़ नहीं हैं। हमें उस आदमी पर गुस्सा आ गया। अगर हम गुस्सा ज़ाहिर न करते और रोकते तो तुमको नुक़सान हो जाता।"

Scanned by CamScanner

६२—एक सज्जन जो कि महात्मा जी से मिलने के बहुत इच्छुक थे, उनको मैंने लाला जी की सेवा में पेश किया। आप इधर-उधर की बातें करते रहे। उनके चले जाने के बाद कहा—"यह व्यभिचारी है। यह ब्रह्म-विद्या नहीं सीख सकता।" आगे आने वाली घटनाओं से यह सही साबित हुआ।

६३—एक दिन एक हैडमास्टर साहब जो बड़े मेहरबान और दोस्त थे, लाला जी से मिलना चाहते थे। मैंने उन्हें उनकी सेवा में पेश किया। बाद को फ़रमाने लगे कि यह व्यक्ति दिलका बड़ा काला है और तुम्हारे लिये अपने दिल में कीना रखता है। बाद की घटनाओं से यही साबित हुआ।

६४—मेरा एक निकट सम्बन्धी एम० ए० क्लास में पढ़ता था, बड़ा सीधा और सच्चा था। मैंने उसे लालाजी की सेवा में पेश किया। आपने बाद को फ़रमाया—"यह एक बड़ा मक्कार और धोखेबाज़ आदमी है। इससे बचकर रहना और जल्द से जल्द उसे घर से निकालना। बाद को मालूम हुआ कि वह बड़ा ख़तरनाक और मक्कार था।

६५—एक बार लालाजी अपने एक सम्बन्धी के साथ रेल द्वारा यात्रा कर रहे थे। आप उनका बिस्तर बिछाकर लेट गये। लिहाफ़ ओढ़ते ही बेहूदा ख़्याल उठने लगे। नींद आने पर वैसे ही स्वप्न दिखाई देने लगे। जब लिहाफ़ हटा दिया, वे बेहूदा ख़्याल जाते रहे। उन सज्जन से बात-चीत करने पर मालूम हुआ कि उनके विचार वैसे ही थे जैसे कपड़े ओढ़ने पर आ रहे थे।

६६—एक सज्जन के यहां लालाजी ने भोजन किया। यह सज्जन शराब बेचकर बेईमानी से रुपया कमाते थे और इनकी कमाई शुद्ध

Scanned by CamScanner

नहीं थी। भोजन के कुछ देर बाद लालाजी की तबियत शराब पीने को चाही और उस विचार ने यहां तक मजबूर किया कि शराब की बोतल लाकर रख ली। इतने में कुछ समय व्यतीत हो गया। वे बुरे विचार कमज़ोर पड़ गये और जाते रहे और शराब पीने की नौबत ही न आई।

(महात्मा जी कहना था कि सन्त-मत के अभ्यास में जितना साधक उन्नति करता जाता है उतना ही बाहर की चीज़ों का असर उस पर अधिक होता है। इसलिये सत्संगियों को यह आवश्यक है कि अपने आपको बाहरी प्रभावों से बचावें।)

६७—महात्मा जी दूसरों के विचारों को तुरन्त जान जाते थे एक बार सिकन्द्राबाद में वे एक जगह बैठे थे। वहीं एक स्त्री झाड़ू से सड़क साफ़कर रही थी। उन दिनों वहां डाक्टर श्यामलाल स्वास्थ्य अधिकारी थे। आपने उनको बुलाकर कहा—"इस स्त्री के विचार बहुत ग़लीज़ हैं। इसको यहां से हटा देना चाहिये। यह तमाम वातावरण को अशुद्ध कर रही है।

६८—सन् १९५० में मैं एक रातको सो रहा था। रातके दो बजे का समय था। मैं कुछ सोता जागता सा ही था। मैंने देखाकि महात्मा जी पधारे। आश्चर्यसे कहने लगे—"तुम्हारी यह हालत? इस तरह सेतो कई जन्मों में भी उद्धार नहीं होगा। फिर एक सज्जन को जो उनके साथ था, आज्ञा दी कि इसको अमुक फ़क़ीर के पास ले जाओ और सन्यास दिला दो। फिर मुझसे कहा—"घबराओ नहीं, उद्धार होगा मगर सख्ती करनी पड़ेगी।" मेरी तरफ़ से मुंह फेर लिया और फिर कहा—"ले जाओ।" मैं उन सज्जन के साथ उन फ़क़ीर के पास गया लेकिन वे मौजूद न थे औरमैं वापिसचला

Scanned by CamScanner

आया। इसके बाद ही आंख खुल गई। पूरे एक महीने के बाद रात को उसी समय आँख खुली—क्या देखता हूं कि मेरी गृहिणी की हालत खराब है। सांस की चाल तेज है और बोला नहीं जाता है। कहने लगीं कि दिल बैठा जाता है। इससे पहले कि उनकी कोई दवा दारू की जाय उन्होंने दम तोड़ दिया। इसके बाद सब कुटुम्बियों, सम्बन्धियों और पुत्रों को, जिसको देखा अपनेसे विमुख पाया। दिल में दुनिया से तबियत ऊब गई। संन्यास मिल गया और इस तरह उनका हुक्म पूरा हो गया।

———

Scanned by CamScanner

सप्तम अध्याय

(सिद्धान्त व शिक्षा)

सत्संगियों के लिये महात्मा जी की शिक्षा वास्तव में तो प्रेम की शिक्षा थी। प्रत्येक से स्नेह करना और प्रत्येक को प्रेमकी डोरमें बांधे रखना यह उनका तरीक़ा था। महात्मा जी का कथन था कि यदि शिष्य गुरुसे प्रेम करता है उनका सत्संग करता है और उनके आदेश का पालन करता है तो इसी से उसकी आध्यात्मिक पूर्णता (तकमील) हो जायेगी। विशेष व्यक्तियों को महात्मा जी ने कोई शिक्षा नहीं दी। केवल इतना था कि वे सत्संग में आते रहें और उनका उद्धार होजाय परन्तु यह तरीक़ा केवल उत्तम अधिकारियों के लिये ही था। आम तौर पर जैसा शिष्य का पात्र होता उसी के अनुसार उसे शिक्षा देते। किसी को सुरत शब्द की शिक्षा देते तो किसी को दिल के जाप (जिक्र खफ़ी) की और किसी को वज़ीफ़ा बतला देते थे किसी को कुछ कर्म बतला देते थे। परन्तु अधिकतर गुरुसे तवज्जोह लेने, सत्संग करने और दिल के जाप करने पर ज़ोर देते थे। अपनी शक्ल का ध्यान करने को बहुत ही कम बताते थे। महात्माजी हृदयचक्र (क़ल्बके मुकाम) पर ॐ शब्दका जाप कराते थे। उनके सत्संग के प्रताप से और तवज्जोह से चक्र (लतीफे) जागृत (ज़ाकिर) हो जाते थे, उनमें अनहद-शब्द सुनाई देने लगता था। ऐसा होने पर आदेश देते कि इन्हीं को सुनते रहो और इतना

Scanned by CamScanner

अभ्यास करो कि उठते-बैठते सोते-जागते यहां तक कि एक सेकिण्ड के साठवें हिस्से तक भी इससे ग़ाफ़िल मत रहो।

महात्माजी की शिक्षा एक मिलीजुली शिक्षा थी जिसमें कर्म-काण्ड, कर्मयोग, भक्तियोग, ज्ञानयोग और प्रेमयोग सभी शामिल थे। आरम्भ में महात्माजी की सेवा में कुछ विद्यार्थी आये। उनके लिये शिक्षा यह थी कि वे महात्माजी के पास बैठे रहा करें और उनका गायन सुना करें। यदि कोई उनसे ध्यान के विषय में कुछ पूछता तो वे कह देते थे कि जो वस्तु सबसे अधिक अच्छी लगे उसका ही ध्यान करो। ज्ञानियों को ज्ञान की शिक्षा देते और उस विषय को खूब सझाते सारांश यह है कि प्रत्येक के लिये उनकी शिक्षा का नया तरीक़ा था।

महात्माजी का कथन था कि फ़क़ीरी की तीन शर्तें हैं--(१) इल्लत, यानी उसे कोई शारीरिक व्याधि रहनी चाहिये। (२) क़िल्लत यानी उसे रुपये की कमी होनी चाहिये। (३) ज़िल्लत यानी लोग उसकी निन्दा करें। इनसे अहंकार दबा रहता है और घमंड नहीं होता। जिसने अपने मन को मार लिया वह दुनियां का [illegible] इससे कठिन काम दुनियां में कोई नहीं है।

[illegible] को सब मतों की धार्मिक पुस्तकों पर [illegible] का वे आदर करते थे उस [illegible] का बहुत आदर [illegible] रहता

रिवाज़ों को बर्तते थे न कभी महात्मा जी ने रोज़ा रखा और न नुमाज़ पढ़ी।

अपनी तस्वीर खिंचवाने या उसको प्रेमी जन अपनेघरमें रखें इसका महात्मा जी विरोध न करते परन्तु उसे मूर्ति की तरह पूजने के आप बहुत खिलाफ़ थे। महात्मा जी अपने चरण छुआने को पसन्द नहीं करते थे परन्तु जो प्रेमी-जन चरण छूना चाहते थे उन्हें इसलिये नहीं रोकते थे कि यह प्रथा हिन्दुओं में बहुत पहले से चली आई है कि गुरुजनों को प्रणाम चरण छूकर किया जाता है।

अपने वंश के पूर्व पुरुषों के प्रति उनका बड़ा आदरभाव था। वे कहा करते थे कि हमारे वंशकी महानता हमारे पूर्वजों के कारण है। सदा उनसे दुआ करते रहते और किसी भी सांसारिक या परमार्थी काममें सफलता मिलनेपर उन्हें धन्यवाद देते और उसको उन्हीं के अपर्ण करते।

सिद्धि शक्ति को वे जानते थे परन्तु उसके क़ायल नहीं थे। गन्डे तावीज़ के भी महात्मा जी पक्ष में नहीं थे यद्यपि वे इस विद्या को भी जानते थे और अपने शिष्यों में से उन्होंने कईयों को यह विद्या बताई और तावीज़ देने की इजाज़त भी दी। हां, यदि उन्हें कोई मजबूर करता तो वे तावीज़ लिख देते थे।

सदाचार से रहने पर वे बहुत ज़ोर देते थे उनका कहना था कि जब तक सदाचार पूर्णतया ठीक नहीं हो जाता तब तक आत्मानुभव नहीं होता। ज़्यादा रियाज़त (अभ्यास) और वज़ायफ़ (वज़ीफा पढ़ना) के पक्ष में थे बीच का रास्ता पसन्द करते थे। महात्मा जी का कहना था कि दिल का अभ्यास सबसे ऊँचा है, इसका असर शरीर पर पड़ता है। दिल को क़ाबू में रखना और उसे तरतीब देते रहना वही असली अभ्यास है।

Scanned by CamScanner

दुआमें उनका बहुत विश्वास था लेकिन अपने लिये दुनियावी फ़ायदे के लिए दुआ करना उन्हें मंजूर न था। दूसरों के लिये हर वक्त दुआ करनेको तैयार रहते थे।

महात्मा जी का कहना था कि गुरु हर मनुष्य को करना चाहिये लेकिन गुरु बहुत देख-भालकर करना चाहिये। एक बार गुरु धारण कर लेने पर अपने आपको पूरी तरह उसके आधीन कर देना चाहिये जिस तरह मुर्दा ज़िन्दे के हाथ में होता है।

उनका कथन था कि जिस मनुष्य से तुमको डर हो और उलझन होती हो उसको अपना शुभ-चिन्तक और मित्र समझो और ज़बर-दस्ती इसका अभ्यास बढ़ाओ। एकान्त में बैठकर बिना किसी दिन चूके हुए थोड़ी देर यह अभ्यास किया करो कि अमुक व्यक्ति मेरा मित्र है और शुभ-चिन्तक है।

जिस बात को अपने ऊपर पसन्द न करो उसको दूसरों के साथ व्यवहार में न लाओ।

प्रेम से ही दूसरों को जीत सकते हो, दूसरा कोई तरीक़ा नहीं है। यह बड़ा तप है।

नैमत (प्रभु की देन) का शुक्रिया यह है कि उसका उचित प्रयोग किया जाय और वह उचित प्रयोग यह है कि ऐसे कर्मों का त्याग करदो जिनसे प्रभु की देन में गिरावट आती हो और वह कर्म अपनाये जो इस नैमत को स्थायी बनाने में सहायक हो।

चाहे आप अंग्रेजी टोपी पहने चाहे हिन्दुस्तानी लेकिन आपका दिल दरवेश-सिफत (फ़क़ीरों की आदत वाला) हो। सन्त हृदय नवनीत समाना। धीरे-धीरे काम करते रहो और मनको वश में करने की कोशिश करो। अन्दर से संभालने की आवश्यकता है, बाहर स्वयँ ठीक हो जायेगा।

Scanned by CamScanner

सत्संग ऐसे लोगों का अपनाना चाहिये जो वास्तव में पूर्ण सदाचार से अपना जीवन निर्वाह करते हों। ईश्वर प्रेम से उनका दिल सराबोर हो और दूसरों को प्रभावित कर सकते हों।

उस परमपिता परमेश्वर ने कृपा करके स्वयंको तुम्हारे हृदय में रखकर अपनी सत्ता को पोशीदा (ढांप लिया) और तुमको ज़ाहिर कर दिया। तुम्हारा कर्तव्य है कि अपने आपको पोशीदा करके उसको ज़ाहिर कर दो।

परेशान किया जाना अच्छा है। घर हिल्म और बरदाश्त का स्कूल है। हमारे यहाँ इन्हीं बातों पर सब्र करना तप कहलाता है और यह सब तपों से ऊँचा है। बजाय ग़म और गुस्से के ग़ैरियत अख़्तयार करनी चाहिये। ग़ैरियत कहते हैं उस आन्तरिक भावना को जिसमें दूसरों के कहने सुनने और मलामत करने पर यह मालूम होता है कि वास्तव में मेरा ही दोष है और फिर उसे बरदाश्त कर लेना पड़ता है। जहां और पन्थों में जंगल में जा बसना, एकान्त-वास, अभ्यास, सहन-शक्ति और संसार की झक-झक, बक-बक से बचने के आदेश हैं, वहां हमारे यहाँ दोस्तों और दुनियां वालों की झिड़कियां, ताने, लानतें-मलामतें, रियाज़तें (प्रभुका भजन) और उपवास ईश्वर प्राप्ति में सहायक हैं।

प्रकाश का न दीखना कोई नुक़्स नहीं है। ध्यान के समय कभी विचार आते रहते हैं और कभी रुक जाते हैं। ऐसा होता ही रहता है, यह कोई विशेष बात नहीं है। रास्ता चलने में यह बातें आती ही रहती हैं।

कुछ रीति रिवाजों को पूरा कर लेना लोगों ने धर्म या मज़हब समझ रखा है। मैं ऐसे धर्म को, चाहे वह किसी भी पन्थ का हो धर्म या मज़हब नहीं मानता। मज़हब वास्तव में विशाल हृदयता

Scanned by CamScanner

फ़राग़दिली (Broad Mindedness) अच्छी आदतें (नेक सीरती) सदाचार (खुशअख़लाक़), सहानुभूति (हमदर्दी), एक विचार (यक्क़रुख़ी), आत्मानुभव (अपनी शनाख़्त) और प्राणीमात्र के साथ प्रेम और एकता का व्यवाहर करना सिखाता है न कि रिवाजों के बारे में बाल की खाल निकालना और अपने आपको फ़क़ीर कहना और कहलवाना।

शुरू-शुरू में परमात्मा की ख़ालिस चाह शायद हज़ारों में से एक दो को होती है और लोग अपना समय गंवाते हैं। असली प्रेम यह है कि प्रेम, प्रेमी और प्रियतम सब ग़ायब हो जायें।

सांसारिक बाधायें परमार्थ में ईश्वर की तरफ़ से देन होती हैं। वे मुबारिक हैं। नहीं मालूम कौन-कौन से भेद उनमें छिपे रहते हैं। बहुत से आन्तरिक अनुभव इन पर निर्भर होते हैं।

जो व्यक्ति ईश्वर के विषय में वार्तालाप करता है और सत्य की खोज करना चाहता है वह आत्मा है और जिसकी उसको तलाश है वही परमात्मा है। यदि ऐसा नहीं है तो वह न तो मनुष्य की आत्मा (इन्सानी रूह) है और न उसका कोई परमात्मा।

जिस व्यक्ति की जितनी विवेक शक्ति तीव्र है उतनी ही आत्मा स्वच्छ है।

जहां आत्मा का प्रश्न आता है वहां अवश्य ही परमात्मा का प्रश्न आकर मौजूद हो आता है। मैं और आप आंशिक ज्ञान हैं और ईश्वर पूर्ण ज्ञान है बल्कि ज्ञानस्वरूप है।

इस तुच्छ आत्मा (नाचीज़ रूह) की क्या मजाल है कि पूर्णज्ञान का दावा कर सके। अगर मनुष्य मुकम्मिल इन्सान नहीं बन सकता तो वह परमात्मा को नहीं देख सकता और न ही अपनी समझ उस को आ सकती है।

Scanned by CamScanner

परमात्मा अवश्य है और एक है यदि मैं और आप उसे देख सकें तो वह परमात्मा नहीं बल्कि कोई स्थूल वस्तु (Material चीज़) है।

नास्तिक ईश्वरके न मानने वालेको नहीं कहते वल्कि नास्तिक उसको मानते हैं जो मन, कर्म और वचन से ऐसे काम करे जिनसे अपनी Physical (शारीरिक) Intellectual (बौद्धिक) Mantal (मानसिक) और Spiritual (आत्मिक) अस्तित्व का अहित होता हो और विनाश होता हो और जिन कर्मो और विचारों से दूसरों पर ऐसा प्रभाव पड़े जिनसे वे भी विनाश को प्राप्त हों। आस्तिक कहते हैं इसके विपरीत को।

केवल इस भ्रम को दूर करने की आवश्यकता है कि ईश्वर है या नहीं अथवा आत्मा कोई वस्तु है या नहीं। यदि वह भ्रम दूर हो जाय तो गुरु की कोई आवश्यकता नहीं है। गुरु तो केवल इस वहमको दूर करने का उपाय करते हैं। यदि कोई व्यक्ति स्वयं गुरु है तो फिर उसको हर चीज़ हासिल है। वहम का इलाज वहम से होता है परमात्मा और आत्मा की तलाश वास्तव में स्वभाविक है और यही मूढ़ता या वहम है और इसका इलाज भी वहम यानी गुरु से होता है।

स्वाध्यायकी अपेक्षा महात्माजी अभ्यास पर अधिक ज़ोर देते थे। कुछ दिन अभ्यास कराने के बाद उसी अभ्यास के विषय में या तो स्वयँ मौखिक बता दिया करते थे या किसी पुस्तक में से उसी विषय को पढ़कर सुना देते थे। महात्मा जी का कथन था कि जब तक अभ्यास से मन शुद्ध न कर लिया जाय तब तक किताबोंके पढ़ने से कोई अधिक लाभ नहीं होता बल्कि अधिकतर अभ्यासी रास्तेसे दूर जा पड़ते हैं उसको झूठा अभिमान अपनी विद्या का हो जाता

Scanned by CamScanner

है कि मैं सब जानता हूं और जानता-बूझता वह कुछ नहीं इसलिये अच्छा यह है कि आरम्भ में खूब अभ्यास किया जाय और बाद को उसकी पुष्टि एवं जानकारी के लिये पुस्तक देखे।

अपने प्रेमी-जनों के लिये महात्मा जी का उपदेश था कि स्वामी (मख़दूम) बनने से सदा बचना, सेवक (ख़ादिम) बनकर दूसरों की सेवा करना ऐसा वायदा कभी न करना कि इतने समय में अमुक अनुभव करा दूंगा, सदा निस्वार्थ सेवा करना। यह सब अहंकार की बातें हैं।

अमीरों, स्त्रियों और बच्चों की सौहबत से सदा बचो इससे परमार्थ की हानि होती है।

भोजन पेट भर कर न करो। थोड़ी कमी रह जाय। इससे अभ्यास अच्छा बनता है जो लोग धर्म की कमाई नहीं खाते उनका अनुभव (कश्फ़) कभी सही नहीं होता।

दूसरों की बुराई अपने मुंह से कभी मत करो। यदि उसकी प्रशंसा नहीं कर सकते तो चुप रहो।

जिसने दांतों के बीच की चीज़ यानी जिह्वा और रानों के बीच की चीज़ यानी इन्द्री को वश में कर लिया उसने परमार्थ कमा लिया।

———

Scanned by CamScanner

अष्टम अध्याय

महात्मा जी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी

(१) सन्तमत की चक्र-बन्धन विद्या को सीखने को प्रत्येक मनुष्य को स्वतन्त्रता है। धर्म आयु और अमीरी ग़रीबी की इसमें कोई बन्दिश नहीं है। यदि कोई व्यक्ति वास्तव में आत्मसाक्षात्कार करने का इच्छुक है तो सन्तमतके आचार्य (बिशेषकर रामाश्रम सत्संग के) पहले उसे आन्तरिक अभ्यास सिखाते हैं। यह पहली सीढ़ी है जिस पर साधक परमार्थ की राह में सर्वप्रथम पग रखता है। अपने अपने अधिकार के अनुसार अभ्यास द्वारा और गुरु कृपा द्वारा वह उन्नति करता जाता है और रास्ते की मन्ज़िलें पार करता हुआ एक दिन आत्मानुभव कर लेता है।

(२) इसके बाद साधक दूसरी सीढ़ी पर पग रखता है। सत्संगमें आते-आते ज्यों-ज्यों उसका अधिकार बढ़ता जाता है संसार के बन्धन ढीले होने लगते हैं और मालिक के चरणों में लगाव पैदा होने लगता है वह चाहता है कि उसे कोई सहारा मिले और कोई सच्चा मार्ग प्रदर्शन करे। ऐसी सूरत में उसकी प्रार्थना पर सत्संग के आचार्य उसे उपदेश देकर अपनी शरण में ले लेते हैं। इसे गुरु-दीक्षा या मन्त्र देना कहते हैं। सूफ़ियों की भाषा में इसे 'बैत' कर लेना कहते है। यह' बै' (बिकना) शब्द से बना है। 'बैत' यानी 'बिका हुआ' वास्तव में यह 'बैत' शब्द सर्वथा उपयुक्त है। शिष्य

Scanned by CamScanner

गुरु मन्त्र लेने के बाद गुरु के हाथों बिक जाता है। ऐसी दशा में गुरु की आज्ञा का पालन करना और उनकी रहनी-सहनी व सदाचार का अनुसरण करना उसका कर्तव्य हो जाता है। यह 'गुरु धारण' करना है।

इस Stage (अवस्था) में अर्थात् गुरु धारण कर लेने पर साधक की स्वतन्त्रता सीमित हो जाती है। जिस प्रकार कन्या का विवाह होनेपर वह अपने पतिके आश्रित हो जाती है और पतिव्रत धर्मका पालन करना उसका धर्म हो जाता है इसी प्रकार गुरु धारण करने के बाद शिष्य का धर्म गुरु की आज्ञा का पालन करना हो जाता है। पहली कही हुई अवस्था में यानी जब तक गुरु धारण नहीं किया हो तब तक साधक इस बात के लिये स्वतन्त्र होता है कि किसीभी सत्संग में जाय किसी सन्त महात्मा के पास जाये या कहीं भी गुरुकी खोज करे परन्तु एक बार गुरु धारण कर लेने पर वह बिक जाता है और उसकी यह स्वतन्त्रता जाती रहती है।

(३) जैसे जैसे अभ्यास करते-करते गुरुकी कृपा द्वारा साधक आन्तरिक चक्रोंको बेधता जाता है और हृदय-चक्र से ऊपर उठकर छठे चक्र पर जिसे विलायत सुग़रा या पिण्डो मन का स्थान कहते हैं पहुंच जाता है, आचार्य उसे इजाज़त शर्तिया दे देतेहैं। यह एक तरह की मानीटर पदवी है जैसे स्कूल की किसी कक्षा में सब विद्यार्थी एक समान होते हैं परन्तु अध्यापक किसी एक विद्यार्थी को अनुशासन के लिये नियुक्त कर देता है इसी तरह सत्संग के आचार्य ऊपर लिखी दिशा में जिस सत्संगी को उचित समझाते हैं उसे इजाज़त शर्तिया (मानीटर पदवी) दे देते हैं। ऐसे मानीटरों का यह कर्तव्य होता है कि गुरु की आज्ञा द्वारा सत्संगियों को अनुशासनमें रखें और सत्संग करें वे करायें।

Scanned by CamScanner

(४) इससे आगे चलकर अभ्यासी "त्रिकुटी" के स्थान पर पहुंचता है। इसे विलायत क़ुबरा या ""ब्रह्माण्डी मन का स्थान" कहते हैं। जब साधक इस स्थान पर रसाई हासिल कर लेता है तब उसे "इजाज़त तालीम" दे देते हैं यानी वह आचार्य के संरक्षण में सत्संगियों की आत्मिक शिक्षाका कार्य करने लगता है उसे उपदेश देने का अधिकार नहीं होता। वह उतनी ही तालीम दे सकता है जहां तक स्वयं रसाई हासिल कर चुका है।

(५) त्रिकुटी के स्थान से ऊपर की चढ़ाई करके जो अभ्यासी आत्मा के स्थान तक पहुंच चुके हों उनको आचार्य 'गुरु' पदवी दे देते हैं। सत्संगियों की आत्मिक शिक्षा के अलावा इन्हें यह भी अधिकार प्राप्त होता है कि यह जिज्ञासुओं को उपदेश दें या बैत कर लें। ये लोग दूसरे सत्संगियों या अभ्यासियों को इजाज़त नहीं दे सकते।

(६) इससे आगे की और आखिरी इज़ाज़त को इज़ाज़त ताआम्मा या मुकम्मिल इजाज़त कहते हैं। जिन सज्जनों को यह प्रदान की जाती है वे एक या दो व्यक्ति होते हैं और अपने आचार्य का काम पूरा करने के लिये उनके साथ आते हैं। पिछले जन्मों का उनका कुछ न कुछ साथ होता है और पिछली कमाई किये होते हैं। मौजूदा जन्म में पिछली किसी कमीको पूरा करने आते हैं और गुरु कृपा से उसे पूरा करके अपने जीवन के शेष समय में अपने गुरु के मिशन को फैलाने में बिताते हैं। यही गुरुमुख या मुराद कहलाते हैं यह हाज़रों में से एक दो होते है यह गुरुके फ़िदाई होते है (यानी आशिक़ होते हैं)।

"इजाज़त ताआम्मा" या सम्पूर्ण इज़ाजत आचार्य द्वारा लिखित रूप में दी जाती है। यह इज़ाजत आखिरी होती है। इस

Scanned by CamScanner

पर किसी मौजूदा वक्त के पूरे सन्त की तस्दीक़ होती हैं। जिनको यह इज़ाजत हासिल होती है वे ही आचार्य के सच्चे आध्यात्मिक उत्तराधिकारी या खलीफ़ा होते हैं। वे पूर्ण गुरु होते हैं उन्हें सर्वाधिकार प्राप्त होते हैं। वे दूसरों को भी इजाज़ात दे सकते हैं और अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर सकते हैं। ऐसे व्यक्तिको इजाज़त देने के वाद आचार्य अपने से दूर कर देते हैं।

महात्मा रामचन्द्र जी ने मानीटरी (Monitorship) की आज्ञा बहुतसे सज्जनों को दी थी इसी प्रकार तालीम की इजाज़त भी कई सज्जनों को दी थी।

उपदेश देने के अर्थात् बैत करने की इजाज़ात महात्मा जी ने निम्नलिखित सज्जनों को दी थी :—

१—डाक्टर चतुर्भुज सहाय साहब (मथुरा)।

२—बाबू मदनमोहन लाल साहब (शाहजहांपुर)।

३—बाबू श्रीकृष्ण सहाय साहब हितकारी (कानपुर)।

सम्पूर्ण आचार्य पदवी (इजाज़ात ताआमा) महात्मा जी ने निम्नलिखित सज्जनोंको दी थी :—

१—महात्मा मुन्शी रघुवर दयाल साहब, कानपुर।

२—डाक्टर कृष्ण स्वरूप साहब, जयपुर।

३—बाबू ब्रजमोहन लाल साहब।

४—सेवक (डाक्टर श्रीकृष्ण लाल साहब) सिकन्द्राबाद (यू० पी०)।

यह चारों इजाज़तें लिखित रूप में दी गई थीं यह सम्भव हो सकता है कि इनके अतिरिक्त अन्य सज्जनों को भी कोई इजाज़त दी हो जिसका सेवक को कोई ज्ञान नहीं है।

Scanned by CamScanner

महात्मा जी के जीवन काल में अन्तिम भण्डारा सन् १९३१ में फ़तहगढ़ में उनके निवास स्थान पर ही हुआ था। इस अवसर पर उन्होंने अपना आध्यात्मिक उत्तराधिकारी (जाँनशीन) सेवक (डा० श्रीकृष्ण लाल) को नियुक्त किया जिनको वे आजीवन "मुराद" कहा करते थे और आज्ञा दी कि भण्डारे में जाकर सत्संग कराओ। श्री ब्रजमोहन लाल साहब को आज्ञा दी कि वे जाकर निगरानी करें। महात्माजी स्वयं इसके बाद पधारे और निरीक्षण करने के बाद कहा—मैं यही चाहता हूँ कि मेरे बाद भी इसी तरह से काम होता रहे।

इस सम्बन्ध में महात्माजी ने एक हस्तलेख (तहरीर) अपने रजिस्टर में दर्ज की थी यह रजिस्टर उनकी अलमारी में रखा रहता था।

शरीर विसर्जन के बाद जब उनके फूल गंगा जी ले जा रहे थे किसी सज्जन ने वे पन्ने उस रजिस्टर से फाड़ लिये जिसमें लाला जी के उक्त हस्तलेख थे। इसका परिणाम यह हुआ कि उनको जाँनशीनी के कई दावेदार बन बैठे और सत्संगका वास्तविक काम गड़बड़ी में पड़ गया।

परम पूज्या माता जी (महात्माजी की धर्मपत्नी जी) ने भी अन्तिम समय में लाला जी वसीयत की पुष्टि की थी कि सत्संग का काम डा० श्रीकृष्ण लाल के सुपुर्द किया गया है। परन्तु जब हरेक अपने आपको जाँनजीन बतलाने लगा तब सेवकने इन झगड़ों से अपने को अलहदा कर लिया।

Scanned by CamScanner

इस प्रकारकी दावेदारी और झगड़े बखेड़ों से कुछ लाभ नहीं होता मुख्य बात तोयह है कि उस पवित्र महान आत्मा का चलाया हुआ मिशन फैले और उनका दिव्य सन्देश मनुष्य मात्र तक पहुंचे जिससे लोक कल्याण हो। लालाजी का यह काम हो रहा है और आशा है कि उनके आशीर्वाद से इसकी सदा उन्नति होगी सच्चाई कभी छिपती नहीं है।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

———

Scanned by CamScanner

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१ (प्राक्कथन)	२	वर्षो	वर्षों
,,	८	महत्मा	महात्मा
,,	१०	है	हैं
,,	१५	दशन	दर्शन
(ब)	२०	छो कर	छोड़ कर
,,	अन्तिम	प्रचलित	प्रचलित
(स)	१०	रणों	चरणों
,,	११	जानते है	जानते हैं
,,	१२	खच	खींच
१ प्रथम अध्याय	१०	तरीछे	तरीके
,,	१३	तकसीम	तक़सीम
२	१६	फक	फेंक
,,	२४	रुकाबट	रुकावट
३	१	कह लाता	कहलाता
४	३	मनपुरी	मैनपुरी
,,	९	इन	इस
,,	२४	हरबख्त	बरबख्श
४	१३	बनाया	बसाया
,,	१८	भगाँव	भौगांव
,,	१०	बफादारी	वफ़ादारी
५	३	धर्मात्मा थी	धर्मात्मा थीं
६	२	जिन्दा	ज़िन्दा
,,	४	मज़जूब	मजज़ूब
,,	१६	बगैर	वग़ैर
,,	२१	सिर्फ	सिर्फ
,,	२४	उठायें	उठाये
,,	अन्तिम	१८ ३	१८७३
७	७	महात्माओं	महान् आत्माओं
,,	८	कारिण	कारण
,,	२	वयान	बयान
८	१	सकते है	सकते हैं
८	६	ईश्बर	ईश्वर
८	१५	आग्रत	जागृत

Scanned by CamScanner

८	२२	सातवर्ष को	सात वर्ष की
९	२५	आये ता	आये तो
१०	१५	पालपोषण	पालन पोषण
११	५	नका टूटा फूटा	उनका टूटा फूटा
,,	१५	आता था जा	आता था जो
१२	४	रहो समे	रहो जिसमें
,,	६	रूलाती	रुलाती
,,	२१	महा ाज	महाराज
,,	२३	ाहब	साहब
१३	१	भवियवाणी	भविष्यवाणी
,,	८	सुधा ा	सुधारा
१४	४	हाने	होने
,,	५	वहीं	वही
,,	११	जी जी	एक जी काट दें
,,	१७	ारिश	बारिश
,,	१८	रहें	रहे
,,	२०	डे	बड़े
,,	२०	केठरी	कोठरी
१५	३	हज़िर	हाज़िर
,,	१५	हैं	है
,,	१८	दरोदीबार	दरोदीवार
,,	१९	ब्रह्याण्डी	ब्रह्माण्डी
,,	,,	चक्रों	चक्रों
,,	२३	वगैर	बगैर
,,	२३	फकीरों	फकीरों
१६	१२	बह	वह
,,	१७	ही हीं	ही नहीं
,,	२१	जीब राबर	जी बराबर
१७	७	पेशोनगोई	पेशीनगोई
,,	७	वाणी	वाणी
,,	१०	आकवत	आक़बत
,,	२४	ओर	और
१८	१	बे	बे
,,	२०	हे	रहे
,,	२४	कारनामा	करनामों
,,	२५	उपदेशी	उपदेशों

Scanned by CamScanner

,,	२	गायब	ग़ायब
,,	३	नज्जारे	नज़्ज़ारे
,,	१३	हैकि	है कि
,,	१६	चक्रकी	चक्र की
,,	१८	नीज	नीज़
,,	२०	बैठ है	बैठ रहे
,,	२४	कारनामा	कारनामों
,,	२५	उपदेशी	उपदेशों
१९	६	पि ा	पिता
,,	१२	(अस्तित्व	अस्तित्व)
,,	१६	पाट	पार्ट
,,	,,	वालेहै	वाले हैं
२०	७	नकल	नक़ल
२०	८	मुतलक	मुतलक़
,,	९	महज	महज़
,,	१०	(छाय)	(छाया)
,,	१४	(अत्यक्ष)	(अप्रत्यक्ष)
,,	,,	पथ	पन्थ
,,	अन्तिम	जोर	ज़ोर
२१	१७	ख्याल	ख़्याल
२२	१	नजर	नज़र
२३	२	महाराज लालाजी	महाराज एवं लालाजी
२३	८	बर	बार
२४	१	चे हरा	चेहरा
२४	१२	महराज	महाराज
,,	१६	महात्मा	परमात्मा
२५	१	वक़ील	वकील
२६	१	होगीं	होंगी
२६	११	पराकाष्ठ	पराकाष्ठा
२६	२१	अज्ञा	आज्ञा
२६	२५	है	हैं
२७	४	हृद	हृदय
,,	१८	बठा	बैठा
,,	२१	फज़याब	फ़ैज़याब
,,	२२	है	हैं
२८	५	की	काट दें

Scanned by CamScanner

२९	८	हिचकी	हिलकी
२९	१६	ि ये	दिये
,,	१९	क	तक
,,	२२	ए	हुए
,,	अन्तिम	ज़ाहिर हज़ूर	ज़हिर ज़हूर
३०	५	मौपूफ	मौक़ूफ़
३०	१६	आक	आक़
३०	,,	सझना	समझना
३०	२०	आपक	आपको
३०	२३	आता थ	आता था
३१	४	अद्त	अद्भुत
,,	७	प्रम	प्रेम
,,	१५	ह	कह
३२	५	हमारो	हमारी
३३	१३	सौहबत	मौहब्बत
,,	१९	जाता ता	जाता तो
३४	१२	तब व	तब वे
३४	,,	की आर	की ओर
३४	२२	तबज्जोह	तवज्जोह
३५	१८	बिषय	विषय
,,	१९	देखी त	देखी तो
,,	अन्तिम	निस्वत	निस्बत
३७	५	विद्धा	विद्या
३७	९	स्टशन	स्टेशन
३९	८	तबज्जोह	तवज्जोह
,,	१०	थड़ी	थोड़ी
,,	१७	और	और काट दें
,,	१८	विबश	विवश
,,	२५	अबश्य	अवश्य
४०	७	उसको	उसकी
४१	१५	धन्यबाद	धन्यवाद
४२	७	अन्धैरी	अन्धेरी
४२	१७	तहसीलकार	तहसीलदार
४२	२४	फ़यदा	फ़ायदा
४४	१३	फ़ज्ल	फ़ज़्ल

Scanned by CamScanner

४४	८	सफ़द	सफ़ेद
४४	१३	मौलबी	मौलवी
४४	१६	२४	
,,	,,	बड़ा	बड़ी
,,	२३	आर	और
,,	२४	रुपय	रुपया
,,	२५	देखा ता	देखा तो
४५	२	पहुँचाते	पहुँचते
,,	१४	मज़जूब	मजज़ूब
४६	२२	बुज़ुर्गान	बुज़ुर्गान
४७	१	जबाब	जवाब
,,	१०	ज़ाहिर हना	ज़ाहिर होना
,,	१८	थी औ	थी और
,,	२०	सीज़ो	सोज़ो
,,	२३	आलन्द	आनन्द
४८	९	नेम तो	नेमतों
४८	१५	विवणि	निर्वाणि
४९	७	आपक	आपकी
४९	९	हुत	बहुत
,,	२३	हीं	नहीं
,,	,,	वगैर	बग़ैर
५२	७	ओढ़	ओढ़े
,,	१८	यिश्राम	विश्राम
५३	१	तक	लघु
५३	५	गगाजी	गंगाजी
५३	६	कर लाने	कर लाते
५५	३	तौवा	तौबा
५६	४	खच	ख़र्च
५६	११	की	कि

Scanned by CamScanner

५७	६	तवियत	तबियत
५७	१९	पूर्व	पूर्व
५८	५	बिठलाने	बिठलाने के
५९	६	वै	वे
६०	१	बड़	बड़े
६१	४	काटें	कटें
,,	११	पैंजयाब	फ़ैगयाब
,,	७१	किक्या	कि क्या
,,	७२	करे और	करें और
,,	२६	यहा	यही
,,	२७	और बस	और बस
,,	१२	पत्रोका	पत्रों का
,,	१७	आयुवैदिक	आयुर्वेदिक
६३	१	माशूक़ के स्थान पर	प्रियतम पढ़ें
६३	१४	आंख	आंखें
६४	१८	१० वीं	९ वीं
६५	१	क्लर्क	क्लर्क
,,	४	जीवन म	जीवन में
६६	४	लाये	लगे
,,	१०	यही	वही
,,	२१	तुम कैते	तुम कैसे
,,	२५	में	मैं
७५	३	है	हैं
७५	१८	गुणो	गुणों
७५	२४	का जी न	का जीवन
७६	८	नवे	नवें
७६	२३	बोडिंग	बोर्डिंग
७६	२४	बौडिंग	बोर्डिंग
७७	२	जहाँ	जहाँ
७७	अन्तिम	अन्हाने	उन्होंने

Scanned by CamScanner

७९	३	बात हैं	बात है
८१	१६	जब बे	जब वे
८५	९	बे उस	वे उस
८६	२३	आपफी	आपकी
८८	७	माराज़	नाराज़
८८	१४	बाद छोड़ेये	बाद छोड़ेंगे
८९	१	वही	यही
८९	६	बुज़ुर्गसाहब	(अबु अलीशाह साहब)
८९	१८	बड़े	बहुत बड़े
९०	६	दबा	दवा
९०	७	दबा	दवा
९१	५	बेकार है	बेकार हैं
९१	८	सिकन्द्राबव	सिकन्द्राबाद
९१	१८	लब	जब
९२	४	पैद	पैदा
९३	१४	नर्हीं	नहीं
९५	२१	जौ	जों
,,	२४	विवेदन	निवेदन
९७	१२	रही	रही मानो
९७	,,	हो	हों
१००	अन्तिम	देलता	देखता
१०१	९	कभ	कम
१०३	१६	''तुस	'तुम
१०८	४	कण्ङ	काण्ड

Scanned by CamScanner

गीता-सार

❁ क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो ? किससे व्यर्थ डरते हो ? कौन तुम्हें मार सकता है ? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।

❁ जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है। जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा। तुम भूत का पश्चाताप न करो। भविष्य की चिन्ता न करो। वर्तमान चल रहा है।

❁ तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो ? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया ? तुमने क्या पैदा किया जो नाश हो गया ? न तुम कुछ लेकर आए, जो लिया, यहीं से लिया। जो दिया, यहीं पर दिया। जो लिया, इसी (भगवान) से लिया। जो दिया, इसी को दिया। खाली हाथ आए, खाली हाथ चले। जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझ कर मग्न हो रहे हो। बस, यही प्रसन्नता तुम्हारे दुःखों का कारण है।

❁ परिवर्तन संसार का नियम है। जिसे तुम मृत्यु समझते हो, वही तो जीवन है। एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो, दूसरे ही क्षण में तुम दरिद्र हो जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा अपना-पराया, मन से मिटा दो, विचार से हटा दो, फिर सब तुम्हारा है, तुम सब के हो।

❁ न शरीर तुम्हारा है, न तुम इस शरीर के हो। यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश से बना और इसी में मिल जायेगा। परन्तु आत्मा स्थिर है, फिर तुम क्या हो ?

❁ तुम अपने आपको भगवान को अर्पित करो। यही सबसे उत्तम सहारा है। जो इसके सहारे को जानता है, वह भय, चिन्ता, और शोक से सर्वदा मुक्त है।

❁ जो कुछ भी तू करता है, उसे भगवान को अर्पण करता चल। ऐसा करने से तू सदा जीवन-मुक्त का आनन्द अनुभव करेगा।

—भगवान श्री कृष्ण

Scanned by CamScanner